RNI No : MPHIN/2022/82783
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 03, अंक 9 मासिक पत्रिका
25 सितम्बर 2024

हमारा देश हमारा अभिमान

हर-हर महादेव

घुटती सांसों

से कम होती औसत आयु की चिन्ता...

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

शक्ति संचय और आत्मचेतना की जागृति के महापर्व नवरात्रि की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। आदिशक्ति माँ दुर्गा सभी की मनोकामनाएं पूर्ण कर सबके जीवन में सुख, समृद्धि व उत्तम स्वास्थ्य का शुभाशीष दें...

हमारा देश
हमारा अभिमान

25 सितम्बर 2024

वरिष्ठ संरक्षक मंडल

- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी, श्री धूमेस्वर धाम
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
- डॉ. श्रीमती शालिनी कौशिक
- श्री नागेंद्रनाथ सुरेंद्र नाथ चौबे

संरक्षक मंडल

- श्री लोकेश चतुर्वेदी
- श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन
- श्री प्रदीप कुमार शर्मा
- श्री शिवदयाल धाकड़
- श्री अरुण कांत शर्मा
- श्री महेश पुरोहित
- श्री विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट,
- श्री मनोज भारद्वाज
- श्री अनिल जैन • श्री निर्मल वासवानी
- श्री विद्याभूषण शर्मा
- श्रीमती अर्चना बाजपेयी
- एडवोकेट श्रीमती रिचा पांडेय (सुप्रीम कोर्ट)
- श्री के.एल.दलवानी
- श्री राकेश कुमार सगर
- श्री जयराज कुबेर
- श्री अभिनव पल्लव
- श्री बृजेश श्रीवास्तव
- श्री दीपक कुमार शुक्ला
- श्रीमति निवेदिता गुप्ता
- श्री विनोद कुमार बांगडे
- श्री विनायक शर्मा
- कमांडों कमल किशोर (पूर्व सांसद)
- श्री के. कान्याल • श्री मधु सुदन मिश्रा
- राजेश कुमार त्रिपाठी

संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित
प्रमुख परामर्शदाता

कानूनी सलाहकार
- एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता, ग्वालियर हाईकोर्ट
- एडवोकेट एस.के. पाठक, ग्वालियर
- दीपेंद्र कुमार पाण्डेय, एडवोकेट, उच्च न्यायालय

विशेष संवाददाता
- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

ब्यूरो : अविनाश (उज्जैन संभाग)

छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चौरे

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)
सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

सलाहकार

- डॉ सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- श्री डॉ. मुकेश चतुर्वेदी
- डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
- श्री अनिल दुबे
- श्री विकास चतुर्वेदी
- श्री सुरेश शर्मा
- श्री नारायणदास गुप्ता
- श्री पीयूष श्रीवास्तव
- पंडित श्री चंद्रशेखर शास्त्री
- श्री बृज मोहन आर्य
- श्री विवेक शर्मा
- श्री अशोक कुमार वर्मा
- श्री आनंद कुमार
- श्रीमती रितु मुदगल
- श्री कुंज बिहारी शर्मा
- सुश्री पूजा मावई
- श्री संदीप कुमार पांडेय
- श्री मनोज सिंह
- प्रदीप यादव
- निरंजन शर्मा
- विनीत गोयल
- डॉ. सुधीर राजौरिया, हड्डी रोग विशेषज्ञ
- आशीष त्रिवेदी
- डॉक्टर अशोक राजौरिया

हेमाटोलाजिस्ट और बोन मैरो ट्रांसप्लांट एक्सपर्ट
- डॉक्टर कमल कटारिया
- यशवंत गोयल
- दीपक भार्गव
- अमित जैन इंदौर
- सुरजीत परमार
- संजू जादौन
- डॉक्टर हिमांशु डेंटिस्ट
- रागिनी चतुर्वेदी
- प्रवेंद्र चतुर्वेदी
- प्रखर सिंह

ब्यूरो राजस्थान
सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर
- सुनील • हरशूल

डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी । (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	....	02
शुभाशीष	....	03
कवर स्टोरी	....	04-05
देश	....	06
विदेश	....	07
देश	....	08
हमारा ग्वालियर	....	09
देश	....	10-11
प्रदेश	....	12
विदेश	....	13
देश	....	14-15
देश	....	16-17
देश	....	20
प्रदेश	....	21
हमारा ग्वालियर	....	22-23
हमारा ग्वालियर	....	24-25
हमारा ग्वालियर	....	26-27
पितृपक्ष विशेष	....	28-43
स्वास्थ्य	....	44
धर्म	....	45
जीवनशैली	....	46
खेल	....	47

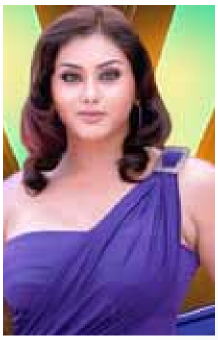

48

साउथ की नामी अभिनेत्री नमिता को मंदिर में जाने से रोका

संपादकीय

भारत में ऑनलाइन गेमिंग में महिलाओं और छोटे शहरों का बढ़ता रूझान

'जुपी' की स्थापना 2018 में आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्र दिलशेर सिंह द्वारा की गई थी। इस कंपनी ने बहुत कम समय में भारतीय ऑनलाइन गेमिंग बाजार में एक प्रमुख स्थान हासिल कर लिया है। भारत का ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर अब चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। तकनीकी क्रांति के दौर में दुनिया तेजी से बदल रही है। इस परिवर्तन के साथ जहां अनगिनत फायदे सामने आए हैं, वहीं कुछ गंभीर चुनौतियां भी उभर कर आई हैं। हालांकि, इन चुनौतियों के बावजूद तकनीकी विकास को रोक पाना संभव नहीं है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस प्रगति के सकारात्मक पहलुओं को अपनाएं और नकारात्मक प्रभावों से बचें। यह बात न केवल रोजमर्रा की जिंदगी में लागू होती है, बल्कि भारत में तेजी से बढ़ रहे ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर पर भी सटीक बैठती है। ऑनलाइन गेमिंग उद्योग भारत में तेजी से उभर रहा है, और इसका उदाहरण यह है कि इसे खेलने वाले लोगों में 41 प्रतिशत महिलाएं हैं, और 66 प्रतिशत से अधिक गेमर्स छोटे शहरों से हैं। भारत में लूडो की सबसे बड़ी ऑनलाइन गेमिंग कंपनी 'जुपी' के चीफ ऑफ पॉलिसी अश्विनी राणा के अनुसार, यह एक संकेत है कि ऑनलाइन गेमिंग की लोकप्रियता समाज के सभी वर्गों में फैल रही है। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ऑनलाइन गेमिंग उद्योग की सराहना की है, क्योंकि यह क्षेत्र भविष्य में मानव जीवन को बदलने वाले अनुसंधानों का केंद्र बन सकता है। 'जुपी' की स्थापना 2018 में आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्र दिलशेर सिंह द्वारा की गई थी। इस कंपनी ने बहुत कम समय में भारतीय ऑनलाइन गेमिंग बाजार में एक प्रमुख स्थान हासिल कर लिया है। भारत का ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर अब चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। हालांकि, इस सेक्टर की तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता के साथ कुछ चिंताएं भी सामने आई हैं, विशेष रुप से गेम की लत के संदर्भ में। अश्विनी राणा ने इस मुद्दे पर कहा कि किसी भी चीज की लत हो सकती है, चाहे वह मोबाइल फोन हो, टीवी हो, सोशल मीडिया हो, या फिर शराब और तंबाकू।

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

शुभाशीष

भारतीय संस्कृति में युगों से महिलाएं साहस और शक्ति का प्रतीक हैं...

ज्यादा महिलाओं को सैनिक सेवा के लिए तैयार करने से देश की प्रथम और द्वितीय श्रेणी की सुरक्षा प्रणाली भी मजबूत की जा सकती है। भारतीय संस्कृति में युगों से महिलाएं साहस और शक्ति का प्रतीक मानी जाती रही हैं। पर दुर्भाग्य से दसवीं सदी से लेकर 19वीं सदी तक गुलामी के समय विदेशी शासकों ने भारतीय नारियों पर अत्याचार करने शुरु किए, जिसके कारण वे घरों में पर्दे में रहने के लिए मजबूर हुईं। लेकिन आजादी के बाद भारतीय महिलाओं को अच्छी शिक्षा और विकास के सारे अवसर मिले, जिससे उन्होंने देश की आंतरिक सुरक्षा, प्रशासन, शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर योगदान देना शुरु किया। आज हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की उन्नति में अपना योगदान दे रही हैं। लेकिन आजादी के बाद भी काफी समय तक सैन्य सेवा का अवसर पुरुषों को ही मिलता रहा। वर्ष 1992 में भारत सरकार ने सेना में महिलाओं को अफसर बनाने के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी और इसके बाद थल सेना में अल्पकालिक सेवा आयोग स्कीम द्वारा महिलाओं को दस वर्ष की आवश्यक सेवा के बाद चार साल की अतिरिक्त सेवा का अवसर प्रदान किया जाता है। दस साल की सेवा के बाद इनमें चयनित महिला अफसरों को नियमित पूर्णकालीन सेवा का अवसर भी मिलता है। वर्ष 1992 से लेकर 2023 तक 6,993 महिला अफसर तथा 100 महिलाएं सैनिक के रुप में अब तक अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। अब अग्निवीर योजना के तहत अकेले नौसेना में एक हजार अग्निवीर महिलाओं की भर्ती की जा रही है। सैन्य सेवा में महिलाओं के प्रदर्शन और लगन को देखते हुए 2023 से उन्हें नियमित स्थायी कमीशन स्कीम के तहत भारतीय रक्षा अकादमी खड़कवासला पुणे में भर्ती किया गया, जहां से वे पुरुषों की तरह ट्रेनिंग पूरी करके भारतीय रक्षा अकादमी देहरादून से पूरी सेवा के लिए अफसर बनेंगी। शुरु में इन्हें थल सेना में लिया जाता था, परंतु कुछ समय बाद ही महिलाओं को वायुसेना तथा नौसेना में भी सेवा का अवसर मिलने लगा है!

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक

घुटती सांसों से कम होती औसत आयु की चिन्ता...

राजधानी समेत कई अन्य राज्यों में मेट्रो ट्रेन शुरू होने के बाद प्रदूषण में काफी कमी आई है। इस दिशा में हमें दीर्घकालीन नीतियों के बारे में सोचना होगा। हमारी कोशिश हो कि घनी आबादी के बीच चलायी जा रही औद्योगिक इकाइयों को शहरों से दूर स्थापित किया जाए।

वायु प्रदूषण का संकट भारत की राष्ट्रव्यापी समस्या है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की हाल ही में जारी रिपोर्ट इस चिन्ता को बढ़ाती है जिसमें कहा गया कि वायु प्रदूषण के चलते भारत में जीवन प्रत्याशा में गिरावट आ रही है। जिसमें फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले पी.एम. 2.5 कण की बड़ी भूमिका है। रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक मानकों से कहीं अधिक प्रदूषण भारत में लोगों की औसत आयु तीन से पांच वर्ष एवं दिल्ली में दस से बाहर वर्ष कम कर रहा है। बहरहाल प्रदूषण के खिलाफ योजनाबद्ध ढंग से मुहिम छेड़ने की जरूरत है। अध्ययन कहता है कि देश की एक अरब से अधिक आबादी ऐसी जगहों पर रहती है जहां प्रदूषण डब्ल्यूएचओ के मानकों से कहीं अधिक है। दरअसल, देश के बड़े शहर आबादी के बोझ से त्रस्त हैं। बढ़ती आबादी के लिये रोजगार बढ़ाने व अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए जो औद्योगिक इकाइयां लगायी गई, उनकी भी प्रदूषण बढ़ाने में भूमिका रही है। डीजल-पेट्रोल के निजी वाहनों को बढ़ता काफिला, निर्माण कार्यों में लापरवाही, कचरे का निस्तारण न होना और जीवाश्म ईंधन ने प्रदूषण बढ़ाया है। यह बढता वायु प्रदूषण हमारी जीवन शैली से उपजे प्रदूषण की देन भी है।

यह निराशाजनक खबरों के बीच उत्साहवर्धक खबर यह भी है कि भारत में सूक्ष्म कणों से पैदा होने वाले जानलेवा प्रदूषण में गिरावट आई है। लेकिन अभी जीवन प्रत्याशा घटाने वाले प्रदूषण को लेकर जारी लड़ाई खत्म नहीं हुई है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट 'वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक-2024' बताती है कि भारत में साल 2021 की तुलना में 2022 के वायु प्रदूषण में 19.3 फीसदी की कमी आई है। हालांकि, यह उपलब्धि मौजूदा हालात में बहुत बड़ी तो नहीं कही जा सकती है, लेकिन यह बात उत्साहवर्धक है कि प्रत्येक भारतीय की जीवन प्रत्याशा में इक्यावन दिन की वृद्धि हुई है। हालांकि, हम अभी विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं, लेकिन एक विश्वास जगा है कि युद्ध स्तर पर प्रयासों से भयावह प्रदूषण के खिलाफ किसी हद तक जंग जीती भी जा सकती है। लेकिन इसके साथ ही सूचकांक-2024 में यह चेताया भी है कि यदि भारत में डब्ल्यूएचओ के वार्षिक पीएम 2.5 के सांद्रता मानक के लक्ष्य पूरे नहीं होते तो भारतीयों की जीवन प्रत्याशा में करीब साढ़े तीन साल की कमी आने की आशंका पैदा हो सकती है। पीएम 2.5 श्वसन प्रणाली में गहराई तक प्रवेश कर सकता है और सांस संबंधी समस्याओं को जन्म देता है। यह स्वास्थ्य को एक बड़ा खतरा है और वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारक है।

हालांकि, राजधानी समेत कई अन्य राज्यों में मेट्रो ट्रेन शुरू होने के बाद प्रदूषण में काफी कमी आई है। इस दिशा में हमें दीर्घकालीन नीतियों के बारे में सोचना होगा। हमारी कोशिश हो कि घनी आबादी के बीच चलायी जा रही औद्योगिक इकाइयों को शहरों से दूर स्थापित किया जाए। हमारे उद्यमियों को भी जिम्मेदार नागरिक के रूप में प्रदूषण नियंत्रण में योगदान देना चाहिए। नीति-नियंताओं को सोचना चाहिए कि प्रदूषण में अप्रत्याशित वृद्धि के बाद दिल्ली आदि महानगरों में चलाये जाने वाले ग्रेडेड रेस्पॉन्स एक्शन प्लान यानी ग्रेप जैसी व्यवस्था को नियमित रूप से लागू क्यों नहीं किया जा सकता? ताजा कुछ अध्ययनों में बताया गया है कि बढ़ता प्रदूषण नवजात शिशुओं तथा बच्चों की जीवन प्रत्याशा पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। ऐसे में हमें पराली के निस्तारण, औद्योगिक कचरे के नियमन तथा कार्बन उत्सर्जन करने वाले ईंधन पर रोक लगाने जैसे फौरी उपाय तुरंत करने चाहिए। ऐसे तमाम प्रदूषण स्रोतों को नियंत्रित करने की जरूरत है जो हमारे जीवन पर संकट पैदा कर रहे हैं।

अध्ययन कहता है कि भारत के सबसे कम प्रदूषित शहर भी डब्ल्यूएचओ के निर्धारित मानकों से सात गुना अधिक प्रदूषित हैं। हम न भूलें कि देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की गिनती लगातार दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानियों में होती रही है। दीवाली के बाद जब दिल्ली गहरे प्रदूषण के आगोश में होती है तो कोर्ट से लेकर सरकार तक अति सक्रियता दर्शाते हैं। लेकिन थोड़ी स्थिति सामान्य होने पर परिणाम वही 'ढाक के तीन पात'।

रिपोर्ट में उल्लेखित प्रदूषण में आई गिरावट की वजह अनुकूल मौसम संबंधी परिस्थितियां बतायी गई हैं। हालांकि, हकीकत यह भी है कि प्रदूषण नियंत्रण के लिये चलायी जा रही कई योजनाओं के सकारात्मक परिणामों का भी इसमें योगदान रहा है। खासकर भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के तहत जिन शहरों को शामिल किया गया था, वहां भी पीएम-2.5 सांद्रता में गिरावट देखी गई है।

कभी पेट्रोल-डीजल के नये मानक तय होते हैं तो कभी जीवाश्म ईंधन पर रोक लगती है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने वर्ष 2019 में प्रदूषण कम करने को राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम देश के सौ से अधिक शहरों में शुरू किया था। चार साल बाद पता चला कि किसी भी शहर ने अपने लक्ष्य को पूरा नहीं किया। विकासशील देश पहले ही निर्धारित वायु गुणवत्ता के मानक पूरा नहीं कर पा रहे हैं, वहीं डब्ल्यूएचओ ने मानकों को और कठोर बना दिया है। सभी सरकारों व नागरिकों का दायित्व बनता है कि अपने-अपने स्तर पर प्रदूषण को कम करने वाली जीवन शैली अपनाएं। हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि पूरी दुनिया में सत्तर लाख मौतें हर साल प्रदूषित वायु के चलते हो रही हैं।

उल्लेखनीय है कि भारत के राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानक के अनुसार हवा में पीएम 2.5 और पीएम 10 के वार्षिक स्तर की सुरक्षित सीमा क्रमशः चालीस माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर और साठ माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर होनी चाहिए। हालांकि, ये मानक विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशानिर्देशों के अनुसार निर्धारित मानकों से कहीं ज्यादा हैं। दरअसल, हमारे नीति-नियंता प्रदूषण कम करने के लिये नागरिकों को जागरूक करने में भी विफल रहे हैं। हमारी सुख-सुविधा की लालसा एवं भौतिकतावादी जीवनशैली की चमक ने भी वायु प्रदूषण बढ़ाया है। अब चाहे गाहे-बगाहे होने वाली आतिशबाजी हो, प्रतिबंध के बावजूद पराली जलाना हो, या फिर सार्वजनिक परिवहन सेवा से परहेज हो, तमाम कारण प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। कल्पना कीजिए बच्चों और दमा, एलर्जी व अन्य सांस के रोगों से जूझने वाले लोगों पर इस प्रदूषण का कितना घातक असर होगा?

रिपोर्ट में उल्लेखित प्रदूषण में आई गिरावट की वजह अनुकूल मौसम संबंधी परिस्थितियां बतायी गई हैं। हालांकि, हकीकत यह भी है कि प्रदूषण नियंत्रण के लिये चलायी जा रही कई योजनाओं के सकारात्मक परिणामों का भी इसमें योगदान रहा है। खासकर भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के तहत जिन शहरों को शामिल किया गया था, वहां भी पीएम-2.5 सांद्रता में गिरावट देखी गई है। वहीं स्वच्छ ईंधन कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव प्रदूषण नियंत्रण पर नजर आया है।

इससे भारत के रिहाइशी इलाकों में कार्बन उत्सर्जन कम करने में मदद मिली है। ऐसी योजनाओं को पूरे देश में लागू करने का सुझाव भी दिया गया है। बहरहाल, हमें वर्ष 2022 के उत्साहजनक परिणामों के सामने आने के बाद व्यापक लक्ष्यों के प्रति उदासीन नहीं होना है। यह एक लंबी लड़ाई है और इसमें सरकार व समाज की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि सरकारों के भरोसे ही लगातार गहराते पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण किया जा सकता है।

निश्चित ही वायु प्रदूषण से उत्पन्न दमघोटू माहौल का संकट जीवन का संकट बनता जा रहा है। वायु प्रदूषण का ऐसा विकराल जाल है जिसमें मनुष्य सहित सारे जीव-जंतु फंसकर छटपटा रहे हैं, जीवन सांसों पर छाये संकट से जूझ रहे हैं। यह समस्या साल-दर-साल गंभीर होती जा रही है। सरकारें अनेक लुभावने तर्क एवं तथ्य देकर समस्या को कमतर दिखाने की कोशिशें करती है। लेकिन हकीकत यही है कि लोगों का दम घुट रहा है। अगर वे सचमुच इससे पार पाने को लेकर गंभीर हैं, तो वह व्यावहारिक धरातल पर दिखना चाहिए। प्रश्न है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रहे राष्ट्र को कोई समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती? वास्तव में यह विभिन्न राज्य सरकारों का गैर जिम्मेदाराना व्यवहार है, जिसने सबको जहरीले वायुमंडल में रहने को विवश किया है। इस विषम एवं ज्वलंत समस्या से मुक्ति के लिये हर राजनीतिक दल एवं सरकारों को संवेदनशील एवं अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न बनना होगा। प्रदूषण से ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा-सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। क्षण-क्षण अग्नि-परीक्षा देता है। पर हां! अग्नि परीक्षा से कोई अपने शरीर पर फूस लपेट कर नहीं निकल सकता।

हिंसा हमारी संस्कृति नहीं

कानून हाथ में लेने पर किसी की स्वीकृति नहीं

यदि कोई आपराधिक गतिविधि में संलिप्त है, तो उसकी सूचना पुलिस को दी जा सकती है, पर उसकी हत्या का अधिकार किसी को नहीं है।

शिक्षक दिवस के दिन जब कुछ छात्र बधाई देने आए, तो मेरी आंखों के सामने बारहवीं कक्षा के बीस वर्षीय छात्र आर्यन मिश्रा की तस्वीर कौंध गई। गत 23 अगस्त को गो-तस्कर समझकर उसकी हत्या कर दी गई थी। एसपी अनिल यादव की टीम ने हत्या के मामले में कृष्ण, आदेश, सौरव और अनिल को गिरफ्तार कर लिया। प्रश्न कौंधा, गो-निगरानी कर्ताओं के दल को उसकी हत्या का अधिकार कहां से मिला। यह अनुदारता, क्रूरता और अराजकता कहां से आ रही है? यह कितने रूपों और कितने क्षेत्रों में भय और अशांति की वजह बन रही है।

आए दिन अखबारों में प्रकाशित हो रही ऐसी क्रूरतापूर्ण अमानवीय घटनाओं की खबरें नजर अंदाज नहीं की जा सकतीं। अपराधियों का कहना कि 'हमें पता नहीं था कि आर्यन मिश्रा गो-तस्कर नहीं है।' सवाल है कि यदि आर्यन मिश्रा गो-चोरी करके ले जा रहा होता, तब भी क्या किसी को उसकी हत्या का हक था? यदि कुछ गैर-कानूनी या गैर-सांस्कृतिक घटित होता दिख रहा था, तो वे पुलिस की मदद ले सकते थे। दंड देने का अधिकार तो पुलिस को भी नहीं है। पुलिस मुकदमा चलाकर उसे कोर्ट में तो पेश कर सकती है, परंतु उसे भी हत्या का अधिकार नहीं है।

लिंग, जातिगत या सांप्रदायिक हिंसा कोई नई बात नहीं है। सोशल मीडिया के दौर में अब इन बातों की जानकारी तेजी से फैलती है। इन दिनों पश्चिम बंगाल में प्रशिक्षु डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या की घटना चर्चा के चरम पर है। हिंसक अनैतिक प्रवृत्ति का विस्तार शांति, प्रगति, सद्भाव और सामाजिक सौहार्द की भावना के लिए चिंताजनक है। दुखद है कि ऐसी घटनाओं का अंत नहीं दिखता। कानपुर की 24 वर्षीय बीबीए की छात्रा मॉडलिंग करती थी। पुलिस के अनुसार, इंस्टाग्राम पर विपिन नामक युवक से उसकी दोस्ती हुई। उसने भोजपुरी फिल्म में काम दिलाने का झांसा देकर विगत तीन सितंबर को एक होटल में एक अन्य विनय नामक युवक के साथ मॉडल के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया।

दो सितंबर को बागपत में आठवीं की छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म और नमाज पढ़वाने का मामला प्रकाश में आया। आरोपी रिजवान को कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया। मध्य प्रदेश के शहडोल में 31 अगस्त को एक दलित किशोर को निर्ममता से पीटा गया। सोशल मीडिया पर वीडियो अपलोड करके इसे सार्वजनिक भी किया गया, जिससे पता चलता है कि अपराधियों को कानून की कोई परवाह नहीं है। नतीजा एससी/एसटी ऐक्ट के तहत पांच लोग कानून की गिरफ्त में हैं।

सोशल मीडिया और जन जागरूकता के कारण ये घटनाएं प्रकाश में आ रही हैं। इनमें ज्यादातर घटनाएं दलितों व उनकी महिलाओं के उत्पीड़न की हैं, जिन्हें अपराधियों ने स्वयं इंटरनेट पर वीडियो अपलोड कर दर्शाया है। ऐसे बहुत से मामले हैं, जिनकी रिपोर्ट थानों-कचहरियों में दर्ज नहीं होतीं या जिनकी खबरें प्रकाशित नहीं होतीं। दो सितंबर को खबर आई कि मसौली थाना क्षेत्र के एक व्यक्ति ने एसपी से शिकायत की कि उसकी भांजी को 22 अगस्त को गांव के ही युवक ने कार में खींच कर अपहरण कर लिया। बंधक बनाकर लखनऊ, कानपुर और गाजियाबाद ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। कार्रवाई करने के बजाय पुलिसकर्मियों द्वारा उसे दस घंटे थाने में बिठाया गया।

तीन सितंबर को बहराइच जिले में एक ग्रामीण किशोरी के प्रेम प्रसंग से नाराज पिता ने उसके शरीर के छह टुकड़े कर दिए। बेटी के सिर को हाथ में लिए वह घर के बाहर एक घंटे तक बैठा रहा। 16 जुलाई की एक खबर में खतौली (मुजफ्फरनगर) गांव मढ़करीमपुर में अनुसूचित जाति के युवक अमृत कुमार की घुड़चढ़ी के दौरान दो पक्षों में मारपीट के बाद पथराव में दो युवक घायल हो गए। पुलिस ने राजपूत समाज के आठ नामजद और आठ अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। 20 मई को मध्य प्रदेश के अशोक नगर जनपद में बुजुर्ग दंपती को खंभे से बांधकर पीटा और उन्हें जूतों की माला पहना दी।

ऐसी घटनाएं मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार समेत देश के अनेक हिस्सों में आए दिन होती रहती हैं। हिंसा व्यक्ति की गरिमा और आत्मसम्मान को क्षति पहुंचाती है। हिंसा और अनुदारता की प्रवृत्ति शहरों की अपेक्षा गांवों में अधिक पाई जा रही है। दुष्कर्म व हत्या जैसे मामले जब किन्हीं खास व्यक्तियों से ताल्लुक रखते हैं, तब ही काबिले-ऐतराज क्यों होते हैं? सामान्य लोगों के साथ तो यह सदियों से होता रहा है, तब क्यों नहीं नाराजगी दिखाई देती? ऐसी अमानवीय अनुदारता क्यों? हिंसा हमारी संस्कृति नहीं हो सकती।

करदाताओं को आसान भाषा में नोटिस भेजें, शक्ति का विवेकपूर्ण इस्तेमाल हो : वित्तमंत्री

निर्मला सीतारमण ने कर अधिकारियों से कहा कि वे करदाताओं को भेजे जाने वाले नोटिस या पत्रों में सरल शब्दों का इस्तेमाल करें और कानून की तरफ से दी गई शक्तियों का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करें। उन्होंने कहा कि कर नोटिस से करदाताओं के मन में 'डर की भावना' नहीं पैदा होनी चाहिए। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कर अधिकारियों से कहा कि वे करदाताओं को भेजे जाने वाले नोटिस या पत्रों में सरल शब्दों का इस्तेमाल करें और कानून की तरफ से दी गई शक्तियों का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करें। सीतारमण ने 165वें आयकर दिवस पर यहां आयोजित एक समारोह में कहा कि चेहरा-रहित आकलन व्यवस्था लागू होने के बाद कर अधिकारियों को अब करदाताओं के साथ अधिक 'निष्पक्ष और मैत्रीपूर्ण' व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि कर नोटिस से करदाताओं के मन में 'डर की भावना' नहीं पैदा होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि कर नोटिस सरल और साफ होना चाहिए। मंत्री ने कहा कि नोटिस में करदाता को यह एकदम स्पष्ट कर देना चाहिए कि उसे किस कारण से नोटिस भेजा जा रहा है। इसके साथ ही सीतारमण ने कहा कि आयकर रिफंड तेजी से जारी करने में सुधार की गुंजाइश है। वित्त मंत्री ने करदाताओं के साथ व्यवहार में 'अनियमित तरीके' अपनाने से बचने का कर अधिकारियों से आग्रह करते हुए कहा कि उनकी कार्रवाई मुद्दे के अनुपात में ही होनी चाहिए। उन्होंने करदाताओं से यह भी कहा कि वे प्रवर्तन उपायों का उपयोग केवल अंतिम माध्यम के रूप में करें और विभाग का लक्ष्य स्वैच्छिक अनुपालन को बढ़ावा देने का होना चाहिए।

इसके साथ ही सीतारमण ने कहा कि कर विभाग को अधिक मित्रवत और पारदर्शी होने की उनकी बात का मतलब यह नहीं है कि कर अधिकारी इन सभी वर्षों में अनुचित थे। सीतारमण ने कहा, ''क्या हम सरल और समझने में आसान नोटिस भेजने के बारे में सोच सकते हैं? आप कारण बताएं कि नोटिस में कार्रवाई क्यों की गई और नोटिस क्यों भेजा जा रहा है।'' वित्त मंत्री ने कर विभाग के साथ अपना समर्थन जताते हुए कहा कि कर अधिकारियों को अपने दायित्वों का निर्वहन जारी रखना चाहिए।

हाईकोर्ट की इन्दौर खण्डपीठ में सभी मैन्युअल सिस्टम बंद...

सभी केस डिजिटल ही पेश हो रहे, वकीलों को हो रही परेशानी, कागज की बचत भी नहीं...

हाई कोर्ट में सभी तरह के प्रकरण अब केवल डिजिटल मोड से ही पेश किए जाने की शुरूआत हो गई है। मैनुअल सिस्टम से याचिका लगाने की व्यवस्था पूरी तरह बंद हो गई है। इससे वकीलों को काफी परेशानी हो रही है। वकीलों ने एक्टिंग चीफ जस्टिस को पत्र भेजना शुरू कर दिए हैं। अधिवक्ता आनंद अग्रवाल ने सीजे को भेजे पत्र में कहा कि सुप्रीम कोर्ट में इस सिस्टम की बड़ी खामी सामने आ चुकी है। एक पक्षकार ने इनकार कर दिया था कि उसने कोई याचिका डिजिटल मोड से दायर ही नहीं की थी। डिजिटल मोड से गोपनीयता भी भंग हो जाएगी।

अधिवक्ता मनीष यादव ने पत्र में कहा कि केस डायरी को पहले सीधे जज ही देखते थे। अब स्कैन होने के बाद पीडीएफ में जज के पास जाएगी तो कई चरणों से होकर गुजरेगी। मालूम हो, प्रिंसिपल बेंच जबलपुर, खंडपीठ इंदौर और ग्वालियर में डिजिटल मोड से ही सुनवाई की व्यवस्था अनिवार्य कर दी गई है। कोरोना काल में इस तरह से सुनवाई की गई थी, लेकिन न्यायाधीशों से लेकर वकीलों तक को परेशानी आ रही थी।

रिकॉर्ड उड़ गया तो क्या करेंगे : अधिवक्ता वरुण रावल ने पत्र में कहा कि कोर्ट को पेपरलेस किए जाने के उद्देश्य से यह सिस्टम शुरू किया है, लेकिन दस्तावेजों की ड्राफ्टिंग होगी, पेपर स्कैन करवाना ही होंगे। डिजिटल मोड में सर्वर डाउन होने, रिकॉर्ड उड़ जाने का डर रहता है। ऐसा होने पर बड़ी समस्या हो सकती है। मैनुअल रिकॉर्ड हमेशा उपलब्ध रहता है। इसे विकल्प के रूप में हमेशा ही रखा जाना चाहिए।

संस्कृत का खोया गौरव वापस दिलाना जरूरी

संस्कृत को आधुनिक तकनीक में अपनी क्षमता के लिए भी पहचाना जाता है, विशेष रूप से कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में और यही कारण है कि आज इसको आधुनिक लोक-जीवन शैली के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन कम्प्यूटर की महत्वपूर्ण भाषा होने का गौरव भी प्राप्त है।

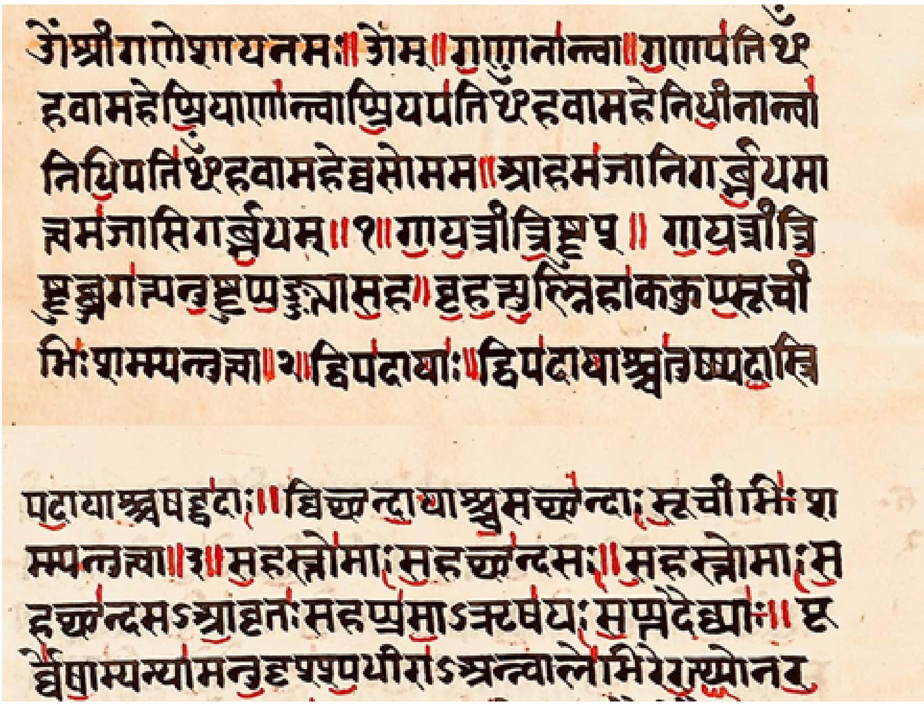

संस्कृत दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है। इसे देवताओं की भाषा यानी 'देवभाषा' अथवा 'देववाणी' भी कहा जाता है। अतीत में इस भाषा ने भारतीय सभ्यता को आकार प्रदान किया और आज भी इसकी प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। सच कहा जाए तो संस्कृत केवल एक भाषा ही नहीं है, बल्कि हिंदू संस्कृति का आधार स्तंभ है। यह अपने आप में ज्ञान, विज्ञान, धर्म, संस्कार, संस्कृति एवं आध्यात्मिकता का विशाल भंडार समेटे हुए है। संस्कृत भाषा के अत्यन्त विशाल और व्यापक भंडार में गद्य, पद्य एवं चम्पू तीनों रूप मौजूद हैं। संस्कृत के इस महाभंडार में विश्व के प्रथम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' समेत चारों वेद, समस्त उपनिषद, श्रीमद्भाग्वत महापुराण सहित अठ्ठारहों पुराण, अत्यंत लोकप्रिय तथा सनातन संस्कृति एवं सभ्यता के निरूसीम प्रामाणिक विस्तार वाली गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महान ग्रंथ श्रीरामचरित मानस तथा श्रीराम कथा का प्रामाणिक आधार ग्रंथ महर्षि वाल्मिकी कृत रामायण, स्मृतियां, सूक्त, त्रयीसंग्रह, धर्मशास्त्र, महाभारत एवं अन्य कई महाकाव्य, नाटक आदि शामिल हैं। इनके अतिरिक्त शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ज्योतिष, वेदांग-न्याय, वैशेषिक सांख्य योग, वेदांग मीमांसा, दर्शन आदि इसी भाषा की देन हैं। दर्शनों में हिंदू, जैन, बौद्ध, चार्वाक, आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

रचनाकारों में अगस्त्य, अमरु, असाग, अश्वघोष, आर्यशूर, वाल्मीकि, व्यास, भल्लट, भवभूति, भीमस्वामी, भूवनदेव, मंखक, दंडी, भास, भारवि, कल्हण, कौटिल्य, कुंतक, सुबन्धु, माघ, बाणभट्ट, कालिदास, रत्नाकर स्वामी, श्रीहर्ष, जल्हण, जयदेव, शूद्रक, विशाखदत्त, लोलिम्बराज, विष्णु शर्मा, सत्यव्रत शास्त्री, हर्ष, राजशेखर एवं हर्षवर्धन आदि कवि, नाटककार, गद्यकार तथा पाणिनि जैसे अनन्य व्याकरणविद् संस्कृत भाषा के गरिमामय भंडार के महत्वपूर्ण अंग हैं।

गौरतलब है कि संस्कृत भाषा के गर्भ से अनेक देशी एवं विदेशी भाषाओं का जन्म होने के कारण इसे 'भाषाओं की जननी' भी कहा जाता है। हालांकि पिछली सदियों में संस्कृत भाषा और इसमें रचित साहित्य तथा इसे रचने वाले साहित्यकारों को बहुत उपेक्षाएं झेलनी पड़ीं, लेकिन इसके बावजूद इसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रही और आज भी कायम है, जबकि लैटिन एवं ग्रीक सहित दुनिया की दूसरी कई भाषाएं उपेक्षित होकर समय के तीव्र प्रवाह में काल-कवलित हो गयीं। संस्कृत भाषा की प्रासंगिकता बनी रहने का सबसे बड़ा कारण यह है कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली इस भाषा की वर्तनी, वर्ण, अक्षर तथा इनसे बनने वाले शब्दों के उच्चारण में आभासी अन्तर बिल्कुल नहीं होता। तात्पर्य यह कि संस्कृत एक सुनिश्चित व्याकरण वाली पूर्णतरू वैज्ञानिक भाषा है।

संस्कृत को आधुनिक तकनीक में अपनी क्षमता के लिए भी पहचाना जाता है, विशेष रूप से कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में और यही कारण है कि आज इसको आधुनिक लोक-जीवन शैली के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन कम्प्यूटर की महत्वपूर्ण भाषा होने का गौरव भी प्राप्त है। संस्कृत भाषा का संरचित वाक्य-विन्यास और व्याकरण इसे कम्प्यूटर की प्रोग्रामिंग भाषाओं के लिए भी उत्कृष्ट बनाता है। अब तो वैज्ञानिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एवं अन्य अत्याधुनिक तकनीकों में भी इस भाषा के उपयोग की संभावनाएं तलाशने में लगे हुए हैं। दरअसल, संस्कृत की संरचना इतनी सटीक है और इसकी ध्वन्यात्मकता इतनी समृद्ध है कि इसे आध्यात्मिक प्रवचन के लिए भी सर्वाधिक उपयुक्त भाषा माना जाता है। आजकल इसे लेकर जर्मनी में अनेक स्तरों पर अनुसंधान-कार्य भी किए जा रहे हैं। अत्याधुनिक और विराट मारक क्षमता वाले हमारे देशी प्रक्षेपास्त्रों के लिए प्रारंभिक चिंतन का आधार भी संस्कृत में विरचित हमारे वेद एवं उनकी विविध संहिताएं रही हैं। ये वही वेदशास्त्र हैं, जिनसे हमारी महत्वपूर्ण वैदिक परंपरा आरंभ हुई। यह परंपरा सनातन धर्म की नींव है। संस्कारों की बात करें तो इस वैदिक परंपरा में कुल 16 संस्कार होते हैं। ये संस्कार वास्तव में 16 महत्वपूर्ण अनुष्ठान होते हैं, जो आद्योपांत व्यक्ति के जीवन से जुड़े रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो ये अनुष्ठान जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति का मार्गदर्शन करते हैं।

इन संस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण 'उपनयन संस्कार' माना जाता है, जो कि दसवां संस्कार होता है। यह अनुष्ठान प्राचीन काल से ही बच्चों की औपचारिक शिक्षा की शुरुआत का प्रतीक रहा है। यह सावन पूर्णिमा को आयोजित किया जाता है, जब संस्कृत में 'गायत्री मंत्र' के पाठ के साथ बच्चों को वैदिक शिक्षा की दीक्षा दी जाती है। यह दीक्षा ज्ञान और आध्यात्मिक शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के प्रवेश का प्रतीक होती है, जो व्यक्तियों के शैक्षिक और आध्यात्मिक जीवन के संदर्भ में संस्कृत भाषा के महत्व को रेखांकित करती है।

भारत की प्रथम महिला आईपीएस किरण बेदी से प्रभावित रहीं श्रीमती सुमन गुर्जर

हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका की वरिष्ठ संरक्षक डॉक्टर शालिनी कौशिक एवं संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की पुलिस अधीक्षक, पीटीएस तिघरा, ग्वालियर से विशेष चर्चा

1. नाम - सुमन गुर्जर, पुलिस अधीक्षक
जन्म दिनांक - 18.03.1973
शिक्षा - एमए
पिता - स्व. श्री कृष्ण बहादुर सिंह गुर्जर, भारतीय जीवन बीमा निगम में प्रशासनिक अधिकारी थे, जो पैतृक गाँव-जींगनी, जिला-मुरैना से आकर ग्वालियर में स्थापित हुये।
माताजी - श्रीमती अनीता गुर्जर, शिक्षित गृहणी हैं।
भाई - दोनों छोटे भाई सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में निवासरत हैं।
अनुज वधुएं - अनुज वधुएं भी सुशिक्षित होकर एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं तथा दूसरी प्रोफेसर हैं।
इस प्रकार माता-पिता ने अपनी सभी संतानों को उच्च शिक्षा दिलवाई।

2. पुलिस में आने की प्रेरणा माताजी ने दी, जो भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस. श्रीमती किरण बेदी से विशेष रूप से प्रभावित थीं।

कक्षा-12 उत्तीर्ण करने के बाद ही पी.एस.सी. की तैयारी शुरू कर दी एवं ग्रेजुएशन करने के उपरांत वर्ष 1998 में पी.एस.सी. द्वारा सीधी भर्ती की डी.एस.पी. के रूप में चयनित हुई।

जवाहर लाल नेहरू पुलिस अकादमी सागर में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत पहली पोस्टिंग जिला-खरगौन में रही।

3. (अ) पुलिस में विशेष उपलब्धि के रूप में मध्यप्रदेश पुलिस की एकमात्र महिला पुलिस अधिकारी, जो दस्यु उन्मूलन अभियान में सेक्टर ऑफीसर के रूप में पदस्थ थीं। उस समय की रामबाबू गड़रिया गैंग का विशेष टास्क रहा। अनेक अंतर्राज्यीय इनामी दस्युओं के समर्पण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिस हेतु अनेक बार पुलिस महानिदेशक, म.प्र. द्वारा प्रशंसा-पत्र एवं नगद इनाम प्राप्त हुये।

(ब) वर्ष 2024 में सराहनीय सेवाओं के लिये राष्ट्रपति पुलिस पदक से अलंकृत होने का गौरव प्राप्त हुआ।

4. महिला होने के कारण पुलिस में कोई विशेष कठिनाई नहीं आई, क्योंकि पूरे परिवार और वरिष्ठ अधिकारियों का विशेष सहयोग तथा मार्गदर्शन समय-समय पर प्राप्त होता रहा।

5. लेखन में रूचि कैसे हुई: लेखन में रूचि बचपन से ही थी। छात्र जीवन से ही विभिन्न कविताएं तथा कहानियां पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होतीं रहीं। कादंबिनी पत्रिका द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर भी समय-समय पर कविताएं प्रकाशित होतीं रहीं। इसी वर्ष विश्व पुस्तक मेला, नई दिल्ली में सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रथम कहानी संग्रह "भीलन लूटी गोपिका" प्रकाशित हुई। कहानियां एवं कविताएं राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं।

6. ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की महिलाओं के संघर्ष के विषय में: ग्वालियर-चंबल क्षेत्र उच्च पितृसत्तात्मक मनोवृत्ति एवं परंपराओं का क्षेत्र है। जिसमें लड़कियां / महिलाएं परिवार की प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं। जिसके एवज में वे सदैव एक स्वाभाविक सामान्य जीवन जीने से वंचित रह गईं। इस प्रतिष्ठा की ज्वाला में उनकी बलि चढ़ती ही रहती है। बीहड़ों / बागियों से भरे इस क्षेत्र की स्त्री का जीवन वैसे भी सरल होने की कोई गुंजाइश नहीं है। मेरी कहानियों में उनका यही दैनिक संघर्ष प्रतिबिंबित है।

7. आम नागरियों की पुलिस के प्रति धारणा: पुलिस यदि संवेदनशील, पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ कार्य करे तो मेरा यह अनुभव है कि ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में पुलिस का मान-सम्मान सबसे अधिक है। इस क्षेत्र से सर्वाधिक जवान पलिस और आर्मी में सेवा हेतु जाते हैं। पुलिस को यह समझना होगा कि वे लोकतांत्रिक देश के कानून को क्रियान्वित करते हैं। उसे यहां के नागरिकों के साथ संवेदनशीलता और सम्मान का व्यवहार करना ही होगा।

8. ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की छात्राओं के लिये मेरा संदेश: क्षेत्र की छात्राओं के लिये मेरा संदेश है कि वे लक्ष्य निर्धारित करें और अपने परिवार को विश्वास में लेकर अपने लक्ष्य के लिये कठिन परिश्रम करें। आपकी एक गलती भी आगे आने वालीं अनेकों लड़कियों का रास्ता बंद कर सकता है। अतः अपने प्रत्यके आचरण का अपनी परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में समुचित आकलन करके ही कोई कदम उठाएं।

सीबीआई ने ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी के प्रबंधक समेत 13 पर मामला दर्ज किया

ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड को फर्जी बीमा दावे कर कंपनी को चार करोड़ रुपए का नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया है। आरोपियों ने आपराधिक साजिश के तहत फर्मों ने तेंदू पत्तों के स्टॉक का बीमा कराया और फिर एक मनगढ़ंत आग लगने की घटना के बहाने बीमा राशि का दावा किया। सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (CBI) ने ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (OIC Ltd) के वरिष्ठ प्रबंधक और विकास अधिकारी समेत13 लोगों पर मामला दर्ज किया है। इस घोटाले में निजी व्यक्ति, बीमा एजेंट, सर्वेयर, जांचकर्ता और सात निजी फर्मों के मालिक शामिल हैं। आरोप है कि इन लोगों ने मिलकर फर्जी बीमा दावे कर कंपनी को 4 करोड़ रुपये का नुकसान पहुंचाया। सीबीआई ने यह मामला ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के क्षेत्रीय प्रबंधक की शिकायत के आधार पर दर्ज किया गया है। शिकायत में कहा गया है कि सतना स्थित कंपनी के वरिष्ठ प्रबंधक और विकास अधिकारी ने 2022 में निजी फर्मों के साथ मिलकर फर्जी बीमा दावे किए। इस आपराधिक साजिश के तहत फर्मों ने तेंदू पत्तों के स्टॉक का बीमा कराया और फिर एक मनगढ़ंत आग लगने की घटना के बहाने बीमा राशि का दावा किया।

फर्मों ने फर्जी ट्रेडिंग खातों का इस्तेमाल किया

शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि सतना जिले के अहिरगांव स्थित गोदाम में कथित रूप से आग लगने की बात कही गई, जहां तेंदू पत्तों का स्टॉक रखा गया था। यह गोदाम बिना बिजली कनेक्शन के था, जिससे आगजनी की घटना को संदिग्ध माना जा रहा है। स्थानीय पुलिस की दर्ज एफआईआर और पंचनामा को सर्वेयर, जांचकर्ता और ओआईसी लिमिटेड के अधिकारियों ने नजरअंदाज कर दिया। साथ ही, फर्मों ने फर्जी ट्रेडिंग खातों का इस्तेमाल किया गया और बीमा दावे के लिए जीएसटी रिटर्न भी दाखिल नहीं किया गया था। ओआईसी लिमिटेड के विकास अधिकारी पर आरोप है कि उन्होंने 07 बीमा पॉलियों को 14 पॉलिसियों में विभाजित कर बीमा दावों को मंजूरी दिलाने की सुविधा प्रदान की। यह कार्य कंपनी के नियमों के खिलाफ था और इसके जरिए उन्होंने वरिष्ठ प्रबंधक की वित्तीय अधिकार सीमा में दावे को लाकर मंजूरी प्राप्त की। इसके बाद इन फर्मों ने 14 दावे प्रस्तुत किए, जो बिना उच्च अधिकारियों को सूचित किए मंजूर कर लिए गए।

...रिपोर्ट में नुकसान को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया

इस साजिश के तहत वरिष्ठ प्रबंधक ने सर्वेयर और जांचकर्ताओं के माध्यम से 14 सर्वे और जांच रिपोर्ट प्राप्त की, जिसमें नुकसान को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया। इन्हीं रिपोर्टों के आधार पर बीमा दावे मंजूर किए गए। आज, 11 सितंबर 2024 को सीबीआई ने इंदौर, सतना और जबलपुर स्थित आरोपियों के आवासीय और आधिकारिक परिसरों पर छापेमारी की, जिससे कई आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए गए हैं।

अनुच्छेद 370 इतिहास बन चुका, वापस नहीं आएगा

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा का चुनावी घोषणापत्र जारी करते हुए कहा कि अनुच्छेद 370 इतिहास का हिस्सा है और यह कभी वापस नहीं आएगा। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा, 'मैं पूरे देश को यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि अनुच्छेद 370 इतिहास बन चुका है और यह कभी वापस नहीं आएगा।' भाजपा के चुनावी घोषणापत्र के बारे में बात करते हुए शाह ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के राजौरी के पास एक नया पर्यटन केंद्र बनेगा और घाटी में 5 लाख नौकरियां पैदा की जाएंगी। घोषणापत्र में कहा गया है कि जम्मू में पर्यटन केंद्र भी बनाए जाएंगे और भाजपा कश्मीरी पंडितों सहित विस्थापित समुदायों का कल्याण सुनिश्चित करेगी।

घोषणापत्र में कहा गया है, 'हम कश्मीरी पंडित समुदाय की सुरक्षित वापसी और पुनर्वास सुनिश्चित करने के लिए टीका लाल टपलू विस्थापित समाज पुर्नवास योजना (टीएलटीवीपीवाई) शुरू करेंगे।' अमित शाह ने यह भी कहा कि भाजपा जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का पूर्ण उन्मूलन सुनिश्चित करेगी और आतंकवाद के उद्भव में शामिल लोगों की जिम्मेदारी

तय करने के लिए एक श्वेत पत्र जारी किया जाएगा। घोषणापत्र जारी करते हुए अमित शाह ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश 10 वर्षों में 'अधिकतम आतंकवाद से अधिकतम पर्यटन' की ओर बढ़ गया है। कश्मीर घाटी में भाजपा के काम की सराहना करते हुए शाह ने कहा कि पार्टी ने आतंकवाद के पारिस्थितिकी तंत्र को ध्वस्त कर दिया है। उन्होंने कहा, '2014 तक जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद और अलगाववाद जारी रहा और विभिन्न राज्य और गैर-राज्य अभिनेताओं ने क्षेत्र को अस्थिर करना जारी रखा। इसके अलावा, अन्य सभी सरकारों ने जम्मू-कश्मीर की स्थिति से निपटने के लिए तुष्टिकरण की राजनीति की।'

शाह ने कहा, 'जम्मू-कश्मीर 1947 से ही हमारे दिल के बहुत करीब रहा है। जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग था, है और हमेशा रहेगा।' शाह ने कहा कि भाजपा का ध्यान घाटी में शांति बहाल करने पर रहेगा। विपक्ष पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा कि अन्य राजनीतिक दल तुष्टीकरण की राजनीति में लिप्त हैं और 'अलगाववाद के लिए जिम्मेदार हैं।'

शिमला मिर्च की आधुनिक खेती

शिमला मिर्च की आधुनिक खेती में उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन्नत कृषि तकनीकें शामिल हैं। इसमें नियंत्रित वातावरण फ़ेमिंग, सटीक सिंचाई और एकीकृत कीट प्रबंधन शामिल हैं।

शिमला मिर्च की आधुनिक खेती में अक्सर हाइड्रोपोनिक्स जैसी तकनीकें अपनाई जाती हैं, जो सटीक पोषक तत्व नियंत्रण की अनुमति देती हैं; नियंत्रित वातावरण कृषि (सीईए), जिसमें ग्रीनहाउस और वर्टिकल फ़ार्मिंग शामिल हैं; और जैविक नियंत्रण और एकीकृत कीट प्रबंधन जैसी उन्नत कीट प्रबंधन रणनीतियाँ। ये विधियाँ संसाधनों के उपयोग को कम करते हुए उपज और गुणवत्ता को अधिकतम करने में मदद करती हैं। आधुनिक शिमला मिर्च की खेती के लिए, भरपूर धूप वाली अच्छी जल निकासी वाली जगह चुनें। सुनिश्चित करें कि मिट्टी कार्बनिक पदार्थों से भरपूर हो, जिसका pH 6-6.8 हो। उच्च गुणवत्ता वाली, रोग प्रतिरोधी शिमला मिर्च की किस्मों का उपयोग करें। पौधों के बीच 18-24 इंच की दूरी रखें; उभरी हुई क्यारियों या कतार का उपयोग करें। निरंतर नमी के लिए ड्रिप सिंचाई लागू करें। मिट्टी परीक्षण के परिणामों के आधार पर संतुलित उर्वरक डालें। एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) रणनीतियों का उपयोग करें। फलों को तब चुनें जब वे दृढ़ और पूरी तरह से रंगीन हों।

नियंत्रित वातावरण का उपयोग करके ग्रीनहाउस की खेती, बढ़ते मौसम को बढ़ाने और पौधों को कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए। हाइड्रोपोनिक्स और एक्वापोनिक्स मिट्टी-मुक्त बढ़ती प्रणाली जो पोषक तत्वों और पानी के सटीक नियंत्रण की अनुमति देती है। एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) कीटों और बीमारियों के प्रबंधन के लिए जैविक, सांस्कृतिक, भौतिक और रासायनिक तरीकों का एक संयोजन है। फसलों की निगरानी और प्रबंधन के लिए सेंसर, ड्रोन और GPS जैसी तकनीकों का उपयोग करने वाली सटीक कृषि। संकर किस्में पैदावार, रोग प्रतिरोधक क्षमता और फलों की गुणवत्ता जैसे गुणों को बढ़ाने के लिए संकर बीजों का विकास और उपयोग करना। ड्रिप सिंचाई सीधे पौधों की जड़ों को पानी की सटीक मात्रा प्रदान करती है, जिससे पानी की बर्बादी कम होती है और पौधों का स्वास्थ्य बेहतर होता है। पौधों की वृद्धि को अनुकूलित करने के लिए तापमान, आर्द्रता और प्रकाश की स्थिति को विनियमित करने के लिए जलवायु नियंत्रण कार्यान्वयन प्रणाली। मिट्टी के स्वास्थ्य और उर्वरता को बनाए रखने के लिए फसल चक्र, कवर क्रॉपिंग और मिट्टी में सुधार जैसी प्रथाओं को अपनाते हुए मिट्टी प्रबंधन।

अपर्णा तिवारी

डॉ. रिचा तिवारी

आधुनिक शिमला मिर्च की खेती की लाभप्रदता विभिन्न कारकों से प्रभावित हो सकती है, जिसमें शिमला मिर्च की बाजार मांग भी शामिल है, शिमला मिर्च, जिसमें शिमला मिर्च और मिर्च शामिल हैं, इसकी पाक उपयोग और स्वास्थ्य लाभों के कारण वैश्विक स्तर पर उच्च मांग है। एक मजबूत बाजार मांग उच्च कीमतों और लाभप्रदता को बढ़ा सकती है। ग्रीनहाउस खेती और हाइड्रोपोनिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों के उत्पादन लागत में उच्च प्रारंभिक निवेश शामिल है, लेकिन इससे उपज और गुणवत्ता में वृद्धि हो सकती है। कुशल सिंचाई प्रणाली और कीट प्रबंधन भी लागत को कम करने और लाभप्रदता बढ़ाने में मदद करते हैं। उन्नत खेती के तरीकों से उपज और गुणवत्ता अक्सर उच्च उपज और बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादन का परिणाम देती है, जो बाजार में प्रीमियम कीमतों की मांग कर सकती है। संकर किस्में बेहतर पैदावार और रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी योगदान दे सकती हैं। जलवायु और स्थानीय जलवायु और मिट्टी की स्थिति खेती के तरीकों की उपयुक्तता को प्रभावित करती है। ग्रीनहाउस और नियंत्रित-पर्यावरण प्रणाली प्रतिकूल मौसम की स्थिति को कम कर सकती है, जिससे संभावित रूप से अधिक सुसंगत और लाभदायक उत्पादन हो सकता है। सटीक कृषि और आधुनिक तकनीकों को लागू करने की तकनीक और दक्षता संसाधन उपयोग (पानी, पोषक तत्व, आदि) को अनुकूलित कर सकती है, अपशिष्ट को कम कर सकती है और समग्र दक्षता को बढ़ा सकती है, जो लाभप्रदता में योगदान देती है। बाजारों तक पहुँच, बाजारों से निकटता और कुशल वितरण चैनल लाभप्रदता को प्रभावित करते हैं। प्रमुख उपभोक्ता बाजारों के करीब होने या स्थानीय बाजारों के माध्यम से सीधी पहुँच होने से राजस्व में वृद्धि हो सकती है। विनियमन और सब्सिडी सरकारी नीतियों के अनुसार, कृषि से संबंधित सब्सिडी और विनियमन लाभप्रदता को प्रभावित कर सकते हैं। संधारणीय प्रथाओं या प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए समर्थन वित्तीय लाभ प्रदान कर सकता है।

मध्यप्रदेश में 4,197 करोड़ की सूक्ष्म सिंचाई परियोजना को हरी झंडी

मंत्रिपरिषद की बैठक में मध्यप्रदेश के लिए कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। सबसे अहम निर्णय नीमच जिले की जावद-नीमच दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना को लेकर हुआ, जिसकी लागत 4 हजार 197 करोड़ 58 लाख रुपये है। इस परियोजना से 1 लाख 8 हजार 600 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की सुविधा मिलेगी, जिससे नीमच और जावद तहसील के 465 गांवों के किसान लाभान्वित होंगे।

इसके अलावा, मंत्रिपरिषद ने नर्मदापुरम के औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई में पॉवर एवं रिन्युबल एनर्जी इक्यूपमेंट मेन्युफेक्चरिंग जोन की स्थापना की भी स्वीकृति दी है। इस परियोजना के तहत राज्य सरकार 93.5 करोड़ रुपये का निवेश करेगी, जिसमें से 37.4 करोड़ रुपये की प्रारंभिक राशि आवंटित की गई है। यहां स्थापित होने वाली इकाइयों को विशेष विद्युत और जल दरों के साथ-साथ अन्य सुविधाएँ दी जाएंगी, जिससे राज्य में उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। मुरैना जिले के सीतापुर औद्योगिक क्षेत्र (द्वितीय चरण) में मेगा लेदर, फुटवेयर और एसेसरीज क्लस्टर डेवेलपमेंट पार्क की स्थापना के लिए भी 111.4 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। इस क्लस्टर में लेदर से संबंधित विभिन्न उत्पादों का निर्माण होगा, जिससे स्थानीय रोजगार और उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इन सभी परियोजनाओं को राज्य के आर्थिक विकास और औद्योगिक वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। मंत्रिपरिषद की बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि इन परियोजनाओं के लिए भूमि आवंटन और अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं को तेजी से पूरा करने के लिए विशेष समितियों का गठन किया जाएगा।

गांवों में 152 किमी लंबी 60 सड़कें बनेंगी

मध्यप्रदेश : केंद्रीय मंत्री शिवराज ने 113 करोड़ रुपये स्वीकृत किए

ग्रामीण विकास मंत्रालय की बैठक में तीन राज्यों की सड़कों और पुलों को स्वीकृति दी है। इसमें पीएम जनमन और ग्राम सड़क योजना के तहत केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंजूरी दी है। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने महाराष्ट्र, केरल और मध्य प्रदेश की सड़कों और पुलों के निर्माण कार्यों को स्वीकृति दी है। ग्रामीण विकास मंत्रालय की बैठक में इस निर्णय को अंतिम रूप दिया गया। मध्य प्रदेश में पीएम जनमन योजना के तहत 113.58 करोड़ की लागत से 152.44 किलोमीटर लंबी 60 सड़कों के निर्माण की स्वीकृति दी गई है।

अनूपपुर में सर्वाधिक 10 सड़कें

इनमें 10 सड़कों की स्वीकृति अनुपपुर, 5 सड़कों की अशोक नगर, 4 सड़कों की बालाघाट, 8 सड़कों की छिंदवाड़ा और 4 सड़कों की गुना जिले के लिए दी गई है। इसके अलावा ग्वालियर, जबलपुर, कटनी, मुरैना और श्योपुर जिलों में एक-एक सड़क स्वीकृत की गई है। साथ ही, शिवपुरी में 7, सीधी में 5, उमरिया में 6 और विदिशा में 6 सड़कों को मंजूरी दी गई है। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि इन स्वीकृतियों से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का विकास तेजी से होगा और लोगों को बेहतर यातायात सुविधाएं मिलेंगी।

महाराष्ट्र की 117 सड़कों को मंजूरी : इसके अलावा महाराष्ट्र में पीएम ग्राम सड़क योजना के तहत 745.286 किलोमीटर लंबी 117 सड़कों के निर्माण के लिए 655.66 करोड़ रुपये की मंजूरी दी है। केरल में पीएम ग्राम सड़क योजना-3 के अंतर्गत 55.28 करोड़ रुपये की लागत से 11 पुलों के निर्माण को स्वीकृति दी गई है। इन पुलों से राज्य के ग्रामीण इलाकों में संपर्क और यातायात को मजबूती मिलेगी।

बांग्लादेश में एक महीने बंद रहने के बाद शैक्षिक संस्थान खोले गए...

शैक्षिक संस्थानों के खुलने के कारण ढाका शहर के कई स्थानों पर वाहनों की भरमार देखी जा रही है। बांग्लादेश में साप्ताहिक कार्य दिवस रविवार से बृहस्पतिवार तक होता है। बांग्लादेश में विश्वविद्यालयों, माध्यमिक स्कूलों और कॉलेजों समेत सभी शिक्षण संस्थान रविवार को खोल दिए गए। इन्हें छात्रों के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान हिंसा होने के कारण एक महीने से अधिक समय पहले बंद कर दिया गया था। विरोध प्रदर्शनों के कारण प्रधानमंत्री शेख हसीना को पद से इस्तीफा देकर देश छोड़कर जाना पड़ा था। नौकरियों में आरक्षण से संबंधित प्रणाली में सुधार की मांग को लेकर हाल में हुए आंदोलन के दौरान हिंसा भड़कने पर छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बांग्लादेश में 17 जुलाई को शिक्षण संस्थान अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिए गए थे। शिक्षा मंत्रालय ने अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले सभी संस्थानों को खोलने का निर्देश जारी किया था। एक महीने बंद रहने के बाद रविवार को सभी शिक्षण संस्थान खोल दिए गए।

बांग्ला समाचार चैनल 'समय टीवी' के अनुसार उप सचिव मोसम्मात रहीमा अख्तर की ओर से 15 अगस्त को एक अधिसूचना जारी की गई थी जिसमें कहा गया था, "मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस के निर्देश के बाद 18 अगस्त से सभी शैक्षिक संस्थानों में शिक्षण गतिविधियों को फिर से शुरू करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए कहा गया है। डेली स्टार की खबर के अनुसार, सुबह के समय स्कूली छात्र 'यूनिफॉर्म' पहने अपने संस्थानों की ओर जाते देखे गए, जिनमें से कई के साथ उनके अभिभावक भी थे।

ट्रंप पर कैसे भारी पड़ रहीं कमला हैरिस

पूर्व राष्ट्रपति और रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प के बीच की भिड़ंत को लेकर खासा उत्साह नजर नहीं आ रहा था। फिर चीजें बदल गईं। जब से कमला हैरिस ने बाइडेन से कमान संभाली अपने हाथ में ली है। कई सर्वेक्षणों में डेमोक्रेट की संभावनाएं बढ़ सी गई हैं।

अमेरिकी चुनाव में अब दो महीने से भी कम समय बचा है। कैंडिजेट वोटर्स को लुभाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। वहीं मतादात भी चुनाव के लिए तैयार नजर आ रहे हैं। अमेरिकी चुनाव में इस बार बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है। कुछ ही महीने पहले, राष्ट्रपति जो बाइडेन के पूर्व राष्ट्रपति और रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प के बीच की भिड़ंत को लेकर खासा उत्साह नजर नहीं आ रहा था। फिर चीजें बदल गईं। जब से कमला हैरिस ने बाइडेन से कमान संभाली अपने हाथ में ली है। कई सर्वेक्षणों में डेमोक्रेट की संभावनाएं बढ़ सी गई हैं।

एसोसिएटेड प्रेस-NORC सेंटर फॉर पब्लिक अफेयर्स रिसर्च' के एक नए सर्वे की रिपोर्ट में कहा गया है कि कमला हैरिस को जुलाई के मुकाबले अब अधिक वोटरो का समर्थन मिलता दिख रहा है। लगभग आधे मतदाता हैरिस के बारे में कुछ हद तक या बहुत पॉजिटिव दृष्टिकोण रखते है। वही, पूर्व राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप का समर्थन हर 10 में से 4 वोटर कर रहे है। यूएसए टुडे न्यूज़ और सफ़ोक यूनिवर्सिटी द्वारा 16 सितंबर को जारी किए गए एक सर्वेक्षण में, हैरिस ने पेंसिल्वेनिया में ट्रम्प पर 49% से 46% की बढ़त हासिल की, जो चुनाव में एक महत्वपूर्ण स्विंग स्टेट है। राज्य में 500 लोगों के सर्वेक्षण में 4.4% की त्रुटि का मार्जिन दर्ज किया गया। सर्वेक्षणों ने यह भी दिखाया कि हैरिस राष्ट्रीय स्तर पर ट्रम्प पर 47.6% से 43.3% की बढ़त के साथ आगे चल रही हैं, जो डेमोक्रेट्स के लिए आठ अंकों का बदलाव है, क्योंकि पहली बहस के बाद बिडेन बाहर हो गए थे, जब ट्रम्प अमेरिकी राष्ट्रपति पर चार अंकों से आगे चल रहे थे।

अयोध्या में 36 हजार से अधिक रोजगार के अवसर लेकर आईं 48 कंपनियां...

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप प्रदेश के युवाओं को उनके गृह जनपद में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसी क्रम में प्रदेशभर में रोजगार मेलों का आयोजन किया जा रहा है। वहीं रामनगरी अयोध्या में जहां एक तरफ विकास कार्यों को तेज गति से पूरा किया जा रहा है, साथ ही यहां के स्थानीय युवाओं को निजी क्षेत्र की कंपनियां रोजगार देने में भी अच्छी खासी रुचि दिखा रही हैं। 18 अगस्त को अयोध्या आयोजित रोजगार मेले में 36 हजार से अधिक जॉब्स ऑफर लेकर 48 से अधिक कंपनियां शामिल हुईं।

अयोध्या में स्थानीय युवाओं के सामने रोजगार के अवसर लेकर आने वाली कंपनियों में अधिकांश मैन्युफैक्चरिंग, इंजीनियरिंग, टेलीकॉम, हेल्थकेयर, कंस्ट्रक्शन और आईटी जैसे क्षेत्रों से जुड़ी हुई हैं। रोजगार मेले में 10 हजार से अधिक युवाओं ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया था, वहीं अबतक इनमें से साढ़े पांच हजार से अधिक युवाओं को प्लेसमेंट का ऑफर भी मिल चुका है। अयोध्या में रोजगार के अवसर लेकर आने वाली कंपनियों में इंस्टा ह्यूमन मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड, सुजलॉन एनर्जी, टंबल ड्राई सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड, करियर ब्रिज, रीचा आईबीएम जैसी बड़ी कंपनियां शामिल हैं।

इसके साथ ही स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत 3415 से अधिक छात्र-छात्राओं को टैबलेट व स्मार्टफोन भी वितरित किए गए। सरकार का उद्देश्य युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने का है, ताकि भविष्य की चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार किया जा सके। जनपदों में रोजगार मेला का आयोजन उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा प्रशिक्षण एवं सेवायोजन निदेशालय तथा एमएसएमई विभाग के तत्वावधान में किया जा रहा है।

बता दें कि प्रदेश में मिशन रोजगार अभियान के तहत हर जिले में रोजगार मेलों का आयोजन योगी सरकार द्वारा किया जा रहा है। बीते साढ़े सात साल में साढ़े छह लाख से अधिक सरकारी और दो करोड़ से अधिक युवाओं को निजी सेक्टर में नौकरियों के अवसर प्राप्त हो चुके हैं। स्वयं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी जनपद स्तरीय वृहद रोजगार एवं ऋण मेलों में शामिल होकर युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित कर रहे हैं। दो दिन पहले ही में अंबेडकर नगर में भी सीएम योगी ने 6 हजार 7 सौ से अधिक युवाओं को विभिन्न कंपनियों में रोजगार के लिए नियुक्ति पत्र प्रदान किया था। इसके साथ ही 13 हजार से अधिक विद्यार्थियों को टैबलेट देकर टेक्नोलॉजी के जरिए सशक्त किया गया।

दो अक्टूबर को लगेगा इस साल का दूसरा सूर्यग्रहण

साल का दूसरा सूर्य ग्रहण 2 अक्टूबर को लगेगा। इससे पहले 8 अप्रैल को सूर्यग्रहण लगा था, जो अमेरिका, कनाडा, मेक्सिको, अटलांटिक, इंग्लैंड के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र और आयरलैंड में देखा गया था। भारत में ग्रहण प्रभावी नहीं था। 2 अक्टूबर को लगने वाला सूर्य ग्रहण वलयाकार ग्रहण होगा। इस दौरान रिंग ऑफ फायर नजर आएगा, जो सात मिनट 25 सेकंड तक दिखाई देगा। कहां दिखाई देगा 2024 का दूसरा सूर्य ग्रहण 2 अक्टूबर 2024 का सूर्य ग्रहण की शुरुआत उत्तरी प्रशांत महासागर में हवाई के दक्षिण से होगी। यह दक्षिणी अटलांटिक महासागर में दक्षिण जॉर्जिया में खत्म होगा। सूर्य ग्रहण जिस इलाके से शुरू होगा और खत्म होगा। वह यात्रा 14 हजार 163 किमी की होगी। रिंग ऑफ फायर की घटना साउथ अमेरिका में चिली और अर्जेंटीना के दक्षिण एरिया में दिखाई देगी। स्पेस डॉटकॉम के अनुसा, रिंग ऑफ फायर का सबसे अच्छा नजारा रापा नुई नाम के सुदूर वोल्केनो द्वीप से दिखेगा।

भारत में नहीं दिखेगा साल का दूसरा सूर्यग्रहण?

अप्रैल में लगा पहला सूर्य ग्रहण भारत में नजर नहीं आया था। अब दूसरा ग्रहण भी दिखाई नहीं देगा, क्योंकि जिस वक्त सूर्य ग्रहण शुरू होगा, तब भारत में रात होगी। अमेरिकी अंतरिक्ष स्पेस एजेंसी नासा के यूट्यूब चैनल पर इस ग्रहण को लाइव स्ट्रीम किया जाएगा।

होमगार्ड संभालेंगे महाकाल लोक की सुरक्षा व्यवस्था

राजधानी भोपाल से उज्जैन में स्थानांतरित किए गए प्रदेश के धर्मस्व विभाग के कार्यालय का शुभारंभ सोमवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने उज्जैन शहर में दो नए थाने (महाकाल महालोक परिसर और महावीर तपोभूमि क्षेत्र) खोलने के साथ ही श्री महाकाल महालोक की सुरक्षा व्यवस्था निजी एजेंसी से हटाकर होमगार्ड को देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि धर्मस्व विभाग कार्यालय खुलने से उज्जैन में नए अध्याय की शुरुआत हुई है। अब मंदिरों का विकास और मंदिर की जमीनों का बेहतर प्रबंधन होगा। बता दें कि धर्मस्व विभाग सिंहस्थ मेला कार्यालय भवन में खोला गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश में जहां-जहां भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के चरण पड़े हैं, उन सब स्थलों को धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करेंगे।

सिंहस्थ 2028 : महाकुंभ पुराने सारे रिकार्ड तोड़ेगा

वर्ष 2028 में लगने वाला महाकुंभ सिंहस्थ सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ेगा। आवश्यक कार्य समय पर पूरे हों, इसके लिए इसी वर्ष से प्रदेश के बजट में सिंहस्थ के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रविधान कर दिया गया है। इस मौके पर राज्यसभा सदस्य उमेश नाथ महाराज, सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक अनिल जैन, सतीश मालवीय, महापौर मुकेश टटवाल प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

निजी हाथों में नहीं दी जाएगी मध्य प्रदेश में नई सड़कों पर टोल टैक्स वसूली...

मध्य प्रदेश की सड़कों पर अब सड़क विकास निगम ही टोल वसूलेगा। स्टेट हाइवे पर बनने वाली नई सड़कों के लिए जारी टेंडर की शर्तों में ही इसके प्रविधान होंगे। इसके एवज में सड़क निर्माण करने वाली ठेका एजेंसी को सड़क बनाने में व्यय होने वाली राशि का 40 प्रतिशत निर्माण के समय और शेष 60 प्रतिशत राशि 15 साल का अनुबंध कर प्रतिशत वर्ष भुगतान की जाएगी। दरअसल, निगम का मानना है कि सड़क बनने के बाद आवागमन बढ़ता है और इससे ठेका एजेंसी प्रतिवर्ष लाभ उठाती हैं, लेकिन अगर सड़क विकास निगम टोल टैक्स वसूलेगा तो आवागमन बढ़ने के साथ ही निगम की आय भी बढ़ेगी। नई सड़कों का ट्रेफिक सर्वे कराकर तय किया जाएगा टोल कितना और कहा वसूला जा सकता है। इसके लिए स्थानीय प्रशासन और स्थानीय लोगों से सुझाव भी लिए जाएंगे।

यूजर फी योजना के तहत होगी टोल वसूली

बजट के अतिरिक्त वित्तीय संसाधनों को जुटाने के लिए एमपीआरडीसी (मप्र सड़क विकास निगम) द्वारा निर्मित मार्गों को यूजर फी योजना के तहत चयन के लिए यातायात की गणना कर संभावित वार्षिक संग्रहण राशि (एपीसी) का निर्धारण किया जाएगा। निर्मित मार्गों का टीओटी (टोल ऑपरेट एंड ट्रांसफर), ओएमटी (ऑपरेट मेंटेन एंड ट्रांसफर) माडल में परीक्षण कर विकसित किए जाएंगे। यह प्रस्ताव कैबिनेट में रखा जाएगा और वहां से स्वीकृति के बाद टोल टैक्स का निर्धारण कर वसूली की व्यवस्था की जाएगी। यातायात की गणना के आधार पर संभावित राजस्व का आंकलन कर वार्षिक अनुमानित संग्रहण (एपीसी) निर्धारण के बाद प्रारंभिक तौर पर केवल व्यवसायिक वाहनों से टोल वसूला जाएगा, इसके बाद आवश्यक होने पर निजी वाहनों से भी टोल टैक्स वसूलने का निर्णय लिया जा सकेगा।

उज्जैन-जावरा, इंदौर -उज्जैन और 14 नई सड़कों पर निगम वसूलेगा टोल- सड़क विकास निगम उज्जैन-जावरा, इंदौर-उज्जैन के अलावा 14 नई सड़कें बना रहा है। इन सड़कों पर निगम ही टोल टैक्स वसूलगा। इसके लिए यातायात गणना के आधार पर टोल टैक्स का निर्धारण किया जाएगा। 14 नई सड़कों में पांच सड़कें ऐसी हैं, जो उत्तर प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा से लगी हैं। ऐसे में यहां यातायात बढ़ने की संभावना अधिक है।

सरकारी अस्पतालों में 13 दवाएं मिलीं अमानक

मध्य प्रदेश में रोगियों को रोग से अधिक दर्द सरकारी व्यवस्था दे रही है। जो दवाएं खाकर रोगी खुद के ठीक होने की उम्मीद लगाए रहता है, वही दवाएं गुणवत्ता में फेल हो रही हैं। एक-दो नहीं बल्कि इस वर्ष अभी तक 13 दवाएं गुणवत्ता जांच में अमानक मिल चुकी हैं।

किसी में दवा का पावडर कम मिला है, किसी में दूसरी कमियां सामने आई हैं। अलग-अलग जिलों के सरकारी अस्पतालों से विभिन्न लैब में भेजे गए सैंपलों की जांच में इसकी पुष्टि हुई है। एंटीबायोटिक जेंटामाइसिन और सेफोटैक्सिम सहित चार दवाएं तो अकेले जुलाई माह में गुणवत्ता जांच में फेल पाई गई हैं।

साल 2023 में पांच दवाएं ही अमानक मिली थीं। उनमें एंटीबायोटिक भी शामिल थीं। एंटीबायोटिक दवाएं संक्रमण खत्म करने के लिए होती हैं। इनके अमानक होने पर संक्रमण कम होने की जगह बढ़ सकता है। सैंपल फेल होने के बाद मप्र पब्लिक हेल्थ सप्लाई कॉर्पोरेशन दवाओं का वितरण रोकने के लिए जिलों के सीएमएचओ और सिविल सर्जन को अलग-अलग तारीख में पत्र लिख चुका है। इसके साथ ही कंपनी से उस दवा की आपूर्ति पर दो से चार वर्ष के लिए रोक लगा दी है। ये दवाएं मेडिकल कॉलेज से संबद्ध अस्पतालों से लेकर, जिला अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तक में मरीजों को निश्शुल्क दी जाती हैं। डॉक्टर बाजार की दवा रोगी को नहीं लिख सकते।

ऐसे होती है सैंपलिंग : हर बैच की दवा का सैंपल जांच के लिए सरकार द्वारा अनुबंधित लैब, केंद्र सरकार या प्रदेश सरकार की लैब में भेजा जाता है। किसी बैच का सैंपल किसी अस्पताल ने भेज दिया तो दूसरे अस्पताल से भेजने की आवश्यकता नहीं होती। लैब का चयन सॉफ्टवेयर अपने आप करता है।

कृषि मंत्री ऐदल सिंह कंषाना का बड़ा ऐलान

मध्यप्रदेश... शून्य ब्याज पर 32 लाख किसानों को मिलेगा फसल ऋण...

23 हजार करोड़ का लक्ष्य निर्धारित किया गया...

शून्य ब्याज पर 32 लाख किसानों को मिलेगा फसल ऋण, कृषि मंत्री कंषाना का बड़ा ऐलान- मध्यप्रदेश के किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री ऐदल सिंह कंषाना ने कहा कि प्रदेश के अन्नदाताओं की मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार मिशन मोड में किसान कल्याण के लिए योजनाओं पर काम कर रही है। इस वर्ष 32 लाख से अधिक किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर फसल ऋण प्रदान किया जा रहा है, जिसमें 23 हजार करोड़ रुपये का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। श्री कंषाना ने कहा कि सरकार किसानों की उपज की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा दे रही है। कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए विभिन्न योजनाएँ लागू की जा रही हैं, जिनमें शून्य प्रतिशत ब्याज पर फसल ऋण योजना प्रमुख है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना और प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत 80 लाख से अधिक किसानों के खातों में राशि अंतरित

की जा रही है। कृषि मंत्री ने बताया कि प्रदेश की सिंचाई क्षमता को बढ़ाने और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है। इस साल 65 लाख हेक्टेयर भूमि को सिंचित करने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और मंडियों के आधुनिकीकरण के लिए योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिससे किसान अपनी उपज को कहीं भी और किसी भी समय बेच सकें। आईटी और एआई तकनीक का उपयोग करके कृषि कार्यों को आसान बनाने की दिशा में भी प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं।

मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों, युवाओं, महिलाओं और गरीबों के सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है। इस वित्तीय वर्ष में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के लिए 66 हजार 605 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है, जबकि मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के लिए 4 हजार 900 करोड़ रुपये का बजट रखा गया है।

पर्यटन में महिलाओं को मिलेगा नया अवसर... 40 हजार से अधिक महिलाएं होंगी प्रशिक्षित

मध्य प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने और रोजगार के अवसरों को सृजित करने के लिए सरकार 40,000 से अधिक महिलाओं को पर्यटन क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जा रहा है। भीड़भाड़ से दूर शांति की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए 50 से अधिक नए ऑफबीट डेस्टिनेशन विकसित किए जा रहे हैं। ये बातें प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति शिव शेखर शुक्ला ने इंडियन एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स (आईएटीओ) के 39वें अधिवेशन के दूसरे दिन के पहले सत्र में कही। प्रमुख सचिव ने बताया कि पर्यटन क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए उन्हें 8 सेक्टर के 48 जॉब रोल्स में प्रशिक्षित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह पहल न केवल महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करेगी बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाएगी। पर्यटन के माध्यम से महिलाओं को समुदाय के साथ जोड़ने के इस प्रयास को सरकार प्राथमिकता दे रही है।

नई पर्यटन स्थलों का विकास : शुक्ला ने बताया कि राज्य में भीड़भाड़ वाले पर्यटन स्थलों को प्रबंधित करने और शांति के लिए नए डेस्टिनेशन विकसित किए जा रहे हैं। इनबाउंड पर्यटन के लिए सही पारिस्थितिकी-तंत्र बनाने पर जोर दिया जा रहा है, जिसमें विभिन्न विभागों के समन्वय

से संसाधनों का उपयोग कर बुनियादी ढांचे का विकास किया जाएगा। सत्र में उत्तर प्रदेश की विशेष सचिव पर्यटन सुश्री ईशा प्रिया और एबरक्रॉम्बी एंड केंट के एमडी विक्रम मधोक ने भी अपने विचार साझा किए। ईशा प्रिया ने उत्तर प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने और इसे मध्यम वर्ग के लिए अनुकूल बनाने के प्रयासों की जानकारी दी। विक्रम मधोक ने महामारी के बाद नए बाजारों में जाने और होमस्टे जैसी योजनाओं के माध्यम से पर्यटन का विस्तार करने पर बल दिया। सम्मेलन में मध्य प्रदेश पर एक विशेष सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें टूरिज्म बोर्ड की अपर प्रबंध संचालक बिदिशा मुखर्जी ने प्रदेश के नैसर्गिक सौंदर्य, प्राचीन इतिहास, संरक्षित धरोहरें, और वन्य-जीवों की विविधता को रेखांकित किया। उन्होंने ट्रेवल एजेंट्स और टूर ऑपरेटर्स को मध्य प्रदेश आने का न्योता देते हुए इसे महिला पर्यटकों, विशेषकर एकल महिला पर्यटकों के लिए सुरक्षित बनाने के प्रयासों पर जोर दिया।

बीआरटीएस व्यावहारिक है या फिर नहीं... हाईकोर्ट की समिति करेगी रिपोर्ट तैयार

इंदौर का बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (बीआरटीएस) वर्तमान परिस्थिति में व्यावहारिक है या नहीं, हाई कोर्ट द्वारा गठित कमेटी इसकी जांच करेगी। कमेटी बीआरटीएस को लेकर शहर की जनता का पक्ष भी जानेगी। इस प्रोजेक्ट को चुनौती देने वाली दो जनहित याचिकाओं में गुरुवार को हाई कोर्ट की युगल पीठ के समक्ष बहस हुई। याचिकाकर्ता ने अपनी बात रखते हुए कहा कि बीआरटीएस पर सरकार फ्लाईओवर बनाने जा रही है। यह सिद्ध करता है कि बीआरटीएस असफल रहा है। अब तक यह तय नहीं है कि बीआरटीएस का मालिक कौन है। इस प्रोजेक्ट का मास्टर प्लान में कोई उल्लेख नहीं है। फ्लाईओवर बनाने के दौरान बीआरटीएस पर बसों का आवागमन बंद रहेगा ऐसी स्थिति में रैलिंग हटाकर इस खत्म कर दिया जाए।

50 हजार यात्री इसका रोज लाभ ले रहे हैं

शासन की ओर से कोर्ट को बताया गया कि इंदौर का बीआरटीएस देश के सफलतम प्रोजेक्ट में से एक है। कोर्ट द्वारा गठित कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में खुद कहा है कि 50 हजार यात्री प्रतिदिन इसका लाभ ले रहे हैं। बीआरटीएस से शहर की जनता को बहुत फायदा हो रहा है। फ्लाईओवर निर्माण के दौरान भी यातायात जारी रहेगा। करीब दो घंटे चली सुनवाई के दौरान दोनों पक्षकारों को सुनने के बाद कोर्ट ने कहा कि कोर्ट द्वारा गठित समिति की रिपोर्ट 10 वर्ष पुरानी है। हमें यह देखना होगा कि वर्तमान में बीआरटीएस की व्यवहारिकता कितनी है। हम कमेटी गठित करने के संबंध में आदेश जारी करेंगे। कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई तय करेंगे। कमेटी शहर की जनता का पक्ष भी जानें कि वे बीआरटीएस चाहते भी हैं या नहीं। 10 वर्ष में बहुत बदलाव हो चुका है। रिंग रोड और बायपास बन गए हैं।

प्रोजेक्ट को लेकर हाईकोर्ट में दो याचिकाएं चल रही हैं

बीआरटीएस प्रोजेक्ट को लेकर हाई कोर्ट में दो जनहित याचिकाएं चल रही हैं। दोनों ही में याचिकाकर्ता किशोर कोडवानी हैं। इन याचिकाओं में 32 बिंदुओं के माध्यम से बीआरटीएस प्रोजेक्ट को चुनौती दी गई है। कहा है कि शहर की दो प्रतिशत जनता के लिए सरकार ने 48 प्रतिशत सड़क पर बीआरटीएस बना रखा है। यह आम आदमी के समानता के अधिकार का हनन है। इस प्रोजेक्ट की वजह से जितने लोगों को फायदा पहुंच रहा है उससे कहीं ज्यादा लोग इसका नुकसान उठा रहे हैं।

केंद्र ने आरक्षण पर अपना रुख स्पष्ट कर दिया है, विपक्ष राजनीति कर रहा है : कुलस्ते

पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा के प्रमुख आदिवासी नेता फग्गन सिंह कुलस्ते ने बुधवार को विपक्ष पर अनुसूचित जातियों के भीतर उप-वर्गीकरण के बारे में उच्चतम न्यायालय के फैसले का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया और कहा कि केंद्र ने इस पर अपना रुख पहले ही स्पष्ट कर दिया है। मध्यप्रदेश की मंडला (एसटी) लोकसभा सीट से सांसद कुलस्ते ने कहा, न्यायाधीशों ने अपनी राय दी है। मैं व्यक्तिगत रूप से 60-70 सांसदों के साथ इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिला था। प्रधानमंत्री ने हमें बताया कि एससी और एसटी के बीच क्रीमी लेयर प्रावधान (उप-वर्गीकरण) लागू नहीं किया जाएगा।

उन्होंने यहां संवाददाताओं से कहा कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भी फैसला किया है कि शीर्ष अदालत की राय को लागू नहीं किया जाएगा। कुलस्ते ने कहा, सरकार की इतनी स्पष्टता और निर्णय के बावजूद, लोगों ने भारत बंद का आह्वान किया है... वे राजनीति कर रहे हैं। कांग्रेस ने एससी और एसटी के नाम पर राजनीति की और मायावती (बसपा प्रमुख) भी यही कर रही हैं।'' उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी आरक्षण की रक्षा की थी। उन्होंने कहा, न्यायाधीशों की राय हो सकती है, लेकिन इस मुद्दे पर सरकार का रुख स्पष्ट है कि इसे लागू नहीं किया जाएगा। देश भर के इक्कीस संगठनों ने आरक्षण पर उच्चतम न्यायालय के एक अगस्त के फैसले के खिलाफ बुधवार को भारत बंद का आह्वान किया है।

संगठनों ने फैसले का विरोध करते हुए कहा है कि इससे आरक्षण के मूल सिद्धांतों को नुकसान पहुंचेगा। उच्चतम न्यायालय ने एक अगस्त को कहा था कि राज्यों को अनुसूचित जाति (एससी) के भीतर उप-वर्गीकरण करने का संवैधानिक अधिकार है, जो सामाजिक रूप से विषम वर्ग है, ताकि उन जातियों के उत्थान के लिए आरक्षण दिया जा सके जो सामाजिक और शैक्षणिक रूप से अधिक पिछड़ी हैं। हालांकि, शीर्ष अदालत ने यह स्पष्ट कर दिया कि राज्यों को पिछड़ेपन और सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व के "मात्रात्मक और प्रदर्शन योग्य आंकड़ों" के आधार पर उप-वर्गीकरण करना होगा, न कि "सनक" और "राजनीतिक लाभ" के आधार पर।

सीएम डॉ. मोहन यादव ने गुलावट, जानापाव और उज्जैन को विकसति करने के निर्देश दिए

जानापाव, गुलावट व उज्जैनी में मिलेंगी विशेष सुविधाएं, बनेगा मास्टर प्लान

भगवान परशुराम की जन्मस्थली जानापाव, शिप्रा के उद्गम स्थल उज्जैनी और गुलावट के विकास का मास्टर प्लान बनेगा। तीनों स्थानों के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए सुविधाएं जुटाई जाएंगी। इन्हें पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए जल्द ही कार्ययोजना बनाकर प्रस्तुत की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर इंदौर जिले के तीन प्रमुख स्थानों जानापाव, उज्जैनी और गुलावट का संपूर्ण विकास किया जाएगा। यहां मास्टर प्लान बनाकर संपूर्ण सुविधाएं जुटाई जाएंगी। शुक्रवार को कलेक्टर कार्यालय में तीनों स्थानों के विकास का प्रस्ताव तैयार करने को लेकर बैठक आयोजित हुई। कलेक्टर आशीष सिंह ने जिला पंचायत के अधिकारियों को तीनों स्थानों के विकास की कार्ययोजना बनाकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा जल्द ही मास्टर प्लान का प्रस्ताव तैयार किया जाएगा। विकास की कार्ययोजना को जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के साथ विचार विमर्श के बाद अंतिम रूप दिया जाएगा। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सिद्धार्थ जैन, अपर कलेक्टर गौरव बैनल सहित संबंधित विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

पहले भी हुए हैं ये काम

जानापाव, उज्जैनी, गुलावट में कई विकास कार्य पहले किए जा चुके हैं। गुलावट में तो सांसद शंकर लालवानी द्वारा भी विकास की योजना बनाई गई थी। उन्होंने इंदौर से गुलावट तक बस चलाने की बात भी कही थी, लेकिन इस पर अमल नहीं हो सका। गुलावट प्री-वेडिंग फोटोशूट के लिए काफी फेमस है। अब तीनों स्थानों को पर्यटन और धार्मिक रूप से विकसित करने के लिए मास्टर प्लान बनाकर कार्य किए जाएंगे।

देश में कुछ लोग अंग्रेजों का प्रतिनिधित्व कर रहे, हिंदू को मजबूत करना होगा

देश में गृहयुद्ध की स्थिति : कैलाश विजयवर्गीय

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का एक बयान सामने आया है। मंत्री विजयवर्गीय ने एक सामाजिक समरसता कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मैं कुछ दिन पहले एक मिलिट्री के रिटायर ऑफिसर के साथ बैठा था, उन्होंने कहा की 30 साल बाद देश के अंदर गृह युद्ध प्रारंभ हो जाएगा। जिस प्रकार से हमारे देश की डेमोग्राफी बदल रही है उस पर हमें विचार करना चाहिए। हिंदू शब्द कैसे मजबूत हो इसके लिए हमें काम करना होगा। होली, दीपावली, राखी, भगवान परशुराम, महाराणा प्रताप हम सब के हैं। महाराणा प्रताप ने हिंदू समाज को बचाने के लिए मुगलों के सामने संघर्ष किया। देश के त्योहार सभी धर्म के त्योहार है, हमे हमारी सोच बदलना होगी। दरअसल विजयवर्गीय सामाजिक समरसता कार्यक्रम के दौरान हिंदू समाज और त्योहारों की चर्चा के दौरान बोल रहे थे। मंत्री कैलाश

विजयवर्गीय ने रविवार को इंदौर में कहा हम देश के लिए राजनीति करते हैं। जब देश आगे बढ़ेगा तो 140 करोड़ लोग आगे बढ़ेंगे। पर कुछ लोग जाति के आधार पर हिंदू समाज को बाटना चाहते हैं।

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने इंदौर में कहा हम देश के लिए राजनीति करते हैं। जब देश आगे बढ़ेगा तो 140 करोड़ लोग आगे बढ़ेंगे। पर कुछ लोग जाति के आधार पर हिंदू समाज को बाटना चाहते हैं।

देश में कुछ लोग अंग्रेजों का प्रतिनिधित्व कर रहे : विजयवर्गीय ने आगे कहा कि अंग्रेजों ने एक ही काम किया है फूट डालो और राज करो। अंग्रेज चले गए लेकिन देश में कुछ लोग ऐसे है जो अंग्रेजों का प्रतिनिधित्व करते हैं और फूट डालो और राज करो की नीति पर काम करते हैं। वो भी सिर्फ कुर्सी के लिए। उनको कुर्सी चाहिए।

आज के समय पर कुछ लोग समाज को जाति के आधार पर बांट रहे हैं। देश ताकतवर बने इसके लिए समाज को ताकतवर बनाना जरूरी है। समाज ताकतवर बने इसके लिए जातिवाद के बंधन से मुक्त होना पड़ेगा।

इस बार लंबा चलने वाला है...

सर्दी का सीजन

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक इस बार ला नीनो की सक्रियता का असर न सिर्फ मानसून पर पड़ रहा है बल्कि इसके बाद आने वाली सर्दी के सीजन पर भी इसका सीधा असर देखने को मिलेगा...

बीते कुछ वर्षों से सर्दी के सीजन की शुरुआत सामान्य महीनों की तुलना में देरी से शुरू होती आई है, लेकिन इस बार बन रही मौसम की परिस्थितियों के चलते सर्दी की आमद जल्द होने वाली है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुमान के मुताबिक जिस तरीके से ला नीनो ने अपनी उपस्थिति के 90 दिनों के बाद सक्रियता दिखानी शुरू की है उससे ऐसे ही हालात बन रहे हैं। अनुमान यही लगाया जा रहा है कि इस बार मानसून की विदाई अपने वक्त से तकरीबन दो सप्ताह बाद हो सकती है। इसी के साथ सर्दी की आहट भी बीते कुछ वर्षों की तुलना में पहले आने का पूरा अनुमान है। फिलहाल मौसम विभाग के वैज्ञानिकों की माने तो जाते हुए मानसून की अभी भी सक्रियता बनी हुई है। यह सक्रियता सितंबर के अंत तक चलने वाली है।

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक इस बार ला नीनो की सक्रियता का असर न सिर्फ मानसून पर पड़ रहा है बल्कि इसके बाद आने वाली सर्दी के सीजन पर भी इसका सीधा असर देखने को मिलेगा। दिल्ली विश्वविद्यालय में एनवायरमेंटल साइंस के प्रवक्ता डॉ एके सिंह कहते हैं कि एल नीनो के असर के बाद ला नीनो की सक्रियता में तकरीबन साठ से 90 दिन का वक्त लगता है। उनका कहना है कि यह 90 दिन का वक्त जुलाई के अंत से अगस्तकी शुरुआत में पूरा हो चुका है। यही वजह है कि मानसून की विदाई के कुछ वक्त पहले से इसकी सक्रियता बढ़ गई है। बीते एक सप्ताह से उत्तर भारत समेत मध्य भारत और पश्चिमी उत्तर भारत के हिस्सों में जिस तरीके से बारिश हो रही है उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि मानसून की सक्रियता कितनी ज्यादा है। वह कहते हैं कि अनुमान यही लगाया जा रहा है कि ला नीनो की सक्रियता के चलते इस बार सर्दी की आमद भी पहले हो जाएगी और उसका स्पेल भी लंबा होगा।

मौसम विभाग की मुताबिक बीते सोमवार से जिस तरीके से मानसून की सक्रियता बनी हुई है वह इस सप्ताह भी बनी रहेगी। मौसम विभाग के प्रवक्ता डॉ राजेंद्र कहते हैं कि जिस तरीके की परिस्थितियां बन रही है उससे इस हफ्ते के अंत तक देश के अलग-अलग हिस्सों में खासतौर से उत्तर भारत और मध्य भारत समेत उत्तर पश्चिम के हिस्सों में बारिश होती रहेगी। मौसम विभाग के मुताबिक अगले पांच दिनों के भीतर देश की राजधानी दिल्ली समेत एनसीआर और पंजाब हरियाणा मध्य प्रदेश समेत उत्तर प्रदेश और पश्चिमी राजस्थान के हिस्सों में बारिश होगी। इन इलाकों में लगातार कम दबाव का क्षेत्र बनता जा रहा है। जिसके चलते बारिश कहीं तेज तो कहीं छिटपुट तरीके से लगातार होती जा रही है। मौसम विभाग के अनुमान के मुताबिक फिलहाल सितंबर के अंत तक हवाओं में कम दबाव का असर देश के अलग-अलग हिस्सों में बना रह सकता है। जिसके चलते मानसून की विदाई भी देर से होने की संभावनाएं बन रही हैं।और सितंबर के अंत से लेकर अक्टूबर के शुरुआत तक बारिशों का दौर बना रह सकता है।

मौसम वैज्ञानिक डॉ आलोक सिंह कहते हैं कि जिस तरीके की परिस्थितियां अभी बन रही है उसे अनुमान लगाया जा रहा है कि सर्दियों का सीजन इस बार अक्टूबर से लेकर जनवरी तक का रहेगा। डॉक्टर सिंह कहते हैं कि सर्दियों का सीजन तो यही होता था लेकिन बीते कुछ वर्षों में क्लाइमेट चेंज के चलते सर्दियों के सीजन में तापमान बहुत ज्यादा दिनों के लिए नीचे नहीं गिरता था। अमूमन दिसंबर और जनवरी के महीने में ही तापमान में गिरावट दर्ज की जाती रही है। लेकिन इस बार ला नीनो की सक्रियता के चलते अनुमान लगाया जा रहा है कि सर्दी के सीजन की आमद अक्टूबर से शुरू हो सकती है। चूंकि ला नीनो का इफेक्ट लंबे समय तक बना रहेगा इसलिए 4 महीनो की सर्दी के पूरे सीजन में इस बार कड़ाके की ठंड पड़ सकती है।

इसके अलावा अनुमान इस बात का भी लगाया जा रहा है कि पहाड़ों पर इस बार बर्फबारी भी ला नीनो के इफेक्ट के चलते ज्यादा हो सकती है। हालांकि मौसम विभाग का कहना है कि अभी सर्दी को लेकर उनका कोई स्पष्ट आंकलन नहीं किया जा रहा है। मौसम विभाग के प्रवक्ता डॉ राजेंद्र कहते हैं उनका विभाग फिलहाल अगले 10 दिनों के मौसम की अपडेट दे रहा है। हालांकि आने वाले सीजन को लेकर विभाग की अपनी ऑब्जरवेशन हैं। लेकिन अभी विभाग की ओर से सर्दियों को लेकर कोई आधिकारिक जानकारी साझा नहीं की जा रही है।

मोहन सरकार के दो निर्णयों की यूनिसेफ़ ने भी की सराहना....

विगत सप्ताह मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्राओं के सम्मान व उनसे संवाद के एक कार्यक्रम में समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रदेश की उन्नीस लाख छात्राओं के खाते में सत्तावन करोड़ अट्ठारह लाख रू. की राशि सैनिटरी नैपकिन हेतु ट्रांसफ़र कर दी थी।

पिछले दिनों में मप्र की मोहन यादव सरकार ने दो निर्णय लिए हैं और दोनों ही से वे अपार लोकप्रियता प्राप्त करने जा रहे हैं। प्रदेश की किशोरी छात्राओं हेतु लिए गए एक निर्णय की तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा व प्रसंशा हो रही है। एक निर्णय की अंतर्राष्ट्रीय एक योजना जहां प्रदेश के किसानों हेतु शुभसमाचार है वहीं दूसरी योजना प्रदेश की स्कूली बालिकाओं के लिए प्रसन्न कर देने वाली है। बालिकाओं को निःशुल्क सैनिटरी पेड देने वाली इस योजना की प्रशंसा संयुक्त राष्ट्र संघ, के संगठन यूनिसेफ़ ने भी मुक्त कंठ से की है। देश के कुछ प्रदेशों में छात्राओं को निःशुल्क सैनिटरी नैपकिन दिये जाते रहे हैं किंतु इस संदर्भ में बालिकाओं को नगद राशि देने वाला प्रथम राज्य मप्र बन गया है। इस प्रकार नगद राशि से बालिकाऐं अपनी पसंद व आवश्यकतानुसार सामग्री स्वयं क्रय सकेंगी। मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव की सैनिटेशन एवं हाईजीन योजना को यूनिसेफ़ ने एक उत्कृष्ट योजना बताया है। यूनिसेफ़ ने एक्स (ट्विटर) पर अपने एकाउंट में लिखा कि यह एक अनूठा नवाचार है और प्रसंशा करते हुए इस योजना को शुभकामनाएँ दे है। डॉ. मोहन यादव ने भी अपने X अकाउंट पर UNICEF को इस योजना की प्रसंशा करने हेतु धन्यवाद देते हुए कहा है- "मध्य प्रदेश के किशोरों और बच्चों के लिए काम करने की हमारी प्रतिबद्धता को विश्व स्तर पर मान्यता देने के लिए @UNICEFIndia को हार्दिक धन्यवाद।

विगत सप्ताह मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्राओं के सम्मान व उनसे संवाद के एक कार्यक्रम में समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रदेश की उन्नीस लाख छात्राओं के खाते में सत्तावन करोड़ अट्ठारह लाख रू. की राशि सैनिटरी नैपकिन हेतु ट्रांसफ़र कर दी थी। यह राशि कक्षा सातवीं से बारहवीं तक की छात्राओं को दी जाएगी जिससे वे स्वयं नैपकिन क्रय कर सकेंगी। इस योजना से उन्हें एक वर्ष हेतु तीन सौ रु. मिलेंगे। इस योजना के अंतर्गत समग्र शिक्षा अभियान में विद्यालयों व महाविद्यालयों की छात्राओं को मासिक धर्म के समय स्वच्छता की महत्व और महत्व को भी बताया जाना है। प्रदेश में पूर्व से ही महिला एवं बाल विकास की एक उदिता योजना भी कार्यरत है जिसमें अट्ठारह से उन पचास आयु वर्ग की महिलाओं आंगनवाड़ी के कार्यकर्ताओं द्वारा लाभ दिया जाता है।

चर्चा में आई कृषक व श्रीअन्न आधारित दूसरी योजना भी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय होने जा रही है। मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के किसानों हेतु रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना लागू की है। कृषक जगत हेतु महत्वपूर्ण इस योजना में श्रीअन्न जैसे कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा, कंगनी, सांवा आदि को उपजाने वाले कृषक बंधुओं को प्रति किलो 10 रुपये दिए जाएंगे। कृषकों को दस रू. प्रति किलोग्राम दस रुपये देने की योजना जहां देश के लिए बड़ी मात्रा में श्रीअन्न उपजाने हेतु

प्रेरणा व आर्थिक संबल देगी वहीं कृषकों, विशेषतः जनजातीय कृषकों हेतु वरदान सिद्ध हो सकती है। हमारे प्रदेश के जनजातीय पूर्व से ही इन मोटे अनाजों को उपजाते व खाते रहें हैं किंतु अब इस योजना से वे श्रीअन्न का उत्पादन बढ़ायेंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भारत की पहल पर वर्ष 2023 को श्रीअन्न वर्ष घोषित किया था। प्रधानमंत्री जी, नरेंद्र मोदी भी श्रीअन्न को अपने भाषणों व कथनों में स्थान देते रहते हैं जिससे देश में मोटा अनाज खाने का एक सुदृढ़ वातावरण बन गया है। इस स्थिति में इन अनाजों हेतु बाज़ार बढ़ना ही है। अब इस योजना से मप्र के कृषक विशेषतः जनजातीय कृषक विषे तौर पर लाभान्वित होंगे।

कृषकों को उनकी प्रोत्साहन राशि सीधे उनके खाते में अंतरित की जाएगी। ये अनाज प्रमुख रूप से मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, शहडोल, अनूपपुर, बैतूल, छिंदवाड़ा, सीधी और सिंगरौली जैसे जनजातीय बहुल जिलों में उगाए जाते हैं। प्रदेश में मोटे अनाजों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन पर केंद्रित एक सम्मेलन का आयोजन भी पूर्व में हो चुका है। प्रदेश के डिंडोरी जिले में श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान केंद्र के निर्माण की भी घोषणा हो चुकी है। यद्दपि वर्तमान में मप्र, देश के मोटे अनाज के उत्पादन में केवल 3.5 प्रतिशत का योगदान देता है वहीं राजस्थान में देश का 33 प्रतिशत व कर्नाटक में 23 प्रतिशत रकबे में इसकी कृषि की जाती है। मोटे अनाज स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यधिक उपयोगी व लाभप्रद होते हैं। इनमें खनिज, मिनरल्स व प्रोटीन्स की मात्रा अत्यधिक होती है। इन सभी गुणों के कारण श्रीअन्न को कई बीमारियों के निदान हेतु भी उपयोग किया जाने लगा है।

वर्तमान समय में मप्र में छः लाख बीस हजार हेक्टेयर भूमि पर मोटा अनाज उत्पादित किया जा रहा है जबकि वर्ष 2021-22 में यह पांच लाख पचपन हजार हेक्टेयर पर ही श्रीअन्न उपजाया जाता था। मप्र देश में मोटे अनाजों के उत्पादन में पाँचवें न. पर है। वर्ष 2023-24 में प्रदेश में 12.68 लाख टन मोटे अनाजों का उत्पादन हुआ, जो 2019-20 में 8.96 लाख टन था। प्रदेश में सबसे अधिक लगभग 60 प्रतिशत बाजरा उगाया जा रहा है।

प्रदेश के कृषकों को दस रुपये प्रति किलोग्राम की प्रोत्साहन राशि व शालेय किशोरियों को सैनिटरी नैपकिन देने की योजना से निश्चित ही मप्र की मोहन सरकार देश भर में अग्रणीं होने जा रही है।

- मप्र के महाकोशल के मंडला, डिंडोरी, बालाघाट आदि जिलों में श्रीअन्न का ज्यादा उत्पादन होता है।
- उत्पादन क्षेत्र नहीं बढ़ने की बड़ी वजह यह भी है कि प्रदेश में इसकी बड़ी खाद्य प्रसंस्करण इकाई नहीं हैं।
- देशभर में कुल खाद्यान्न उत्पादन के 10 प्रतिशत हिस्से में मोटा अनाज उगाया जा रहा है।
- राजस्थान में सर्वाधिक 33 और कर्नाटक में कुल खाद्यान्न 23 प्रतिशत क्षेत्र में श्रीअन्न का उत्पादन किया मप्र के महाकोशल के मंडला, डिंडोरी, बालाघाट आदि जिलों में श्रीअन्न का ज्यादा उत्पादन होता है।
- उत्पादन क्षेत्र नहीं बढ़ने की बड़ी वजह यह भी है कि प्रदेश में इसकी बड़ी खाद्य प्रसंस्करण इकाई नहीं हैं।
- देशभर में कुल खाद्यान्न उत्पादन के 10 प्रतिशत हिस्से में मोटा अनाज उगाया जा रहा है।
- राजस्थान में सर्वाधिक 33 और कर्नाटक में कुल खाद्यान्न 23 प्रतिशत क्षेत्र में श्रीअन्न का उत्पादन किया जा रहा है। ऐसी ही प्रोत्साहन योजनाओं व कृषकोंको मिल रही नियोजित मार्केटिंग की योजनाओं व अच्छे मूल्यों के प्राप्त होने के चलते ही मप्र में जहां वर्ष 2019-20 में आठ लाख छ्यानवे हज़ार मेट्रिक टन का उत्पादन होता था वहीं 2023-24 में मोटे अनाज का यह उत्पादन बारह लाख अड़सठ हज़ार टन का हो गया है।

पतंजलि के मंजन में मछली का अर्क...? अब बुरे फंसे बाबा रामदेव

सामग्री की सूची स्पष्ट रूप से दिखाती है कि टूथ पाउडर में सेपिया ऑफिसिनैलिस है। याचिकाकर्ता का तर्क है कि यह गलत ब्रांडिंग है और ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट का उल्लंघन है। शर्मा ने कहा कि यह खोज उनके और उनके परिवार के लिए विशेष रूप से परेशान करने वाली है। वे धार्मिक मान्यताओं की वजह से मांसाहारी सामग्री के सेवन से परहेज रखते हैं।

योग गुरु बाबा रामदेव के लिए नई कानूनी मुसीबत सामने आ गई है। उनके पतंजलि आयुर्वेद के खिलाफ दिल्ली उच्च हाई कोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि ब्रांड के हर्बल टूथ पाउडर 'दिव्य मंजन', में मांसाहारी तत्व शामिल हैं। याचिकाकर्ता का दावा है कि शाकाहारी और पौधे-आधारित आयुर्वेदिक उत्पाद के रूप में प्रचार के कारण 'दिव्य मंजन' का लंबे समय से उपयोग किया जा रहा है। हालाँकि, हाल के शोध से पता चला है कि उत्पाद में मछली के अर्क से प्राप्त समुद्रफेन (सेपिया ऑफिसिनैलिस) होता है। वकील यतिन शर्मा द्वारा दायर याचिका में आरोप लगाया गया है कि पतंजलि के दिव्य मंजन की पैकेजिंग में शाकाहारी उत्पादों को दर्शाने वाला ग्रीन कलर मार्क नजर आता है। फिर भी सामग्री की सूची स्पष्ट रूप से दिखाती है कि टूथ पाउडर में सेपिया ऑफिसिनैलिस है। याचिकाकर्ता का तर्क है कि यह गलत ब्रांडिंग है और ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट का उल्लंघन है। शर्मा ने कहा कि यह खोज उनके और उनके परिवार के लिए विशेष रूप से परेशान करने वाली है। वे धार्मिक मान्यताओं की वजह से मांसाहारी सामग्री के सेवन से परहेज रखते हैं। याचिकाकर्ता का यह भी आरोप है कि रामदेव ने खुद एक यूट्यूब वीडियो में स्वीकार किया था कि समुद्रफेन एक पशु-आधारित उत्पाद है जिसका इस्तेमाल 'दिव्य मंजन' में किया जाता है। दिल्ली पुलिस, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI), केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन और आयुष मंत्रालय सहित विभिन्न सरकारी एजेंसियों के पास शिकायत दर्ज करने के बावजूद, याचिकाकर्ता का कहना है कि अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। याचिका में उत्पाद की कथित गलत लेबलिंग को संबोधित करने और उत्तरदाताओं को जवाबदेह ठहराने के लिए न्यायिक हस्तक्षेप की मांग की गई है। याचिकाकर्ता मांसाहारी उत्पाद के अनजाने सेवन से हुई परेशानी के लिए मुआवजे की भी मांग कर रहा है।

याचिका पर सुनवाई के बाद दिल्ली हाई कोर्ट ने पतंजलि आयुर्वेद, बाबा रामदेव, केंद्र सरकार और उत्पाद बनाने वाली पतंजलि की दिव्य फार्मेसी को नोटिस जारी किया। अगली सुनवाई 28 नवंबर को होनी है। पतंजलि और इसके सह-संस्थापकों बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण को पहले सुप्रीम कोर्ट ने भ्रामक विज्ञापन प्रथाओं में शामिल होने के लिए दोषी ठहराया था। शीर्ष अदालत ने उन्हें अपने आयुर्वेदिक उत्पादों के सभी भ्रामक विज्ञापन हटाने और जनता से माफी मांगने का निर्देश दिया था।

हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की ग्वालियर संभाग डीआईजी श्री अमित सांघी जी से विशेष चर्चा।

हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की देवास कलेक्टर ऋषभ गुप्ता से विशेष चर्चा।

संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की राजेश कुमार त्रिपाठी (भा.पु.से) पुलिस उपायुक्त (अपराध) नगरीय पुलिस. इंदौर से विशेष चर्चा

देवास कलेक्टर ऋषभ गुप्ता जी और टीम हमारा देश हमारा अभिमान।

हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की इंदौर ईओडब्ल्यू एसपी रामेश्वर यादव जी से विशेष चर्चा

पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की सेनानी दूसरी वाहिनी, ग्वालियर एवं प्रभारी एसपी ग्वालियर राकेश सगर जी से की मुलाकात।

पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदी ने की सेनानी दूसरी वाहिनी, ग्वालियर एवं प्रभारी एसपी ग्वालियर राकेश सगर जी से की विशेष चर्चा।

बिजनेस मैन मनीष पांडे दादा साहब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित हुए

मध्यप्रदेश के कर्मठ और सजग बिजनेस मैन मनीष पांडे को दादा साहब फाल्के अचीवमेंट लाइफ स्टाइल अवॉर्ड से कुशल बिजनेस मैन के लिए सम्मानित किया गया। इंदौर के फाइव स्टार होटल में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में उन्हें कुशल बिजनेस के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यशैली और बेहतरीन कार्य के लिए अवॉर्ड दिया गया। देश के विभिन्न क्षेत्रों से उनके सभी मित्रों और शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई प्रेषित की है।

पत्रकार मनोज चतुर्वेदी दादा साहब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित हुए

मध्यप्रदेश के कर्मठ और सजग पत्रकार मनोज चतुर्वेदी को दादा साहब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इंदौर के फाइव स्टार होटल में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यशैली और बेहतरीन रिपोर्टिंग के लिए अवॉर्ड दिया गया। देश के विभिन्न क्षेत्रों से उनके सभी मित्रों और शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई प्रेषित की है।

पूर्णिमा श्राद्ध

इस दिन मंत्रदृष्टा ऋषि मुनि अगस्त्य का तर्पण किया जाता है

श्राद्ध पूजा दोपहर के समय शुरू करनी चाहिए। योग्य ब्राह्मण की सहायता से मंत्रोच्चारण करें और पूजा के पश्चात जल से तर्पण करें। इसके बाद जो भोग लगाया जा रहा है उसमें से गाय, कुत्ते, कौवे आदि का हिस्सा अलग कर देना चाहिए।

कैसे करें पूर्णिमा का श्राद्ध कर्मः आज पूनम होने के लिहाज से दूध में पकाए हुए चावल में शक्कर एवं सुगंधित द्रव्य जैसे इलायची, केसर और शहद मिलाकर खीर तैयार कर लें। गाय के गोबर के कंडे को जलाकर पूर्ण प्रज्वलित कर लें। उक्त प्रज्वलित कंडे को शुद्ध स्थान में किसी बर्तन में रखकर, खीर से तीन आहुति दें। भोजन में से सर्वप्रथम गाय, काले कुत्ते और कौए के लिए ग्रास अलग से निकालकर उन्हें खिला दें। इसके पश्चात ब्राह्मण को भोजन कराएं फिर स्वयं भोजन ग्रहण करें। पश्चात ब्राह्मणों को यथायोग्य दक्षिणा दें। गाय, काला कुत्ता, कौआ, यह सब करते हुआ याद रखे आप का मुख दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए साथ ही जनेऊ (यज्ञोपवित) सव्य (बाई तरह यानि दाहिने कंधे से लेकर बाई तरफ होना चाहिए।

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ

शास्त्रों में ऐसा वर्णित है की जो व्यक्ति विधिपूर्वक शांत चित्त होकर श्रद्धा के साथ श्राद्ध कर्म करते हैं, वह सर्व पापों से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं। उनका संसार में चक्र छूट जाता है। 'श्राद्धकल्पता' अनुसार पितरों के उद्देश्य से श्रद्धा एवं आस्तिकतापूर्वक पदार्थ-त्याग का दूसरा नाम ही श्राद्ध है। ब्रह्म पुराण में कहा गया है कि 'देशे काले च पात्रे च श्राद्धया विधिना चयेत। पितृनुद्दश्य विप्रेभ्यो दत्रं श्राद्धमुद्राहतम॥'

क्यों करें श्राद्धः सनातन धर्म में मृत पूर्वजों को पितृ कहा गया है। शास्त्रानुसार पितृ अत्यंत दयालु तथा कृपालु होते हैं, वह अपने पुत्र-पौत्रों से पिण्डदान तथा तर्पण की आकांक्षा रखते हैं। श्राद्ध तर्पण आदि द्वारा पितृ को बहुत प्रसन्नता एवं संतुष्टि मिलती है। पितृगण प्रसन्न होकर दीर्घ आयु, संतान सुख, धन-धान्य, विद्या, राजसुख, यश-कीर्ति, पुष्टि, शक्ति, स्वर्ग एवं मोक्ष तक प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म में पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए अपने माता-पिता व परिवार के मृतकों के निमित श्राद्ध करने की अनिवार्यता प्रतिपादित की गई है। श्राद्ध कर्म को पितृकर्म भी कहा गया है व पितृकर्म से तात्पर्य पितृपूजा भी है।

श्राद्धपक्ष का ज्योतिष महत्वः हर वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा तिथि से आश्विन माह की अमावस्या तिथि तक 15 दिन श्राद्ध कर्म किए जाते हैं। आज पूर्णिमा का श्राद्ध है। अतः पूर्णिमा का श्राद्ध ठीक मध्यान के समय करना उचित है।

पितृपक्ष के नियम और कर्म

पितृपक्ष में हम अपने पितरों को नियमित रूप से जल अर्पित करते हैं। यह जल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके दोपहर के समय दिया जाता है। जल में काला तिल मिलाया जाता है और हाथ में कुश रखा जाता है. पितृपक्ष में जिस दिन पूर्वज के देहांत की तिथि होती है, उस दिन अन्न और वस्त्र का दान किया जाता है और उसी तिथि को किसी निर्धन या ब्राह्मण को भोजन भी कराया जाता है. इसके बाद पितृपक्ष के कर्मों का समापन हो जाता है।

पूर्णिमा के श्राद्ध की 5 खास बातें

हिन्दू पंचांग के अनुसार इस बार पितृ पक्ष यानी श्राद्ध महालय भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि से आरंभ हो गए हैं। धार्मिक शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध पक्ष भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक यानी कुल 16 दिनों तक चलता है। इसमें श्राद्ध का पहला दिन और आखिरी दिन बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। आओ जानते हैं पूर्णिमा के श्राद्ध की 5 खास बातें।

1. पूर्णिमा के श्राद्ध को ऋषि तर्पण भी कहा जाता है। इस दिन मंत्रदृष्टा ऋषि मुनि अगस्त्य का तर्पण किया जाता है। इन्होंने ऋषि मुनियों की रक्षा के लिए समुद्र को पी लिया था और दो असुरों को खा गए थे। इसी के सम्मान में श्राद्ध पक्ष की पूर्णिमा तिथि को इनका तर्पण करके ही पितृ पक्ष की शुरुआत की जाती है।

2. जिनकी मृत्यु पूर्णिमा को हुई है उनका श्राद्ध पूर्णिमा को करते हैं। इनका श्राद्ध केवल भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा अथवा आश्विन कृष्ण अमावस्या को किया जाता है। हालांकि कहते हैं कि यदि किसी महिला का निधन पूर्णिमा तिथि को हुआ है तो उनका श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी या पितृमोक्ष अमावस्या के दिन भी किया जा सकता है।

3. पूर्णिमा श्राद्ध को प्रोष्ठपदी पूर्णिमा भी कहा जाता हैं। इस दिन सत्यनारायण की कथा का आयोजन करके अधिक से अधिक प्रसाद वितरण करना चाहिए।

4. उमा-महेश्वर का पूजन और व्रत किया जाता है। यह व्रत सभी कष्टों को दूर करके जीवन में सुख-समृद्धि लाता है

5. इस दिन पंचबलि कर्म अर्थात गाय, कौवे, कुत्ते, चींटी और देवताओं को अन्न जल अर्पित करना चाहिए। ब्राह्मण भोज कराना चाहिए। इस दिन यथाशक्ति दान दक्षिणा देना चाहिए। यह नहीं कर सकते हो तो नदी में संध्या के समय दीपदान करना चाहिए।

भाद्रपद पूर्णिमा का महत्व?

- भगवान विष्णु के सत्यनारायण रूप की पूजा की जाती है।
- इसी दिन उमा महेश्वर व्रत भी रखा जाता है।
- यह पूर्णिमा इसलिए भी महत्व रखती है क्योंकि इसी दिन से पितृपक्ष यानि श्राद्ध प्रारंभ होते हैं।
- यह व्रत खास तौर से महिलाएं रखती है।
- यह व्रत करने से जहां संतान बुद्धिमान होती है, वहीं यह व्रत सौभाग्य देने वाला भी माना जाता है।

प्रतिपदा श्राद्ध

नाना-नानी का अंतिम संस्कार करने वालों के लिए आदर्श

श्राद्ध पूजा दोपहर के समय शुरू करनी चाहिए। योग्य ब्राह्मण की सहायता से मंत्रोच्चारण करें और पूजा के पश्चात जल से तर्पण करें। इसके बाद जो भोग लगाया जा रहा है उसमें से गाय, कुत्ते, कौवे आदि का हिस्सा अलग कर देना चाहिए।

प्रतिपदा श्राद्ध को पड़वा श्राद्ध के नाम से भी जाना जाता है । प्रतिपदा श्राद्ध उन आत्माओं के लिए किया जाता है जिनकी मृत्यु हिंदू कैलेंडर की प्रतिपदा तिथि या प्रतिपदा तिथि को हुई हो। मृतक की मृत्यु किसी भी पखवाड़े यानी शुक्ल पक्ष या कृष्ण पक्ष में हुई हो सकती है। प्रतिपदा श्राद्ध तिथि उन लोगों के लिए भी आदर्श है जो अपने नाना-नानी का अंतिम संस्कार करना चाहते हैं। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू होकर सर्वपितृ अमावस्या तक के समय को पितृपक्ष या श्राद्ध पक्ष कहा जाता है. इस साल पितृ पक्ष की पूर्णिमा तिथि का प्रारंभ 17 सितंबर से हो चुका है परंतु श्राद्ध की प्रतिपदा तिथि को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है जिस चलते पहला श्राद्ध 18 सितंबर, बुधवार से माना जा रहा है. जानिए पहले श्राद्ध पर किस तरह किया जा सकता है पितरों का तर्पण। हिंदुओं में, परम्परागत रूप से श्राद्ध केवल बेटों द्वारा किया जाता है, बेटियों द्वारा नहीं, लेकिन बेटी के बेटे को अपनी मां के माता-पिता यानी नाना-नानी का अंतिम संस्कार करने की अनुमति है।

तिथि ज्ञात न हो तब भी प्रतिपदा को कर सकते हैं श्राद्ध

ऐसा कहा जाता है कि नाना-नानी का अंतिम संस्कार या श्राद्ध करने से मृतक की आत्मा को शांति मिलती है। भले ही नाना-नानी की मृत्यु की तिथि ज्ञात न हो, लेकिन लोग इस तिथि पर श्राद्ध कर सकते हैं। इस प्रकार, हिंदू रीति-रिवाजों में अंतिम संस्कार करने की इस तिथि का बहुत महत्व है। ऐसा माना जाता है कि इस तिथि पर अंतिम संस्कार करने से इस अनुष्ठान को करने वाले परिवार में खुशियां आती हैं। इसलिए शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा में विवाह, यात्रा, व्रत, प्रतिष्ठा, सीमन्त, चूडाकर्म, वास्तुकर्म तथा गृहप्रवेश आदि कार्य नहीं करने चाहिए। विवाह मुहूर्त, यात्रा करना, आभूषण खरीदना, शिलान्यास, देश अथवा राज्य संबंधी कार्य, वास्तुकर्म, उपनयन आदि कार्य करना शुभ माना होता है परंतु इस तिथि में तेल लगाना वर्जित है। हिंदू पंचांग के अनुसार, तो पितृ पक्ष का आरंभ 17 सितंबर से होने जा रहा है। लेकिन, इस दिन श्राद्ध नहीं किया जाएगा। दरअसल, इस दिन भाद्रपद पूर्णिमा का श्राद्ध है और पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म के कार्य प्रतिपदा तिथि से होते हैं। इसलिए 17 तारीख को ऋषियों के नाम से तर्पण किया जाएगा। श्राद्ध पक्ष का आरंभ प्रतिपदा तिथि से होता है। ऐसे में 18 सितंबर से पिंडदान, ब्राह्मण भोजन, तर्पण, दान आदि कार्य आरंभ हो जाएगा। पितृ पक्ष का आरंभ देखा जाए तो 18 सितंबर से हो रहा है और 2 अक्टूबर तक यह चलेगा।

इस समय श्राद्ध करना सबसे उत्तम

शास्त्रों के अनुसार, पितृपक्ष में सुबह और शाम के समय देवी देवताओं की पूजा की जाती है और पितरों की पूजा के लिए दोपहर का समय होता है। पितरों की पूजा के लिए सबसे उत्तम समय 11।30 से लगभग 12।30 बजे तक का समय सबसे उत्तम होता है। इसलिए लिए आपको पंचांग में अभिजीत मुहूर्त देखने के बाद ही श्राद्ध कर्म करें। श्रद्धा के साथ श्राद्ध के कार्य करें इसलिए ही इसे श्राद्ध कहते हैं। जिस भी श्राद्ध कार्य करते हैं उस दिन ब्राह्मण को भोजन जरूर कराएं। साथ ही दान दक्षिणा दें। श्राद्ध वाले दिन गाय, कुत्ता कौवा और चींटी को भी जिमाया जाता है।

प्रतिपदा श्राद्ध की पूजा विधि

पहले श्राद्ध पर 18 सितंबर के दिन कुतुप मुहूर्त सुबह 11 बजकर 50 मिनट से दोपहर 12 बजकर 19 मिनट तक रहेगा। इसके पश्चात रौहिण मुहूर्त दोपहर 12 बजे से शुरू होकर दोपहर 1 बजकर 28 मिनट तक रहने वाला है। अगला अपराह्न का मूहूर्त दोपहर 1 बजकर 28 मिनट से शुरू होकर दोपहर 3 बजकर 55 मिनट तक रहेगा। श्राद्ध के दिनों में पितरों की तस्वीर के समक्ष रोजाना नियमित रूप से जल अर्पित करना शुभ माना जाता है। तर्पण करने के लिए सूर्योदय से पहले जूड़ी लेकर पीपल के वृक्ष के नीचे स्थापित की जाती है। इसके बाद लोटे में थोड़ा गंगाजल, सादा जल और दूध लेकर उसमें बूरा, जौ और काले तिल डाले जाते हैं और कुशी की जूड़ी पर 108 बार जल चढ़ाया जाता है। जब भी चम्मच से जल चढ़ाया जा रहा हो तब-तब मंत्रों का उच्चारण किया जाता है।

वरिष्ठ पुरुष के द्वारा ही नित्य तर्पण यानी पितरों को जल चढ़ाना उचित

- घर के सबसे वरिष्ठ पुरुष के द्वारा ही नित्य तर्पण यानी पितरों को जल चढ़ाने की विधि पूरी की जाती है। घर पर वरिष्ठ पुरुष सदस्य ना हो तो पौत्र या नाती से तर्पण करवाया जा सकता है।
- पितृपक्ष में सुबह और शाम स्नान करके पितरों को याद किया जाता है।
- पितरों का तर्पण करते हुए तीखी सुगंध वाले फूलों का इस्तेमाल ना करने की सलाह दी जाती है और मद्धम सुगंध वाले फूलों का इस्तेमाल किया जाता है।
- इसके अलावा पितृपक्ष में गीता का पाठ करना शुभ माना जाता है।
- पितृपक्ष में श्राद्ध कार्य किसी से कर्ज लेकर करना सही नहीं माना जाता है।
- किसी के दबाव में भी पितरों का तर्पण या श्राद्ध आदि नहीं करना चाहिए बल्कि यह कार्य स्वेच्छा से होना चाहिए।

द्वितीया श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने से आत्मा को प्रेतयोनि से मुक्ति मिलती है...

द्वितीया का श्राद्ध करने से मिलती है आत्मा को प्रेतयोनि से मुक्ति। इस दिन गृह कलह न करें, चरखा, मांसाहार, बैंगन, प्याज, लहसुन, बासी भोजन, सफेद तील, मूली, लौकी, काला नमक, सत्तू, जीरा, मसूर की दाल, आदि वर्जित माना गया है।

16 दिनों तक चलते वाले इस पितृपक्ष में पितरों की शांति और मुक्ति के लिए तर्पण और पिंडदान किया जाता है। श्राद्ध की सोलह 16 तिथियों का अलग अलग महत्व है। इन तिथियों में उनका श्राद्ध तो किया ही जाता है जिनकी तिथि विशेष में मृत्यु हुई है इसी के साथ हर तिथि का अपना खास महत्व भी है। द्वितीया श्राद्ध कर्म से मिलती है प्रेतयोनि से मुक्ति। द्वितीया श्राद्ध 19 सितंबर 2024, गुरुवार से प्रारंभ होगा। 16 दिनों के श्राद्ध की इन तिथियों में उनका श्राद्ध तो किया ही जाता है जिनकी तिथि विशेष में मृत्यु हुई है इसी के साथ हर तिथि का अपना खास महत्व भी है। द्वितीया श्राद्ध कर्म से मिलती है प्रेतयोनि से मुक्ति।

हिंदू धर्म में हर साल भाद्रपद पूर्णिमा तिथि से पितृ पक्ष की शुरुआत होती है। आज पितृ पक्ष के दूसरे दिन गुरुवार 19 सितंबर को श्राद्ध कर्म किया जाएगा। ऐसा माना जाता है कि पितृ पक्ष के दौरान पितृ लोक के पूर्वज धरती पर आते हैं। इस दौरान श्राद्ध करने से पूर्वज प्रसन्न होते हैं और अपने परिवार के सदस्यों को आशीर्वाद देते हैं। पितृ पक्ष के दूसरे दिन श्राद्ध करने के लिए शुभ समय निर्धारित किया जाता है, इस दौरान श्राद्ध करके पितरों को प्रसन्न किया जा सकता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पितृ पक्ष के दूसरे दिन यानी आज का दिन पितृ पक्ष का है। श्राद्ध पक्ष की दूसरी तिथि पर उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु किसी भी महीने की इस तिथि को हुआ था। पंचांग के अनुसार, इस दिन शुक्ल पक्ष अथवा कृष्ण पक्ष दोनों ही पक्षों की द्वितीया तिथि का श्राद्ध किया जा सकता है। यदि पिता की तिथि ज्ञात न हो तो पितृ विसर्जन के दिन ही श्राद्ध करना चाहिए। द्वितीया श्राद्ध को सम्पन्न करने के लिए कुतुप, रौहिण, अपराह्न मुहूर्त आदि शुभ मुहूर्त माने जाते हैं।

जानें कैसे करें यह श्राद्ध

1. जिनका भी स्वर्गवास द्वितीया तिथि को हुआ है तो उनका श्राद्ध कर्म इस दिन करना चाहिए।
2. दूसरे दिन के श्राद्ध के समय तिल और सत्तू के तर्पण का विधान है।
3. सत्तू में तिल मिलाकर अपसव्य से दक्षिण-पश्चिम होकर, उत्तर-पूरब इस क्रम से सत्तू छिंटते हुए प्रार्थना करें।
4. प्रार्थना में कहें कि मारे कुल में जो कोई भी पितर प्रेतत्व को प्राप्त हो गए हैं, वो सभी तिल मिश्रित सत्तू से तृप्त हो जाएं।
5. फिर उनके नाम और गोत्र का उच्चारण करते हुए जल सहित तिल मिश्रित सत्तू को अर्पित करें।
6. फिर प्रार्थना करें कि 'ब्रह्मा से लेकर चिट्ठी पर्यन्त चराचर जीव, मेरे इस जल-दान से तृप्त हो जाएं।'
7. तिल और सत्तू अर्पित करके प्रार्थना करने से कुल में कोई भी प्रेत नहीं रहता है।

पूर्वजों के प्रसन्न होने के संकेत

- पितृ पक्ष के दौरान काली गाय व कौवों का दिखना या फिर साथ नजर आना।
- गाय के रंभाने की आवाज सुनाई देना।
- घर में काली चीटियों का आना।
- मुरझाए हुए पौधों का खिलना।
- कौवे का भोजन करते हुए दिखना।
- सपने में यदि आपके पूर्वज खुश नजर आएं, तो यह भी एक शुभ संकेत है।

क्या न करें

शराब पीना, मांस खाना, श्राद्ध के दौरान मांगलिक कार्य करना, झूठ बोलना और ब्याज का धंधा करने से भी पितृ नाराज हो जाता हैं।

तिथि और शुभ मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, पितृ पक्ष की द्वितीया तिथि आरंभः 19 सितंबर, 04 बजकर 19 मिनट पर
पंचांग के अनुसार, पितृ पक्ष की द्वितीया तिथि समाप्तः 20 सितंबर, रात्रि 12 बजकर 39 मिनट पर
कुतुप मूहूर्तः प्रातः 11:50 मिनट से दोपहर 12:39 मिनट तक रहेगा। इस मुहूर्त में श्राद्ध के लिए केवल 49 मिनट का समय मिलेगा।
रौहिण मूहूर्तः दोपहर 12: 39 मिनट से लेकर दोपहर 01 बजकर 28 मिनट तक रहेगा। इस मुहूर्त में श्राद्ध-तर्पण के लिए भी 49 मिनट का समय मिलेगा।
अपराह्न काल का मुहूर्तः दोपहर 01: 28 मिनट से 03: 54 मिनट तक रहेगा।
इस मुहूर्त में पितरों के श्राद्ध के लिए कुल 2 घण्टे 27 मिनट का समय मिलेगा।

तृतीया श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने से सुख समृद्धि, धन, स्वाथ्य आदि प्राप्त होता...

श्राद्ध के तीसरे दिन उन व्यक्तियों का श्राद्ध होता है जिनकी मृत्यु तृतीया तिथि को हुई हो। तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म करने से पितृदोष नहीं लगता है। विधिवत रूप से तृतीय श्राद्ध करने से सुख समृद्धि, धन, स्वाथ्य आदि प्राप्त होता है।

प्राचीन साहित्य के मुताबिक बताया गया है कि पितर सावन महीने की पूर्णिमा से ही नीचे आ जाते हैं। पृथ्वी पर आने के बाद वह नई आई कुशा की कोंपलों पर विराजित रहते है। फिर श्राद्ध के दौरान जो भी व्यक्ति पितरों के नाम से दान और भोजन कराते हैं अथवा उनके नाम से जो भी निकालते हैं, उसे पितर सूक्ष्म रुप से ग्रहण करते हैं। ग्रंथों में तीन पीढ़ियों तक श्राद्ध करने का विधान है। पितृपक्ष में श्राद्ध और तर्पण करने का विशेष महत्त्व रहता है। श्राद्ध कर्म करने से पितर प्रसन्न होते है। उनकी आत्मा तृप्त होती है और वह सुख समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

तीसरे श्राद्ध की कहानी श्राद्ध से जुड़ी एक पौराणिक कथा बहुत ही प्रचलित है। महाभारत काल के दौरान जब कर्ण की मृत्यु हो गई तो मृत्यु के बाद उनकी आत्मा स्वर्ग में पहुंची। वहां उन्हें बहुत सोना और गहनें प्रदान किए गए। यह देखकर कर्ण की आत्मा तृप्त नहीं हुई । वह तो उस समय केवल आहार की तलाश कर रहे थे । तब उन्होंने इंद्रा देव से पूछा कि उन्हें भोजन के स्थान पर सोना क्यों दिया गया। तब इंद्र देव ने उन्हें बताया कि आपने अपने सम्पूर्ण जीवन में केवल सोने का दान ही दिया है इसलिए आपको खाने में सोना दिया गया। आपने अपने पूर्वजों को कभी भी भोजन का दान नहीं दिया था। इंद्रा देव की इस बात को सुनकर कर्ण ने कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी उनके पूर्वज कौन है ? इस कारण उन्हें कुछ भी दान नहीं दे सके।

आत्मा रूपी कर्ण ने इन्द्र देव से अपनी गलती को सुधरने का अवसर माँगा। तब उन्हें 16 दिन के लिए पृथ्वी पर भेज दिया गया। धरती पर वापस आने पर उन्होंने अपने पितरों को याद कर उन्हें भोजन दान दिया और तर्पण किया। इन्ही 16 दिन के समय को पितृपक्ष कहा जाता है।

तीसरे श्राद्ध से जुड़े रहस्य

श्राद्ध के दौरान हम ब्राह्मण और जरूरतमंदों को अन्न, वस्त्र, सामग्री और पात्र दान करते हैं । ऐसा माना जाता है कि इनके माध्यम से ये सभी वस्तुए पितरों तक पहुँचती है। श्रद्धा और प्रेम से किया गया श्राद्ध ही फलित होता है। श्राद्ध करने से पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है। विधिवत श्राद्ध करने से पितर प्रसन्न होते है और परिवार को आशीर्वाद देते है। जिस कारण उनका परिवार फलता, फूलता रहता है। यदि श्राद्ध कर्म में कोई चूक हो जाती है तो पितर नाराज़ हो जाते हैं । जिससे पितृदोष लगता है। ऐसी मान्यता है कि श्राद्ध के दौरान यदि कौआ भोजन कर लेता है तो माना जाता है कि पितरों से ख़ुशी-ख़ुशी भोजन ग्रहण कर लिया है। क्योंकि कौआ को पितरों का रूप माना गया है।

तीसरे श्राद्ध में क्या करें

- श्राद्ध में गाय का दूध, दही और घी का उपयोग करें। शास्त्रों में गाय को बहुत ही पवित्र माना गया है। इसलिए गाय से मिलने वाली वस्तुए भी पवित्र रहती है। श्राद्ध के दिन भगवान् विष्णु और यम की पूजा अर्चना करनी चाहिए। उसके बाद ही तर्पण करना चाहिए।
- पितृ के निमित लक्ष्मी नारायण का ध्यान करते हुए गीता का तीसरा अध्याय का पाठ करना चाहिए।
- पितरों को भात, खीर, सब्जी और कढ़ी का भोग लगाना चाहिए। और श्राद्ध कर्म करते समय बनाये गए सभी भोजन को की थाली को भी साथ में रखें और अंगूठे से जल अर्पित करें।
- श्राद्ध कर्म के समय तुलसी अवश्य रखें। ऐसा करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है।

तीसरे श्राद्ध में क्या न करें

- तीसरे श्राद्ध के करते समय मांस, मदिरा, प्याज, लहसुन और बेंगन का सेवन ना करें। इनका सेवन करने से पितृ नाराज हो जाते है।
- पितृ दोष लगने से जन धन की हानि होती है। स्वाथ्य से जुडी समस्याएं होने लगती है। परिवार से सभी सदस्य दुखी रहने लगते है।
- श्राद्ध के दौरान मांगलिक कार्य जैसे - शादी, जनेऊ संस्कार, गृह प्रवेश जैसे सुबह कार्यो को करना वर्जित माना गया है। इसके अलावा नए वाहन ख़रीदना, नए कपडे खरीदना और पहनने की मनाही है।
- यदि आप श्राद्ध कर्म कर रहे है तो गलती से भी श्राद्ध कर्म किसी दूसरे के घर पर ना करें। इसे अपने ही घर पर करना किये। या फिर ऐसी जगह करना चाहिए जो की सार्वजानिक सम्पति हो जिस पर किसी का भी कोई अधिकार ना हो।

चतुर्थी श्राद्ध

इस दिन ब्राह्मण को बुलाकर श्राद्ध कर्म करना चाहिए...

श्राद्ध के चौथे दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु चतुर्थी तिथि को हुई होती है। चौथे श्राद्ध में ब्राह्मण को बुलाकर श्राद्ध कर्म करवाना चाहिए। श्राद्ध कर्म तीन पीढ़ियों तक का होता है। इसमें मातृकुल और पितृकुल दोनों ही शामिल होते हैं।

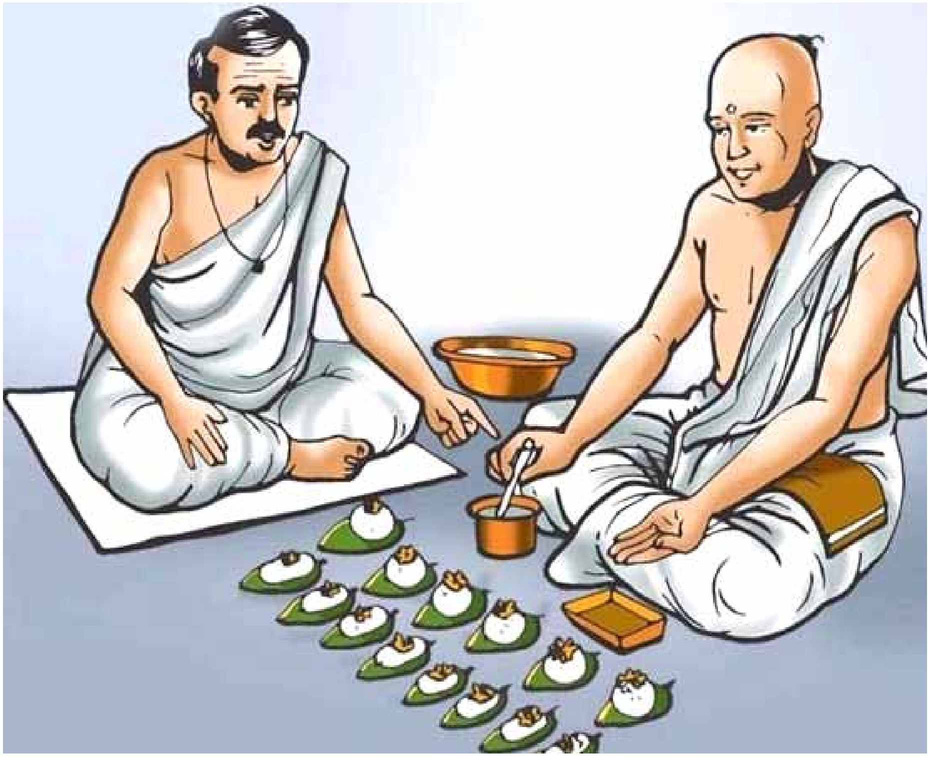

चौथे श्राद्ध का महत्व- पुराणों के अनुसार यमराज प्रत्येक वर्ष श्राद्ध पक्ष में समस्त जीवों को मुक्त कर देते हैं। ताकि वह अपने स्वजनों के पास जाकर तर्पण ग्रहण कर सकें। बता दें कि तीन पूर्वज पिता, दादा तथा परदादा को तीन देवताओं के समान माना गया है। पिता को वसु के समान माना जाता है। रुद्र देवता को दादा के समान माना जाता है। आदित्य देवता को परदादा के समान माना जाता है। श्राद्ध के दौरान यही अन्य सभी पूर्वजों के प्रतिनिधि माने जाते हैं।

चौथे श्राद्ध की कहानी

श्राद्ध को लेकर एक पौराणिक कथा प्रचलित है जिसके अनुसार जोगे और भोगे दो भाई थे। ये दोनों अलग अलग घरों में रहते थे। जोगे के पास अपार धन था परन्तु भोगे निर्धन था। अमीरी गरीबी का फर्क होने पर भी दोनों भाइयों के बीच बहुत प्रेम था। परन्तु जोगे की पत्नी को धन का घमंड था। जबकि भोगे की पत्नी शांत स्वाभाव और एक सुशिल महिला थी। जब पितृ पक्ष का समय आया तो जोगे की पत्नी ने जोगे से श्राद्ध कर्म करने के लिए कहा। जोगे ने इसे व्यर्थ कहकर टाल दिया। परन्तु जोगे की पत्नी शान दिखाने के लिए यह श्राद्ध करना चाहती थी। जिससे वह अपने मायके वालों को दावत दे सके। जोगे की पत्नी से उसने कहा कि इसे करने में मुझे कोई परेशानी न होगी। मैं भोगे की पत्नी को भी बुला लूंगी। हम दोनों मिलकर सारा काम संभल लेंगी। दूसरे ही दिन भोगे की पत्नी सुबह सुबह आ गई और सारा काम करवने लगी। बहुत सारे पकवान बनाए गए। काम समाप्त होने के बाद वह अपने घर वापस आ गई क्योंकि उसे भी पितरों का तर्पण करना था। जब पितर धरती पर उतरे तो सबसे पहले वे जोगे के घर गए। वहां उन्होंने देखा कि उसके ससुराल पक्ष के सभी लोग भोजन कर रहे हैं। यह सब देखकर वे बहुत निराश हुए। उसके बाद पितर भोगे के घर गए, तो देखते हैं कि यहाँ पर केवल पितरों के नाम पर 'अगियारी' दे दी गई है। पितर उसकी राख खा लेते हैं और भूखे ही नदी के तट पर जाते हैं।

कुछ देर में ही सारे पितर अपने-अपने यहां का श्राद्ध ग्रहण करके नदी के तट पर इकठ्ठा हो गए और सभी बताने लगे कि उनकी संतानों ने किस-किस प्रकार से उनके लिए श्राद्धों के पकवान बनाए थे। जोगे-भोगे के पितरों ने भी अपना सारा किस्सा बताया। उन्होंने सोचा कि यदि भोगे निर्धन न होता तो वह श्राद्ध करने में समर्थ होता फिर उन्हें शायद भूखा वापस नहीं आना पड़ता। क्योंकि भोगे के घर में तो खाने के लिए रोटी भी नहीं थी। ये सारी बातें सोचकर पितरों को भोगे पर दया आई। अचानक ही वे नाच-नाचकर गाने लगे और कहने लगे भोगे के घर धन हो जाए, भोगे के घर धन हो जाए।

शाम हो गई पर भोगे के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। उसके बच्चे भूखे थे। बच्चों ने अपनी मां से कहा भूख लग रही है। तब बच्चो को टालने के लिए गुस्से से भोगे की पत्नी ने कहा जाओ आंगन में हौदी औंधी रखी हुई है, जाकर उसे खोल लो उसमें से जो मिल जाए बांटकर खा लेना। बच्चे जाकर हौदी देखते हैं, तो वे दौड़े-दौड़े मां के पास आते है और कहते हैं कि मां हौदी तो मोहरों से भरी पड़ी है। वह भी आंगन में आकर यह सब कुछ देखती है, उसके तो आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा।

इस तरह पितरों के आशीर्वाद से भोगे अमीर बन जाता है। परन्तु उसे पैसे का घमंड नहीं रहता है। और जब अगले साल श्राद्ध का समय आता है तो भोगे और उसकी पत्नी दोनों मिलकर श्रद्धा के साथ अपने पितरों का श्राद्ध करते हैं। भोगे की पत्नी पितरों के लिए 56 प्रकार के व्यंजन बनती है। वे दोनों ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं साथ ही वह अपने जेठ-जेठानी को भी बुलाते हैं और उन्हें सम्मान के साथ सोने और चांदी के बर्तनों में भोजन कराते हैं। ऐसा करने से उनके पितर बहुत प्रसन्न होते हैं।

चौथे श्राद्ध की विधि

- चौथे श्राद्ध में ब्राह्मण को बुलाकर श्राद्ध कर्म करवाना चाहिए।
- फिर उन्हें भोजन करवाकर, दान दक्षिणा देकर संतुष्ट करना चाहिए। ब्राह्मण द्वारा श्राद्ध कर्म करवाने के बाद जल से तर्पण अवश्य करना चाहिए।
- पिंडदान का समय दोपहर का ही होना चाहिए। भोजन का भोग लगाने के बाद उसमे से कुछ अंश कौए, गाय, चींटी और कुत्ते के लिए निकालें। उन्हें भोजन कराते समय अपने मन में पितरों का स्मरण करें और उनसे भोजन ग्रहण करने की विनती करें।
- यदि संभव हो सके तो श्राद्ध कर्म गंगा नदी के किनारे करें और यदि ऐसा नहीं हो पाता है तो अपने घर पर भी श्राद्ध कर सकते है।

चौथे श्राद्ध में क्या करें

- पितृ के निमित लक्ष्मी नारायण का ध्यान करते हुए गीता चौथे अध्याय का पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से पितरों को इसका फल मिलता है।
- श्राद्ध के दौरान जल से तर्पण जरूर करना चाहिए। यह श्राद्ध कर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।
- श्राद्ध में गाय का दूध, दही और घी का उपयोग करना चाहिए।

चौथे श्राद्ध में क्या न करें

- श्राद्ध को संध्या काल और रात्रि में नहीं करना चाहिए। इस दिन सात्विक भोजन बनाना चाहिए।
- श्राद्ध के समय झगड़ा करना और गुस्सा आदि नहीं करना चाहिए शांत मन से श्राद्ध कर्म करना चाहिए।

पंचमी श्राद्ध

को अविवाहितों का श्राद्ध करते हैं, इसे कुंवारा पंचमी भी कहते हैं

इस दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु पंचमी तिथि को हुआ हो। ऐसा माना गया है कि घर की दक्षिण दिशा में ही पितरों का वास होता है। इसलिए इस दिशा में चीजों का विशेष ध्यान रखना ज़रूरी होता है। नहीं तो घर में पितृ दोष लग सकता है।

श्राद्ध में यदि आप पितरों की शांति और मुक्ति के लिए तर्पण और पिंडदान नहीं कर पा रहे हैं तो पंजबलि कर्म जरूर करें। जिन लोगों का देहांत इस दिन अर्थात तिथि अनुसार दोनों पक्षों (कृष्ण या शुक्ल) चतुर्थी तिथि हो हुआ है उनका श्राद्ध इस दिन किया जाता है। इस दिन उन लोगों का श्राद्ध होता है, जिनकी मृत्यु पंचमी तिथि में हुई हो। इसे कुंवारा पंचमी भी कहते हैं क्योंकि इसदिन घर के ऐसे मृतकों और पितरों का श्राद्ध भी किया जाता है, जो अविवाहित थे। मान्यता है पंचमी तिथि के दिन कुंवारे पितरों का श्राद्ध करने से उनकी आत्मा को शांति मिलती है और उनकी कृपा हमेशा घर पर बनी रहती है। चलिए पंचमी तिथि की श्राद्ध विधि और नियम जानते हैं।

किन पितरों के लिए करते हैं पंचमी का श्राद्ध?

जिन लोगों का देहांत इस दिन अर्थात तिथि अनुसार दोनों पक्षों (कृष्ण या शुक्ल) पंचमी तिथि हो हुआ है उनका श्राद्ध इस दिन किया जाता है। चतुर्थी या पंचमी तिथि में उनका श्राद्ध किया जाता है जिसकी मृत्यु गतवर्ष हुई है।

पंचमी के श्राद्ध की 5 खास बातें

1. चतुर्थी और पंचमी को उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु गतवर्ष ही हुई हो।
2. श्राद्ध पक्ष की इस तिथि को कुंवारा पंचमी भी कहते हैं। यानी इस दिन ऐसे परिजनों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी अविवाहित रहते हुए ही मृत्यु हो गई हो।
3. इस दिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि निवृत होकर पूजन के स्थान को साफ स्वच्छ करके तैयार करें। महिलाएं शुद्ध होकर पितरों के लिए भोजन बनाएं।
4. अब योग्य और अविवाहित ब्राह्मण को न्योता देकर उनसे पितरों की पूजा और तर्पण कराएं। पितरों का पूजन करने के बाद उन्हें भोग लगाएं। पितरों के निमित्त अग्नि में खीर अर्पित करें।
5. अब उक्त भोजन में से गाय, कौवा, कुत्ता, देव और पीपल के लिए भोजन अलग से निकालकर उन्हें अर्पित करें। अंत में ब्राह्मण भोज कराएं। ब्राह्मण भोज के साथ ही जमाई, भांजा, मामा और नाती को भी भोजन कराएं। सभी को यथाशक्ति दक्षिणा दें।

श्राद्ध में लोहे या स्टील के पात्रों का उपयोग ना करें

शास्त्रानुसार श्राद्ध कर्म में लोहे या स्टील के पात्रों का प्रयोग वर्जित है। श्राद्ध कर्म में चांदी के पात्रों को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। चांदी के अभाव में तांबे के पात्रों का प्रयोग कर सकते हैं।

श्राद्ध में 'वृषोत्सर्ग' का बहुत महत्व है-

शास्त्रानुसार शास्त्र में 'वृष' (नन्दी) छोड़ने का बहुत महत्व बताया गया है। गौ-दान के समान ही 'वृष' दान भी करना चाहिए, लेकिन यह कर्म केवल पुरुषों के निमित्त ही करना चाहिए महिलाओं के लिए नहीं। 'वृषोत्सर्ग' के बिना किए गए श्राद्ध का फ़ल निष्फ़ल हो जाता है।

आमान्न दान से श्राद्ध की संपन्नता

हमारे शास्त्रों में स्पष्ट निर्देश है कि जो व्यक्ति श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कराने में असमर्थ हों वे 'आमान्न' दान से भी श्राद्ध को संपन्न कर सकते हैं। 'आमान्न दान' किसी ब्राह्मण को ही किया जाना चाहिए। ग्रामीण अंचलों में इसे 'सीदा' देना भी कहा जाता है। आमान्न दान- अन्न, घी, गुड़, नमक आदि भोजन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुएं।

श्राद्ध पक्ष में करे 'पितृ स्तुति'

श्राद्ध पक्ष में नित्य मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत 'पितृ स्तुति' करने से पितृ प्रसन्न एवं तृप्त होकर अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

सूर्य को अर्घ्य

शास्त्रानुसार विष्णु को स्तुति, देवी को अर्चन, सूर्य को अर्घ्य एवं पितरों को तर्पण अतिशय प्रिय है। इसलिए श्राद्ध पक्ष में 'कुतप' काल में नित्य तर्पण करें। तर्पण सदैव काले तिल, दूध, पुष्प, कुश, तुलसी, नर्मदा/गंगाजल मिश्रित जल से करें। तर्पण सदैव पितृ तीर्थ (तर्जनी व अंगूठे के मध्य का स्थान) से करें।

षष्ठी श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने वालों को हर जगहों से सम्मान प्राप्त होता है

श्राद्ध के छठवें दिन दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु षष्ठी तिथि को हुई होती है। इस दिन श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को सभी जगहों से सम्मान प्राप्त होता है। छठवें श्राद्धकर्म में छ: ब्राह्मणों को भोजन कराने का विधान है।

धार्मिक शास्त्रों की मान्यता के अनुसार पितृ पक्ष में जो षष्ठी तिथि को श्राद्ध कर्म संपन्न करता है, उसकी पूजा देवता लोग करते हैं। षष्ठी अर्थात छठ तिथि के श्राद्ध में घर पर ही तर्पण और पिंडदान कैसे करते हैं, किसी भी माह के षष्ठी तिथि को जिनकी मृत्यु हुई हो, उनका श्राद्ध इस दिन किया जाता है. इसे छठ श्राद्ध भी कहा जाता है

छठवें श्राद्ध का महत्व- शास्त्रों के अनुसार समस्त वर्णों व संप्रदायों में पितृयज्ञ करना अनिवार्य माना जाता है। लेकिन किसी कारण वश श्राद्धकर्म छूट जाता है तो उसके लिए गया श्राद्ध जैसे प्रावधान वर्णित हैं। शास्त्रों में देवकार्य से अधिक महत्व पितृकार्य को बताया गया है। इसलिए देवगणों से पहले पितृगणों को प्रसन्न करना आवश्यक है। गरुड़ पुराण में वर्णित है कि समयानुसार श्राद्ध करने से कुल में कोई भी दुखी नहीं रहता। पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म करने से पूर्वजों की आत्मा को शांति प्राप्त होती है। इतना ही नहीं बल्कि श्राद्धकर्ता को पितृऋण से मुक्तिभी मिल जाती है। षष्ठी का विधिवत श्राद्ध करने से सारे कार्य सिद्ध होते हैं तथा रोगों से मुक्ति मिल जाती है। ऐसे लोग निंदित हैं जो अपने पितृगणों को भूल जाते हैं।

छठवें श्राद्ध की कहानी

पौराणिक कथा के अनुसार भीष्म पितामह गया में अपने शांतनु का श्राद्ध करने गए। वहां उन्होंने विष्णु पद पर अपने पूर्वजों का आह्वान किया। वहा श्राद्ध कर्म करने लगे तभी वहां पर शांतनु के हाथ निकले परन्तु भीष्म पितामह ने उनके हाथ को छोड़कर विष्णुपद पर पिंडदान किया। ऐसा करने से शांतनु प्रसन्न हुए और उन्होंने आशीर्वाद दिया। इसी तरह भगवान राम जी भी जब रूद्र पद पर पिंडदान करने के लिए तैयार हुए तब राजा दशरथ जी ने हाथ निकाला। परन्तु राम जी ने रूद्र पद पर पिंडदान किया। इस पर प्रसन्न होकर दशरथ जी ने राम जी से कहा "आज तुमने मुझे तार दिया। ऐसा करने से हम रूद्र लोक को जायेंगे।" इस कारण ही छठवें, सातवें और आठवें दिन विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद और दक्षिणानिग पद पर पिंडदान करने का विधान बताया गया है।

छठवें श्राद्ध की विधि

- छठवें श्राद्धकर्म में छः ब्राह्मणों को भोजन कराने का विधान है।
- श्राद्ध कर्म के समय कच्चा दूध, गंगाजल, तिल, जौ मिश्रित जल की जलांजलि देकर पितरों का पूजन करना चाहिए।
- पितृगण के निमित, गाय के घी का दीप, चंदन और धूप लगाना चाहिए। साथ ही सफ़ेद फूल, सफ़ेद तिल, तुलसी पत्र और चंदन भी चढ़ाना चाहिए। और चावल के आटे से निर्मित पिण्ड समर्पित करना चाहिए। इसके बाद उनके नाम का नैवेद्य रखना चाहिए।
- श्राद्ध कर्म के समय कुशा के आसन पर बैठना चाहिए और पितृ के निमित भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए गीता के छठे आध्याय का पाठ करना चाहिए।
- इसके बाद चावल की खीर- पूड़ी, सब्जी, सफ़ेद फल,मिठाई, मिश्री आदि अर्पित करना चाहिए।
- श्राद्ध कर्म पूर्ण होने के बाद ब्राह्मणों को भोजन करना चाहिए और उन्हें सफ़ेद वस्त्र,दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।
- भोजन के कुछ भाग गाय, कुत्ते और कौवे को खिलाना चाहिए। ब्राह्मण को घर बुलाकर श्राद्ध कर्म कर सकते हैं।

छठवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

श्राद्ध में पितरों को जो भोज्य पदार्थ अर्पित किए जाते है उन्हें पिंडी रूप में अर्पित करना चाहिए।शास्त्रों के अनुसार कौवे को पितरों का रूप माना गया है। इसलिए उन्हें विशेष रूप से भोजन कराना चाहिए। कहा जाता कि यदि कौवे के भोजन ग्रहण किया तो पितरों ने भी भोजन ग्रहण कर लिया। श्राद्ध के समय पिंडदान और तर्पण करने से पितरों को बल प्राप्त होता है। वह शक्ति प्राप्त करके परलोक को जाते है। श्राद्ध कर्म करने से पितर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं । गया में श्राद्ध कर्म का विशेष महत्त्व बताया गया है। यहाँ पर बालू का पिंडदान किया जाता है।

छठवें श्राद्ध में क्या करें

- श्राद्ध पक्ष में गाय का दान करना बहुत ही शुभ माना गया है। इससे सुख और धन-संपत्ति प्राप्त होती है। इसी तरह गुड़ का दान करना भी श्रेष्ठकारी होता है। श्राद्ध के दौरान अन्नदान में गेहूं और चावल का दान करना चाहिए।
- श्राद्ध कर्म में तिल का भी विशेष महत्व होता है। इसलिए तिलों का दान करने से संकट और विपदाओं से रक्षा होती है। नमक का दान से पितर प्रसन्न होते है। शास्त्रों में बताया गया है कि जो व्यक्ति गया में पिंडदान करता है उसके पूर्वजों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। यदि आपको गया जाना संभव नहीं है तो आप घर पर भी पिंडदान और तर्पण कर सकते हैं।

छठवें श्राद्ध में क्या न करें

- पितृ पक्ष के समय घर में मांस, लहसुन, प्याज, मसूर की दाल, मछली आदि को भूलकर भी न बनाएं। ऐसा करने से पितर रुष्ट हो जाते है और परिवार पर पितृदोष लग जाता है।
- पितरों के तर्पण करने के दौरान श्राद्धकर्ता को शरीर पर तेल और साबुन लगाकर नहीं नहाना चाहिए।
- श्राद्ध के दौरान मांगलिक कार्य, नए कपडे, भवन निर्माण, नयी कार लेना जैसे कार्यों को भी नहीं करना चाहिए।

सप्तमी श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने वालों को श्रेष्ठ विचार और धन प्राप्त होता है...

श्राद्ध के सातवें दिन उन लोगों का श्राद्ध कर्म किया जाता है जिनकी मृत्यु सप्तमी तिथि को हुई हो । सप्तमी तिथि के दिन श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को महान यज्ञों के बराबर पुण्यफल प्राप्त होता है और वह श्रेष्ठ विचारों का धनी भी होता है।

सातवें श्राद्ध का महत्व पितृ पक्ष की सप्तमी तिथि के दिन सात ब्रह्मणों को भोजन कराने का विधान है। बता दें की इसके साथ ही 16 वेदी नामक तीर्थ पर श्राद्ध करने का भी विधान है। इस दिन यहां पर छह वेदियों पर पिंडदान किया जाता है। ये 6 वेदियां है अगस्त, क्रौंच, मतंग, चंद्र, और कार्तिक। धार्मिक मान्यता के अनुसार सप्तमी तिथि को इस छह वेदियों पर पिंडदान करने से पितरों को शांति प्राप्त होती है। इसलिए सप्तमी का श्राद्ध बेहद खास होता है।

सातवें श्राद्ध की कहानी

गयासुर नाम का एक असुर था। पौराणिक कथा के अनुसार गयासुर ने भगवान विष्णु जी से वरदान पाने के लिए घोर तप किया। तप से प्रसन्न होकर विष्णु जी प्रकट हुए और वर मांगने को कहा तो गयासुर ने कहा कि श्री हरि स्वयं ही उसके शरीर में वास करें। इसके उपरांत कोई भी उसे देखे तो उसके समस्त पाप नष्ट हो जाएँ। और उन्हें स्वर्ग प्राप्त हो। भगवान विष्णु तथास्तु कहकर वापस चले गए। विष्णु जी द्वारा दिए गए इस वरदान से सभी देवतागण चिंतित हो गए। क्योंकि उन्हें डर था कि इससे असुर भी पाप मुक्त हो जाएंगे । सभी देव गण विष्णु जी के पास गए।

विष्णु जी ने सभी देवताओं को आश्वासन दिया और कहा कि गयासुर का अंत जरूर होगा। यह सुनकर देवताओं की चिंता दूर हुई । कुछ दिन के पश्चात् भगवान विष्णु ने गयासुर का वध अपनी गदा से कर दिया। अपनी मृत्यु से पहले गयासुर ने वरदान माँगा कि वह जिस शिला पर अपना देह त्याग रहा है। उस स्थान पर सभी देवता विराजित हो जाएं और यह स्थान मृत्यु के बाद किए जाने वाले धार्मिक कार्यों हेतु सिद्ध स्थल बन जाए। भगवान विष्णु ने गयासुर की यह इच्छा पूर्ण की। वह स्थान गया के नाम से प्रसिद्ध हो गया। आज भी इस स्थान को मृत्यु के बाद किए जाने वाले पिंडदान अथवा श्राद्ध हेतु सबसे सिद्ध माना जाता है। गरुड़ पुराण में यह वर्णित है कि भगवान विष्णु फल्गु के जल में वास करते हैं। इसका कारण फल्गु नदी में आज भी पिंडदान करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। उनके कुल का उद्धार हो जाता है।

सातवें श्राद्ध की विधि

- पौराणिक मान्यता के मुताबिक, सप्तमी श्राद्ध के निमित्त 7 ब्रह्मणों को भोजन कराना चाहिए।
- इस दिन श्राद्ध कर्म करते समय कुशा के आसन पर बैठना चाहिए और अपने पितृ के निमित्त भगवान विष्णु के पुरुषोत्तम स्वरूप का ध्यान करते हुए गीता के सातवें अध्याय का पाठ करना चाहिए।
- साथ ही विशेष पितृ मंत्र का जाप भी करना चाहिए। पिंड बनाने के लिए पके हुए चावल में गाय का दूध, घी, शहद, गुड़ मिलाकर पिंड बना लें।
- इसे पितरों के शरीर का प्रतीक माना गया है। फिर पिंड पर काला तिल, जौ, सफेद फूल और कुश मिलाकर तर्पण करना चाहिए। इसके बाद ब्राह्मणो को भोजन कराना चाहिए।
- भोजन का कुछ अंश कुत्ते, गाय, कौआ और चींटी को भी देना चाहिए। इस दौरान यदि आपके घर कोई मांगने के लिए या जरूरतमंद व्यक्ति आया है तो उसे भी अपने सामर्थ के अनुसार दान देना चाहिए।

सातवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

- मार्कंडेय पुराण के अनुसार श्राद्ध करने से पूर्वज संतुष्ट होते है। वह प्रसन्न होकर धन, सुख और स्वास्थ्य प्रदान करते है। ऐसा माना जाता है कि श्राद्ध करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। पितृ पक्ष में पितरों का श्राद्ध करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है। सप्तमी श्राद्ध का अनुष्ठान करने हेतु कहा जाता है कि तिरुवरूर के पास कुरुवी रामेश्वरम में पितृ मोक्ष शिव मंदिर सबसे अच्छा स्थान है।

सातवें श्राद्ध में क्या करें

- श्राद्ध के लिए भोजन बनाते समय शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए। भोजन में गाय का दूध, दही और घी का उपयोग करना शुभ होता है। अपने पूर्वजों की रूचि का भोजन बनाना चाहिए। श्राद्ध के समय खीर का विशेष महत्त्व रहता है इसलिए श्राद्ध में खीर ज़रूर बनाएं। भोजन में पूरी, कद्दू की सब्जी, आलू की सब्जी, छोले की सब्जी, मिठाई आदि चीजे बनानी चाहिए।

सातवें श्राद्ध में क्या न करें

- श्राद्ध का भोजन बनाते समय चप्पल नहीं पहनना चाहिए।
- भोजन में जूठी चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
- श्राद्ध के समय किसी के प्रति ईर्ष्या भाव नहीं रखना चाहिए और न की किसी को अपशब्द कहना चाहिए।
- गरुड़ पुराण में यह वर्णित है कि भगवान विष्णु फल्गु के जल में वास करते हैं।
- श्राद्ध के भोजन में मांस - मदिरा, लहसुन- प्याज, मछली जैसी चीजों का उपयोग करना वर्जित है इसलिए इनका इस्तेमाल भूलकर भी न करें।

तर्पण करते समय...

तर्पण करते वक्त अपने गोत्र का नाम लेकर बोलें, गोत्रे अस्मत्पितामह (पिता का नाम) वसुरूपत् तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जलं वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। इस मंत्र से पितामह और परदादा को भी 3 बार जल दें। इसी प्रकार तीन पीढ़ियों का नाम लेकर जल दें।

अष्टमी श्राद्ध

करने वाले व्यक्ति को सम्पूर्ण समृद्धियों की प्राप्ति होती है

आठवें श्राद्ध की कहानी महाभारत काल से श्राद्ध की शुरुआत हुई। श्राद्ध का आठवें दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु अष्टमी तिथि को हुई होती है। इस दिन श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को सम्पूर्ण समृद्धियों की प्राप्ति हो जाती है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के मुताबिक 'पितृ लोक' एक क्षेत्र होता है जो कि स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य रहता है। हमारी पिछली 3 पीढ़ियों की आत्माएं इसी 'पितृ लोक' में निवास करती हैं। मृत्यु के देवता यम इस क्षेत्र का नेतृत्व करते हैं। ऐसा माना जाता है कि जब अगली पीढ़ी के किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो पहली पीढ़ी को भगवान के समीप लाते हुए उन्हें स्वर्ग ले जाया जाता है। क्योंकि पितृलोक में सिर्फ अंतिम तीन पीढ़ियों को ही श्राद्ध कर्म दिया जा सकता है। शास्त्रों में ऐसा माना जाता है कि किसी भी व्यक्ति की मृत्यु इन 16 तिथियों के अतिरिक्त अन्य किसी भी तिथि पर नहीं होती है। अर्थात जब भी पूर्वजों का श्राद्ध किया जाता है तो उनकी मृत्यु तिथि के अनुसार ही करने का प्रावधान है। इसलिए पितृ पक्ष 16 दिन के होते हैं।

आठवें श्राद्ध की कहानी महाभारत काल से श्राद्ध की शुरुआत हुई । जिसके अनुसार दानवीर कर्ण की मृत्यु के बाद चित्रगुप्त ने उन्हें मोक्ष देने से मना कर दिया था। इस पर कर्ण ने चित्रगुप्त से पूछा कि मैंने अपनी सारी सम्पदा हमेशा दान पुण्य में ही दी है। फिर मुझ पर कैसा ऋण शेष रह गया है। कर्ण की बात सुनकर चित्रगुप्त ने बताया कि आपने देव ऋण और ऋषि ऋण को तो पूर्ण कर दिया है परंतु आप पर पितृ ऋण बचा हुआ है। आप जब जीवित थे तो आपने केवल सम्पदा और सोने का दान किया था। आपने कभी भी अन्न का दान नहीं किया। इस कारण आप पर पितृ ऋण शेष है। जब तक आप पितृ ऋण नहीं उतारते है। तो आपको मोक्ष नहीं मिल सकता है। तब चित्रगुप्त ने कर्ण को 16 दिन के लिए पृथ्वी पर जाकर अपने ज्ञात एवं अज्ञात पितरों को प्रसन्न करने हेतु विधिवत श्राद्ध-तर्पण तथा पिंड दान करने के लिए कहा। कर्ण ने वैसा ही किया तब उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुयी। ऐसा कहा जाता है कि तभी से ही श्राद्ध की प्रथा का आरंभ हुआ।

आठवें श्राद्ध की विधि

श्राद्ध कर्म को गया में या फिर किसी पवित्र नदी के किनारे भी कर सकते है। यदि ऐसा संभव नहीं है तो आप अपने घर पर भी श्राद्ध कर्म कर सकते है। श्राद्ध के समय ब्राह्मण को जरूर बुलाना चाहिए। श्राद्ध के दिन सूर्योदय से पहले स्नान कर लेना चाहिए। इसके बाद साफ वस्त्र पहनकर श्राद्ध और दान का संकल्प लेना चाहिए। आठवें दिन के श्राद्ध को कुतुप काल में करना चाहिए। श्राद्ध कर्म करने के लिए पहले दक्षिण दिशा में मुंह करके कुशा के आसन पर बैठना चाहिए। इसके बाद एक ताम्बे के लौटे में जल लेकर उसमे गंगाजल, गाय का दूध, जौ, चावल, तिल और सफ़ेद फूल लेना चाहिए। इसके बाद तर्पण करना चाहिए। पितरों को खीर का भोग लगाना चाहिए। साथ ही भोजन का कुछ भाग भगवान, गाय, कुत्ता, कौआ और चींटी के लिए भी निकालना चाहिए। इनको भोजन कराते समय अपने पितरों को स्मरण कर उन्हें भी भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना करनी चाहिए। ऐसा करने से पितर भोजन ग्रहण करते है।

आठवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

विशेष स्थान जैसे गया, प्रयागराज, हरिद्वार में श्राद्ध कर्म करने से पितरों को मोक्ष मिलता है और वह सीधे स्वर्ग को जाते है। जो व्यक्ति श्राद्ध कर्म करता है वह पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है। उसे सभी सुख सुविधाएं प्राप्त होती है। पितृ पक्ष के समय पितरों को पूजा अर्चना करने से भविष्य में आने वाली सभी परेशानियाँ दूर हो जाती है।

आठवें श्राद्ध में क्या करें :
- पितरों के निमित गीता के आठवें अध्याय का पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से पितरों को भगवान की प्राप्ति आसानी से होती है।
- श्राद्ध के दौरान ब्राह्मण को घर बुलाकर भोजन कराना चाहिए और यथा शक्ति दान भी देना चाहिए।
- पितरों की पसंद का भोजन बनाना चाहिए। इससे पितर प्रसन्न होते है और आशीर्वाद देते है।

आठवें श्राद्ध में क्या न करें :
- श्राद्ध कर्म के दिन ब्राह्मण भोजन के पहले कुछ नहीं खाना चाहिए। पितृ पक्ष में शुभ कार्य जैसे नया सामान खरीदना, नए कपडे खरीदना, विवाह, जनेऊ आदि नहीं करने चाहिए।
- पितृ पक्ष में सात्विक भोजन करना चाहिए। प्याज लहसुन का इस्तेमाल भोजन में नहीं करना चाहिए। इसके अलावा कांच या फिर लोहे के बर्तनों का भी उपयोग नहीं करना चाहिए। आप ब्राह्मण को भोजन कराने के लिए पत्तल का इस्तेमाल कर सकते है।
- ऐसा माना जाता है कि इन 15 दिनों में पितर किसी भी रूप में अपने घर आ सकते हैं। इसलिए घर पर आये जरूरतमंद व्यक्ति या फिर पशु को अनादर नहीं करना चाहिए। उन्हें भोजन कराना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए।

नवमी श्राद्ध

करने वाले व्यक्ति को ऐश्वर्य और मनचाहा दाम्पत्य सुख मिलता है

श्राद्ध के नौवें दिन सुहागिन महिलाएं और माताओं का श्राद्ध किया जाता है। इस कारण इसे मातृ नवमी श्राद्ध भी कहा जाता है। इस दिन श्राद्ध करता को ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। इसके अलावा मनचाहा दाम्पत्य सुख भी मिलता है।

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार पितृ पक्ष के 16 दिन पितरों के लिए समर्पित होते हैं। इन 16 दिनों में लोग अपने पूर्वजों के मोक्ष और आत्म शांति के लिए तर्पण व पिंडदान करते हैं। वह अपने पूवर्जों का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और साथ ही उनकी मुक्ति की कामना भी करते हैं। माना जाता है कि पितृ पक्ष में श्राद्ध कर्म करने से पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है और वह स्वर्ग को जाते हैं । इन दिनों में यदि पितर प्रसन्न होते है तो वह अपने आशीर्वाद में सुख और समृद्धि देकर जाते है। लेकिन यदि पितर नाराज हो गए तो वह परिवार सुख से नहीं रह पाता है। इसलिए पितृ पक्ष का विशेष महत्त्व होता है।

नौवें श्राद्ध की कहानी

श्राद्ध से जुड़ी एक पौराणिक कथा बहुत ही प्रचलित है। जो महाभारत काल से सम्बंधित है जिसमे श्राद्ध की शुरुआत की कहानी को वर्णित है। इस कहानी के अनुसार कौरव-पांडवों के मध्य युद्ध की समाप्ति के उपरांत जब सब कुछ ख़त्म हो गया और दानवीर कर्ण की मृत्यु हो गयी तो मृत्यु के बाद वह स्वर्ग पहुंचे। वहां उन्हें भोजन में सोना, चांदी और गहने परोसे गये। यह देखकर दानवीर कर्ण आश्चर्यचकित हो गए और उन्होंने इंद्र देव से इसका कारण पूछा। दानवीर कर्ण द्वारा इस प्रकार पूछने पर इंद्र ने बताया कि आपने अपने सम्पूर्ण जीवन में सोने चाँदी और हीरे मोती का ही दान किया है। आपने अपने जीवन में कभी भी अपने पूर्वजों को भोजन का दान नहीं दिया है। इस कारण ही आपको यह भोजन मिला है। यह सुनकर दानवीर कर्ण ने कहा कि उन्हें अपने पूर्वजों के विषय में कोई ज्ञान नहीं है। इस कारण वह ऐसा करने के लिए असमर्थ थे। तब इंद्र देव ने कर्ण को वापस पृथ्वी पर 16 दिनों के लिए भेजा ताकि वह अपने पूर्वजों को भोजन दान दे सकें और तर्पण कर सकें। उन्होंने धरती पर आकर वैसा ही किया। और इस तरह वह पितृ ऋण से मुक्त हो गए और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुयी। ऐसा माना जाता है कि तभी से श्राद्ध कर्म की शुरुआत हुयी। और पृथ्वीलोक में श्राद्ध कर्म किया जाने लगा।

नौवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

जिन व्यक्तियों की मृत्यु किसी दुर्घटना, शस्त्रप्रहार, सर्पदंश, विष, हत्या, अन्य किसी प्रकार से अस्वाभाविक मृत्यु और आत्महत्या हुई हो, तो ऐसे लोगो का श्राद्ध मृत्यु तिथि वाले दिन नहीं करना चाहिए। हिन्दू धर्म में समस्त शुभ कार्यों के लिए दाहिने हाथ का प्रयोग करना बताया गया है। इस कारण दाहिने हाथ से श्राद्ध कर्म करना शुभ माना जाता है। श्राद्ध कर्म तीन पीढ़ियों तक का ही किया जाता है। इसमें मातृकुल और पितृकुल (नाना और दादा) दोनों ही शामिल होते हैं। तीन पीढ़ियों से ज्यादा का श्राद्ध कर्म नहीं किया जाता है।

कैसे करते हैं तर्पण

1. श्राद्ध पर्व या पितृ पक्ष में प्रतिदिन नियमित रूप से पवित्र नदी में स्नान करने के बाद तट पर ही पितरों के नाम का तर्पण किया जाता है। इसके लिए पितरों को जौ, काला तिल और एक लाल फूल डालकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके खास मंत्र बोलते हुए जल अर्पित करना होता है।
2. सर्वप्रथम अपने पास शुद्ध जल, बैठने का आसन (कुशा का हो), बड़ी थाली या ताम्रण (ताम्बे की प्लेट), कच्चा दूध, गुलाब के फूल, फूल-माला, कुशा, सुपारी, जौ, काली तिल, जनेऊ आदि पास में रखे। आसन पर बैठकर तीन बार आचमन करें। ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः बोलें।

नौवें श्राद्ध की विधि

- यदि आप श्राद्ध कर्म कर रहे है तो एक योग्य ब्राह्मण को घर पर आमंत्रित करना चाहिए। ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए और साथ ही अपनी सामर्थ शक्ति अनुसार दान भी देना चाहिए।
- श्राद्ध के दौरान पितरों को तर्पण देना चाहिए। यह कार्य दोपहर के समय ही किया जाता है। पितरों की पूजा करने और तर्पण के बाद भोजन का कुछ भाग गाय, कुत्ते,कौआ और चींटी के लिए निकालना चाहिए। और जब आप इन्हे भोजन करा रहें हो तो उन समय अपने पितरों का स्मरण करते हुए भोजन ग्रहण करने की विनती करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि वह कौआ के रूप में भोजन ग्रहण करने आते हैं।
- यदि संभव हो सके तो श्राद्ध कर्म को किसी नदी के किनारे करना चाहिए। क्योंकी नदी के किनारे किए गए श्राद्ध कर्म का विशेष महत्त्व होता है।
- श्राद्ध के दौरान पितरों की पसंद का भोजन बनाना चाहिए और विशेष रूप से खीर जरूर बनाना चाहिए।

दशमी श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने वाले के पास हमेशा धन सम्पदा बनी रहती है

श्राद्ध के दसवें दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु दशमी तिथि को हुई होती है। इस दिन जो व्यक्ति श्राद्ध करता है उसे जीवन में कभी भी लक्ष्मी की कमी नहीं होती है। उस व्यक्ति के पास धन सम्पदा सदैव बनी रहती है।

दसवें श्राद्ध का महत्व हिन्दू धर्म में पितृ पक्ष का विशेष महत्त्व रहता है। पितृ पक्ष अर्थात श्राद्ध पक्ष में पितरों को पिंडदान और तर्पण किया जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्राद्ध कर्म करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। यदि श्राद्ध कर्म विधि विधान के साथ किया जाता है तो इससे पितर प्रसन्न होते है और वह श्राद्ध कर्ता को आशीर्वाद भी देते है। जिससे परिवार में सुख समृद्धि बनी रहती है। जीवन सुखमय हो जाता है। परन्तु यदि श्राद्ध कर्म के दौरान गलतियां की जाती है तो इससे पितृ नाराज भी हो सकते है। जिस कारण परिवार पर पितृ दोष लग जाता है। इसलिए किसी योग्य ब्राह्मण को बुलाकर श्राद्ध कर्म करने का विधान है।

दसवें श्राद्ध की कहानी

पितृ पक्ष की पौराणिक कथा महाभारत काल से जुडी है। दानवीर कर्ण के विषय में सब जानते हैं कि वह देवी कुंती के सबसे बड़े पुत्र हैं। कर्ण ने अपने सम्पूर्ण जीवन में गरीबों और जरूरतमंदों को खूब दान दिया था परन्तु उन्होंने उन्हें पैसा और सोना दान किया। जो भी व्यक्ति उनके दर पर आता वह उन्हें खाली हाथ नहीं भेजता था। सोना, चांदी और आभूषण यह सब वह दान करता था पांच कभी भी उन्होंने अन्न का दान नहीं किया। जब उनकी मृत्यु हुयी तो वह स्वर्ग में गए। उन्हें वहां पर खाने के लिए सोना और चांदी दिया गया। इसपर कर्ण ने इंद्र से पूछा कि मुझे भोजन क्यों नहीं दिया जा रहा है। मैं इसे कैसे खा सकता हूँ ? तब इन्द्र देव ने बताया की उन्होंने कभी भी पितरों को भोजन दान नहीं किया है। इसकारण उन्होंने जो दान किया था वहीँ उन्हें भी दिया गया। कर्ण ने कहा कि मुझे इस बारे में ज्ञान नहीं था। मैं अपनी गलती को सुधारना चाहता हूँ।

तब इंद्रदेव ने कर्ण को 15 दिनों के लिए पृथ्वी पर भेजा। ताकि वह अपने पितरों का पिंडदान और तर्पण कर सकें। कारण ने पृथ्वी पर आकर विधिवत रूप से श्राद्ध कर्म किया। और भी वह स्वर्ग लोक आये। जहाँ उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुयी। तभी से श्राद्ध कर्म करने का विधान शुरू हो गया।

दसवें श्राद्ध की विधि

गया में श्राद्ध करने का विधान है। लेकिन यदि ऐसा संभव नहीं हो पाता है तो घर पर भी श्राद्ध कर सकते है। इसमें पितरों को तृप्त करने हेतु पिंडदान और तर्पण किया जाता है। साथ भी ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है। श्राद्ध तिथि के दिन सबसे पहले सूर्य निकलने से पहले स्नान करना चाहिए। इसके बाद साफ वस्त्र पहनना चाहिए। इसके बाद ही श्राद्ध कर्म करना चाहिए और दान देना चाहिए। इस गाय,कुत्ता ,चींटी और कौआ को भी भोजन

कराना चाहिए। क्योंकि शास्त्रों में ऐसा माना जाता है कि इन्हे भोजन कराने से पितरों की आत्मा भी तृप्त हो जाती है। और वह आशीर्वाद देते है।

दसवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

बुजुर्ग कहते है कि कौवे का घर पर आना शुभ नहीं होता है। इसलिए कौआ को घर पर बैठने पर वहां से हटा दिया जाता है। परन्तु पितृ पक्ष के समय कौवे को खाना खिलाना शुभ माना जाता है। इसके पीछे भी पौराणिक मान्यता है कि यदि पितृ पक्ष में कौआ ने खाना खा लिया तो इससे पितृ तृप्त हो जाते हैं। कौवे द्वारा किया गया भोजन सीधे पितरों को मिलता है। इसलिए श्राद्ध के समय कौवे को भोजन कराया जाता है। ये पौराणिक कथा के अनुसार सबसे पहले इन्द्र के पुत्र जयन्त ने कौवे का रूप धारण किया था। जब भगवान श्रीराम ने धरती पर अवतार लिया तब जयंत ने कौए के रूप में माता सीता के पैर पर चोंच मारा था। उसके ऐसा करने पर भगवान श्रीराम ने तिनके का बाण चलाया और जयंत की आंख फोड़ दी। जब जयंत ने इसने इस कार्य के लिए माफी मांगी तो राम जी ने उसे वरदान दिया कि तुम्हें अर्पित किया गया भोजन पितरों को मिलेगा। तब से श्राद्ध के दौरान कौवों को भोजन कराने की परंपरा चली आ रही है। इस कारण ही श्राद्ध पक्ष में कौवों को सबसे पहले भोजन कराया जाता है।

दसवें श्राद्ध में क्या करें

- पितरों के निमित गीता पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से पितरों को मोक्ष मिलता है।
- यदि संभव हो सके तो श्राद्ध कर्म को नदी के किनारे करना चाहिए। शास्त्रों में नदी के किनारे किया गया श्राद्ध कर्म शुभ माना जाता है।
- अपने पितरों की पसंद का भोजन बनाकर उसे ब्राह्मण को खिलाना चाहिए और अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्हें दान देकर खुश करना चाहिए।
- पितरों को जल देते समय आप इस मंत्र का उच्चारण भी कर सकते है। "अस्मत्पितामह वसुरूपत् तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जलं वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः"

दसवें श्राद्ध में क्या न करें

- श्राद्ध कर्म के समय लहसुन,प्याज का सेवन नहीं करना चाहिए। साथ ही मांस , मदिरा का भी सेवन नहीं करना चाहिए। शाकाहारी भोजन में भी खीरा, सरसों का साग और कद्दू की सब्जी नहीं बनानी चाहिए। शुभ कार्य करने से भी बचना चाहिए। आप इसे बाद में कर सकते हैं।

एकादशी श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने वालें को वेदों के ज्ञान की प्राप्ति होती है...

श्राद्ध के ग्यारहवें दिन एकादशी रहती है। इस दिन संन्यासियों का श्राद्ध करना शुभ माना गया है। इसके अलावा जिनकी मृत्यु ग्यारस के दिन होती है उनका श्राद्ध इस दिन किया जाता है। इस दिन श्राद्ध कर्ता को वेदों के ज्ञान की प्राप्ति होती है।

पितृ पक्ष में अपने पूर्वजों का श्राद्ध करना अनिवार्य माना गया है। ऐसा माना जाता है कि हमारी पिछली तीन पीढ़ियों की आत्माएं स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य स्थित 'पितृ लोक' में निवास करती हैं। पितृलोक में अंतिम तीन पीढ़ियों का ही श्राद्ध किया जा सकता है। इस दौरान पितरों का तर्पण करने और पिंडदान करने से उनकी आत्मा को शांति प्राप्त होती है और वह तर जाते है। पितर प्रसन्न होते है और अपने वंश को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। इसलिए श्राद्ध का महत्त्व अधिक होता है। पितृपक्ष में श्राद्ध नहीं करने से पितृदोष लग जाता है। जिससे सुख समृद्धि, धन संतान सभी चीजों की हानि होती है।

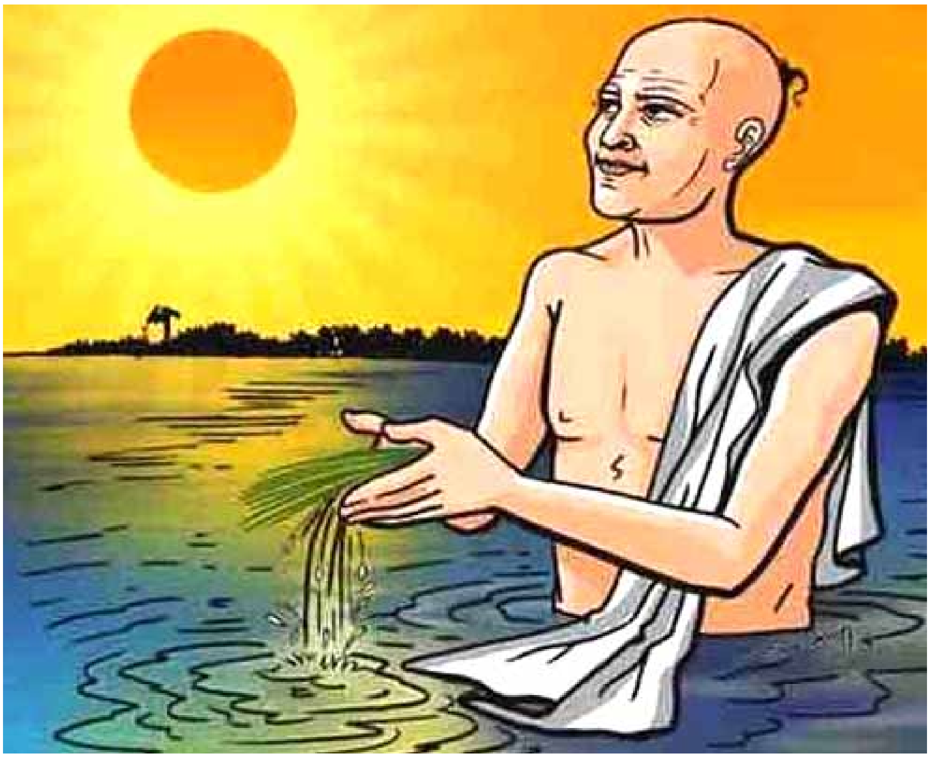

ग्यारहवें श्राद्ध की कहानी

गया में श्राद्ध कर्म करने से जुड़ी एक कथा है जिसके अनुसार एक राजा थे जिनका नाम गया था। वह भगवान विष्णु के भक्त थे। एक बार वह शिकार के लिए वन में गए। उनका तीर हिरन को लगने के बजाय एक ब्राह्मण को लग गया। तब ब्राह्मण ने उन्हें श्राप दिया तुमने राजा होकर कार्य तो असुर वाले किये है। इसलिए मई तुम्हे श्राप देता हु कि तुम एक असुर बन जायो। श्राप से राजा गयासुर बन गए। लेकिन उनकी प्रवृति आसुरी नहीं थी। वह भगवान् विष्णु का स्मरण करते रहते। वह अपना सभी राज छोड़कर एक जंगल में चले गए। गयासुर ने जंगल में घोर तपस्या की और ब्रह्माजी को प्रसन्न किया। ब्रह्मा जी से उसने वरदान माँगा कि उसके दर्शन मात्र से पापी से पापी लोगों का उद्धार हो जाए। ब्रह्मा जी ने वरदान दे दिया। आप असुरों को तो ख़ुशी मिल गयी। वह पाप करते गए और अंत में आकर गयासुर को देखकर अपने सभी पापों से मुक्ति पा लेते। ऐसा होने से सृष्टि के कार्य में बाधा आने लगी सभी पापी स्वर्ग जाने लगे। तब समस्त देवता भगवान विष्णु के पास गए और उनसे सारी समस्या बताई।

तब भगवान विष्णु गयासुर के पास गए और उसे कहा की मुझे यज्ञ करने के लिए कोई पवित्र स्थान बताओ। इस पर गयासुर ने कहा कि प्रभु जिस व्यक्ति के दर्शन मात्र से ही पापी से पापी लोग मुक्ति पा लेते है। तो उससे ज्यादा पवित्र स्थान क्या होगा? इसलिए प्रभु आप मेरे ऊपर ही हवन करें। इसके बाद भगवान विष्णु ने गयासुर के वक्षस्थल पर यज्ञ कुंड रखा और यज्ञ के साथ उसे मारने के कई प्रयास भी किए गए लेकिन उसकी मृत्यु नहीं हुई। ऐसा देखकर भगवान विष्णु ने गयासुर को कहा कि तुमने कोई पाप नहीं किये है परन्तु तुम्हारे कारण पापी-असुर भी स्वर्ग में प्रवेश कर रहे हैं। ऐसा होने से स्वर्ग-नरक का संतुलन बिगड़ रहा है इसलिए अब मुझे तुम्हें मारना होगा। तब गयासुर ने कहा कि हे प्रभु यदि आप मेरी पूजा से प्रसन्न हैं तो मेरी मात्र दो इच्छाएं पूर्ण दीजिए तो मेरी मृत्यु स्वतः ही हो जाएगी। ऐसा करने से अपने ऊपर में मेरी मृत्यु का आरोप भी नहीं होगा। भगवान विष्णु ने उससे इच्छाओं के विषय में पूछा। गयासुर ने पहली इच्छा बताई कि आपके हवन के समय जितने भी देवी-देवता प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मुझमें वास कर रहे थे। वह सभी जब तक सूरज-चांद रहेंगे मुझमें वास करते रहेंगे। भगवान विष्णु ने तथास्तु कहा कर दूसरी इच्छा पूछी ?

गयासुर ने कहा कि वैसे तो श्राद्ध-पिंडदान करने से पितरों को मुक्ति मिल जाती है। परन्तु यदि कोई नहीं कर पाता है या फिर यह कार्य करने में समर्थ नहीं है तो यदि वह मेरे धाम आये और सच्चे मन से कहे कि हे भगवान मेरे पितरों को मुक्ति प्रदान करें। तो आप उनके पितरों को मुक्ति देगें। भगवान विष्णु ने तथास्तु कहा। इसके बाद ही गयासुर ने अपना शरीर त्याग दिया। तभी से यह मान्यता है कि गया में किया गया श्राद्ध और पितरों की मुक्ति हेतु प्रार्थना भी कर ली जाए तो उन्हें मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

ग्यारहवें श्राद्ध की विधि

- श्राद्ध वाले दिन सबसे पहले स्नान करके साफ वस्त्र पहनें।
- शास्त्रों के अनुसार किसी योग्य ब्राह्मण को बुलाकर ही श्राद्ध कर्म करना चाहिए। ताकि आप विधिवत तरीके से श्राद्ध कर सकें।
- श्राद्ध में बैठने के लिए कुशा के आसन का ही उपयोग करना चाहिए। साथ ही कुशा से बनी अगूंठी पहननी चाहिए।
- इसके बाद पिंडदान करना चाहिए। जो कि जौ, तिल और चावल से बना होता है। इसके बाद पितरों को तर्पण देना चाहिए।
- श्राद्ध कर्म होने के बाद ब्राह्मण को भोजन करना चाहिए और उसके बाद उन्हें यथाशक्ति दान देकर संतुष्ट करना चाहिए।
- भोजन का कुछ भाग गाय, कौआ, कुत्ता और चींटी के लिए भी निकालना जरुरी होता है।
- उन्हें भोजन कराते वक्त अपने पितरों का स्मरण कर उन्हें भी भोजन ग्रहण करने के लिए कहना चाहिए।
- इस तरह से श्राद्ध की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है।
- ब्राह्मण भोजन और श्राद्ध कर्म पूर्ण होने के बाद ही परिवारवालों को भोजन करना चाहिए।

ग्यारहवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

शास्त्रों में बताया गया है कि देवताओं को प्रसन्न करने से पूर्व अपने पितरों को प्रसन्न करना चाहिए। क्योंकि उनके रुष्ट होने पर कुंडली में सबसे बड़ा दोष पितृ दोष लग जाता है। इसलिए श्राद्ध के समय पितरों का श्राद्ध आवश्यक माना गया है।

द्वादशी श्राद्ध

जरूरतमंदों लोगों को धन और अन्न दान करने से मिलता है पुण्य...

भाद्रपद मास की पूर्णिमा से लेकर आश्विन मास की अमावस्या तक की अवधि को पितृ पक्ष कहते है। इस बार पितृ पक्ष 17 सितंबर को शुरू हो रहा है जो कि आगामी 2 अक्टूबर तक चलेगा। जानें द्वादशी का श्राद्ध कब है, शुभ मुहूर्त और इसकी विधि क्या है।

द्वादशी श्राद्ध पूजा विधि

पितृ पक्ष के द्वादशी श्राद्ध के दौरान पितरों के निमित्त, तिल के तेल का दीपक जलाएं और सुगंधित धूप जलाएं। इसके बाद जल में मिश्री और तिल मिलाकर तर्पण करें। सही विधि से जल अर्पित करें। ऐसा करने से पितरों की आत्मा तृप्त होती है। साथ ही इस दिन दान-पुण्य करने का भी विशेष महत्व है। ऐसे में आप द्वादशी श्राद्ध के दिन अन्न और धन का दान जरूरतमंदों को कर सकते हैं।

आप द्वादशी श्राद्ध पर पितरों के निमित्त भागवत गीता के दसवें अध्याय का पाठ भी कर सकते हैं। ऐसा करने से पितरों का आशीर्वाद आपके ऊपर बना रहता है। इसके साथ ही श्राद्ध कर्म पूर्ण होने के बाद दस ब्राह्मणों को भोजन कराएं। यदि आप ऐसा करने में असमर्थ हैं तो इसके स्थान पर आप केवल 1 ब्राह्मण को भी भोजन करवा सकते हैं। साथ ही इस दिन कौआ, गाय, कुत्ता और चीटियों के लिए भी भोजन जरूर निकालें।

द्वादशी श्राद्ध का महत्व

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, द्वादशी श्राद्ध परिवार के उन दिवंगत सदस्यों के लिए किया जाता है, जिनकी मृत्यु द्वादशी तिथि पर हुई हो। इस दिन शुक्ल पक्ष या कृष्ण पक्ष दोनों ही पक्षों की द्वादशी तिथि का श्राद्ध किया जा सकता है। इसके अलावा जो लोग मृत्यु से पहले सन्यास ग्रहण कर लेते हैं, उनके श्राद्ध के लिए भी द्वादशी तिथि उपयुक्त मानी गई है। द्वादशी श्राद्ध को बारस श्राद्ध के नाम से भी जाना जाता है।

आइए जानते हैं द्वादशी तिथि श्राद्ध के बारे में...

1. जिन लोगों का देहांत इस दिन अर्थात तिथि अनुसार कृष्ण या शुक्ल दोनों पक्षों में से किसी भी पक्ष की द्वादशी तिथि हो हुआ है, उनका श्राद्ध इस दिन किया जाता है। जो कि इस बार 00 अक्टूबर को द्वादशी श्राद्ध रहेगा।
2. द्वादशी तिथि को उन लोगों का श्राद्ध भी किया जाता है जिन्होंने स्वर्गवास के पहले संन्यास ले लिया था। उनका देहांत किसी भी तिथि को हुआ हो परंतु श्राद्ध पक्ष की द्वादशी तिथि को उनका श्राद्ध जरूर करना चाहिए। इस तिथि को 'संन्यासी श्राद्ध' के नाम से भी जाना जाता है।
3. एकादशी और द्वादशी में वैष्णव संन्यासी का श्राद्ध करते हैं। अर्थात् इस तिथि को उन लोगों का श्राद्ध किए जाने का विधान है, जिन्होंने संन्यास लिया हो।
4. इस दिन पितरगणों के अलावा साधुओं और देवताओं का भी आह्वान किया जाता है।
5. इस दिन संन्यासियों को भोजन कराया जाता है या भंडारा रखा जाता है।
6. इस श्राद्ध में तर्पण और पिंडदान के बाद पंचबलि कर्म भी करना चाहिए।
7. इस तिथि में 7 ब्राह्मणों को भोजन कराने का विधान है।

त्रयोदशी श्राद्ध

इस दिन श्राद्ध करने से ऐश्वर्य और बुद्धि प्राप्त होती है...

तेरहवां श्राद्ध के दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु त्रयोदशी को हुई होती है। इसके अलावा नवजात बच्चों की मृत्यु का श्राद्ध भी इस दिन किया जाता है। इस दिन श्राद्ध कर्ता को दीर्घायु, ऐश्वर्य, श्रेष्ठ बुद्धि आदि की प्राप्ति होती है।

तेरहवें श्राद्ध का महत्व : श्राद्ध पक्ष को पितृ पक्ष और महालय भी कहते हैं। पितृ पक्ष के समय हमारे पूर्वज सूक्ष्म रूप से पृथ्वी पर आते है। और उनके नाम से किये गए तर्पण और पिंडदान को स्वीकार करते हैं। ऐसा करने से पितरों की आत्मा को शांति प्राप्त होती है साथ ही उन्हें मोक्ष भी प्राप्त होता है। पितर प्रसन्न होकर अपने वंश को आशीर्वाद देते है। जिससे घर में सुख शांति और समृद्धि बनी रहती है। वंश आगे बढ़ता है। इसलिए देवताओं से पहले पितृ पूजा को महत्त्व दिया गया है। श्राद्ध नहीं करने से पितृ दोष लगता है जो अत्यंत दुखदाई होता है। जिस भी परिवार में पितृ दोष रहता है। वह धन, सम्पति, वैभव से विहीन रहता है। उसका कुल नहीं बढ़ता। साथ ही परिवार में सदैव क्लेश बना रहता है। इसलिए श्राद्ध कर्म करना जरुरी है।

त्रयोदशी श्राद्ध की कहानी

श्राद्ध की कहानी महाभारत काल से चली आ रही है। जब से श्राद्ध की शुरुआत हुयी थी। तभी से सम्पूर्ण जगत इस श्राद्ध को करता आ रहा है। और अपने पितरों को मोक्ष की प्राप्ति करता आ रहा है। कथा के अनुसार जब कर्ण की मृत्यु हुयी तो उनकी आत्मा स्वर्ग पहुंची। वहां पहुंच कर जब उन्हें भूख लगी तो उन्हें खाने में सोना और चांदी दिया गया। यह देखकर कर्ण ने कहा कि यह क्या है इसे कैसे खाया जा सकता है ? इस पर देवराज इंद्र ने उन्हें बताया कि उन्होंने अपने जीवन में लोगों और जरूरतमंद व्यक्तियों को केवल सोने और चाँदी का दान दिया है। उन्होंने कभी भी भोजन का दान किसी को भी नहीं दिया है। इस कारण उनपर पितृ ऋण शेष है। यह सुनकर कर्ण ने कहा की उन्हें उनके पूर्वजों के विषय में कुछ पता नहीं है। जिस कारण वह पितृ ऋण से मुक्त नहीं हो पाया। कर्ण ने अपनी गलती को सुधारने के लिए इंद्र से विनती की। तब इन्द्र ने उन्हें 15 दिनों के लिए पृथ्वी पर भेजा। पृथ्वी पर आकर कर्ण के अपने पितरों के निमित तर्पण किया और भोजन कराया। इसके बाद वह मोक्ष को प्राप्त हुए। तभी से श्राद्ध करने की प्रथा चली आ रही है।

त्रयोदशी श्राद्ध की विधि

- जब भी श्राद्ध करें तो किसी योग्य ब्राह्मण को बुलाकर श्राद्ध करना चाहिए। ताकि साल में एक बार आने वाला इस दिन का कार्य विधिवत तरीके से पूर्ण हो सके।
- श्राद्ध वाले दिन सुबह स्नान करके साफ वस्त्र धारण करना चाहिए।
- इसके बाद श्राद्ध का भोजन एक थाली में रखना चाहिए और उस भोजन को अपने मृत परिजन की फोटो के सामने रखना चाहिए। साथ ही भोजन का कुछ भाग गाय, चींटी, कुत्ता और कौआ के लिए निकालना चाहिए।
- इसके बाद अपने पूर्वजों का स्मरण कर उन्हें भोजन ग्रहण करने का आग्रह करना चाहिए। इसके बाद जल से तर्पण करना चाहिए।
- श्राद्ध कर्म होने के बाद घर पर आमंत्रित किये गए ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए।
- याद रखिये की आप ब्राह्मण को जो भोजन खिला रहे है वह लोहे की थाली में ना दें। श्राद्ध कार्य में लोहे की सामग्री को वर्जित माना गया है।
- फिर ब्राह्मण को भोजन कराकर उन्हें यथाशक्ति दान और दक्षिणा देनी चाहिए। इसके बाद भोजन का निकाला गया भाग गाय, कुत्ते और कौवे को खिलाना चाहिए।
- फिर बाद में परिवार परिवार के सभी सदस्यों को भोजन करना चाहिए।

तेरहवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

श्राद्ध पक्ष पूर्वजों का सम्मान करने के लिए होते हैं। इस दौरान लोग अपने दिवंगत प्रियजनों हेतु प्रार्थना करते हैं। लोग अपने पूर्वजों के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन और वस्त्र दान करते है। ब्राह्मणो के पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लेते है। ऐसा भी माना जाता है कि जो व्यक्ति श्राद्ध करता है। और उसके पूर्वजों द्वारा आशीर्वाद में उन्हें जो चीजे प्राप्त होती है वह कभी नष्ट नहीं होती है।

त्रयोदशी श्राद्ध में क्या करें

श्राद्ध कर्म को विधिविधान के साथ करना चाहिए तभी यह पूर्ण होता है और इसका फल मिल पाता है। श्राद्ध के दौरान अपने पूर्वजो को याद करना चाहिए साथ ही उनके प्रति श्राद्ध भाव रखना चाहिए। ताकि उनकी आत्मा यह देखकर प्रसन्न हो और उन्हें शांति मिल सके। यदि संभव हो सके तो श्राद्ध को किसी नहीं के किनारे करना छाइये। नहीं के किनारे श्राद्ध करना पवित्र माना गया है।

त्रयोदशी श्राद्ध में क्या न करें

श्राद्ध कर्ता को बाल,दाढ़ी और नाख़ून नहीं कटवाने चाहिए। ऐसा करने से धन की हानि हो जाती है। शाम और रात के समय श्राद्ध कर्म नहीं करना चाहिए। ऐसा करना शास्त्रों में वर्जित माना जाता है। श्राद्ध पक्ष के दौरान कोई भी शुभ कार्य जैसे विवाह, जनेऊ, गृह प्रवेश आदि नहीं करना चाहिए। नए कपडे भी नहीं खरीदने चाहिए और ना ही नए कपडे पहनने चाहिए। श्राद्ध के समय ब्राह्मण के भोजन करने से पहले भोजन नहीं करना चाहिए। श्राद्ध के दौरान यदि कौआ आपके घर आता है तो उसे भागना नहीं चाहिए बल्कि उसे भोजन कराना चाहिए। क्योंकि माना गया है कि पितर कौआ के रूप में भोजन ग्रहण करने आते है।

चतुर्दशी श्राद्ध

करने वाले व्यक्ति को किसी प्रकार के अज्ञात भय या डर का खतरा नहीं होता है...

चौदहवें श्राद्ध के दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु चतुर्दशी को हुई होती है। इसके अलावा इस दिन उनका भी श्राद्ध किया जाता है जिनकी अकाल मृत्यु, एक्सीडेंड हुआ होता है। इस दिन श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को किसी प्रकार के अज्ञात भय या डर का खतरा नहीं होता है।

चौदहवें श्राद्ध का महत्व : शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध का बहुत अधिक महत्त्व होता है। श्राद्ध पक्ष में पितरों की पूजा को देवों की पूजा से भी अधिक स्थान दिया गया है। श्राद्ध ही एक ऐसा माध्यम होता है कि जिसमे पितरों के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किया जा सकता है और उनके लिए तर्पण कर पितरों की आत्मा को शांति प्राप्त करा सकते हैं।

चतुर्दशी श्राद्ध की कहानी

गरुण पुराण में श्राद्ध से सम्बंधित कथा प्रचलित है जिसके अनुसार भीष्म पितामह और युधिष्ठिर के मध्य संवाद का वर्णन मिलता है। जिसमे भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म और उसके महत्व को बतलाया था। भीष्म पितामह ने बताया कि सर्व प्रथम श्राद्ध के विषय में अत्रि मुनि द्वारा महर्षि निमि को ज्ञान प्राप्त हुआ था। क्योंकि उनके पुत्र की आकस्मिक मृत्यु हुयी थी। वह पुत्र वियोग से दुखी होकर ने अपने पूर्वजों का आह्वान करने लगे । निमि द्वारा ऐसा करने पर उनके पूर्वज प्रकट हुए और और निमि को बताया कि - 'आपका पुत्र पितृ देवों के बीच पहले ही स्थान ले चुका है। निमि आपने अपने दिवंगत पुत्र की आत्मा को भोजन कराने और पूजा करने का कार्य किया है। यह सब ठीक उसी प्रकार है जैसे आपने पितृ यज्ञ किया था।" तभी से श्राद्ध करने परंपरा चलने लगी। और श्राद्ध को सनातन धर्म के एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान में स्थान प्राप्त हो गया। इसके बाद से महर्षि निमि ने श्राद्ध कर्म करना आरम्भ कर दिया। फिर ऋषि-मुनियों ने भी श्राद्ध कर्म शुरू कर दिए । धीरे धीरे सभी मनुष्य श्राद्ध करने लगे और अपने पूर्जवों को मोक्ष की प्राप्ति कराकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करने लगे।

चौदहवें श्राद्ध की विधि श्राद्ध किसी योग्य ब्राह्मण को बुलाकर कराना चाहिए। श्राद्ध के दिन सबसे पहले स्नान करना चाहिए। उसके बाद साफ वस्त्र धारण करना चाहिए। फिर अपने मन में श्रद्धा भाव रखते हुए अपने पूर्वजों का स्मरण करना चाहिए। इसके बाद दोपहर में अपने मृत परिजन की फोटों को एक पाटे पर रखना चाहिए। फिर उनके सामने भोजन की थाली रखनी चाहिए और अपने पूर्जवों को भोजन ग्रहण करने का आग्रह करना चाहिए। इसके बाद तर्पण करना चाहिए। यह होने के बाद भोजन का कुछ अंश गाय, कुत्ते,कौआ और चींटी के लिए निकालना चाहिए। फिर ब्राह्मण को विनम्रता के साथ भोजन कराना चाहिए। और अपनी यथाशक्ति अनुसार उन्हें दान दक्षिणा देकर संतुष्ट करना चाहिए। फिर निकाले गए भोजन को गाय, कुत्ते, कौआ, चींटी को खिलाना चाहिए। इसके बाद घर के सभी लोगों को भी भोजन करना चाहिए।

चौदहवें श्राद्ध से जुड़े रहस्य

गरुड़ पुराण में पितृपक्ष के समय कौए को भोजन कराना सबसे अच्छा माना गया है। श्राद्ध पक्ष के दौरान कौए का इतना अधिक महत्व होने का भी एक खास कारण है। शास्त्रों के अनुसार यमराज ने कौए को वरदान दिया था कि तुम्हें दिया गया भोजन पूर्वजों की आत्मा को शांति प्रदान करेगा। तभी से यह प्रथा चली आ रही है। पितृ पक्ष में कौवे को खाना खिलाने से यमलोक में पितरों को शांति मिलती है। शास्त्रों में यह भी बताया गया है कि श्राद्ध के समय जितना महत्वपूर्ण ब्राह्मण को भोजन कराना होता है उतना ही आवश्यक कौए को भोजन कराना होता हैं।

चौदहवें श्राद्ध में क्या करें

श्राद्ध कर्म दोपहर के समय ही करना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार दोपहर के समय ही पितर धरती पर अपने घर आते है। इसलिए दोपहर के समय ही श्राद्ध करने का महत्त्व है। श्राद्ध कर्म करने वाले व्यक्ति को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। व्यक्ति को किसी को भी अपशब्द नहीं बोलना चाहिए। मन में अपने पितरों के लिए श्रद्धा भाव रखना चाहिए। पितृ पक्ष के दौरान शुभ कार्य करने से भी बचना चाहिए। कुशा के आसन का ही इस्तेमाल करना चाहिए और कुशा से बनी अंगूठी पहननी चाहिए।

चौदहवें श्राद्ध में क्या न करें

श्राद्ध के समय किसी को भी अपशब्द नहीं बोलना चाहिए। और अच्छे मन से श्राद्ध कर्म करना चाहिए। यदि आप शांत और श्रद्धा पूर्वक श्राद्ध कर्म नहीं करते है तो पितर रुष्ट हो सकते है। जिससे पितृ दोष भी लग सकता है। बता दें कि पितृ दोष लगने से परिवार को धन की हानि होती है। परिवार का कोई न कोई सदस्य सदैव बीमार रहता है। इसलिए इससे बचना चाहिए। इसके अलावा ब्राह्मण को भोजन के लिए लोहे के बर्तनों का इस्तेमाल भी नहीं करना चाहिए। उन्हें तांबे, चाँदी और पत्तल व् अन्य किसी पात्र में भोजन करना चाहिए।

सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध

इस विधि से करें पितरों की विदाई, मिलेगा सुख-समृद्धि का आशीर्वाद

पितृ पक्ष में आने वाली अमावस्या को पितरों की कृपा प्राप्ति के लिए विशेष माना गया है। यदि आप इस तिथि पर पितरों के निमित्त पूरे विधि-विधान से श्राद्ध कर्म करते हैं, तो इससे उनकी आत्मा को शांति मिल सकती है और वह तृप्त होकर पितृलोक को लौटते हैं।

आश्विन कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तिथि तक पूर्वजों की आत्मशांति के लिए श्रद्धा के साथ विधि-विधानपूर्वक श्राद्ध करने की परंपरा है। आश्विन मास की अमावस्या तिथि के दिन सर्व पितृ विसर्जन करने का विधान है। इस दिन किए गए श्राद्ध से पितृगण प्रसन्न होकर जीवन में सुख-सौभाग्य व खुशहाली का आशीर्वाद देते हैं। सनातन धर्म में हिन्दू मान्यता के अनुसार मुख्य रूप से 5 ऋण माने गए हैं। प्रथम देवऋण, द्वितीय ऋषिऋण, तृतीय-पितृऋण, चतुर्थ मातृऋण, पंचम- मानवऋण इन ऋणों से मुक्ति पाने के लिए समय-समय पर विधि-विधानपूर्वक धार्मिक अनुष्ठान करते रहना चाहिए।

पौराणिक मान्यता के आधार पर मंत्र, स्तोत्र एवं पितृसूक्त का नित्य पाठ करने से पितृबाधा का शमन हो जाता है। यदि नित्य पठन संभव न हो तो प्रत्येक माह की अमावस्या तिथि के दिन अवश्य करना चाहिए। साथ ही अमावस्या तिथि के दिन अपने पूर्वजों के नाम पर श्वेत वस्त्र, दूध, चीनी, दक्षिणा किसी योग्य ब्राह्मण या किसी नजदीक मंदिर में दान कर देना चाहिए। पितृपक्ष के अमावस्या के दिन पीपल के वृक्ष की 108 परिक्रमा करने पर पितृदोष की शांति होती है। प्रत्येक शुभ व मांगलिक आयोजन पर भी पितरों को निमंत्रित कर पूजा करने की धार्मिक मान्यता है। इसके अलावा जिनकी कुंडली में पितृदोष हो उनको आज के दिन अपने पितरों से माफी मांगते हुए श्राद्धकर्म, तर्पण, ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। उससे उनकी कुंडली में व्याप्त पितृ दोष का असर कम होता है।

पितृपक्ष में किसी कारणवश माता-पिता, दादा-दादी एवं अन्य परिजनों का श्राद्ध न कर पाए हो, उन्हें आज के दिन अमावस्या तिथि पर श्राद्ध करके पितृऋण से मुक्ति पानी चाहिए। आज अमावस्या तिथि के दिन श्राद्ध करने से अपने कुल व परिवार के सभी पितरों का श्राद्ध मान लिया जाता है। आज के दिन त्रिपिण्डी श्राद्ध करने का भी विशेष महत्व है। त्रिपिण्डी में तीन पूर्वज-पिता, दादा एवं परदादा को तीन देवताओं का स्वरूप माना गया है। पिता को वसु, दादा को रुद्र देवता तथा परदादा को आदित्य देवता के रूप में माना जाता है। श्राद्ध के समय यही तीन स्वरूप अन्य सभी पूर्वजों के प्रतिनिधि माने गए हैं।

सर्वपितृ अमावस्या शुभ मुहूर्त

आश्विन माह की अमावस्या तिथि 01 अक्टूबर, 2024 को रात्रि 09 बजकर 39 मिनट पर शुरू होगी। वहीं इस तिथि का समापन 03 अक्टूबर को रात्रि 12 बजकर 18 मिनट पर होगा। ऐसे में सर्वपितृ अमावस्या बुधवार, 02 अक्टूबर को मनाई जाएगी। इस दिन अन्य मुहूर्त कुछ इस प्रकार रहने वाले हैं ।

कुतुप मुहूर्त : 11 बजकर 46 मिनट से 12 बजकर 34 मिनट तक

रौहिण मुहूर्त : 12 बजकर 34 मिनट से 13 बजकर 21 मिनट तक

श्राद्धकृत्य में 1, 3, 5 या 16 योग्य ब्राह्मणों को अमावस्या तिथि पर निमंत्रित करके उन्हें स्वच्छतापूर्वक भोजन करवाने की धार्मिक मान्यता है। जिसमें दूध व चावल से बने खीर अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त दिवंगत परिजनों, जिनका हम श्राद्ध करते हैं, उनके पसंद का सात्विक भोजन ब्राह्मण को करवाना चाहिए। ब्राह्मण को भोजन करवाने के पूर्व देवता, गाय, कुत्ता, कौआ व चींटी के लिए श्राद्ध के बने भोजन को पत्ते पर निकाल देना चाहिए, जिसे पंचबलि कर्म कहते हैं। पंचबलि कर्म में कौए के लिए निकाला गया भोजन कौओं को, कुत्तों के लिए निकाला गया भोजन कुत्तों को और शेष निकाला गया। भोजन गाय को खिलाने के पश्चात् निमंत्रित ब्राह्मण को भोजन करवाना चाहिए। श्रद्धकृत्य में लोहे का बर्तन इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। मान्यता है कि श्राद्ध अपने ही घर पर अथवा नदी या गंगा तट पर करना चाहिए, दूसरों के घर पर किया गया श्राद्ध फलदायी नहीं होता।

पंडित ऋषि द्विवेदी ने बताया कि आज सायंकाल मुख्य द्वार पर भोज्य सामग्री रखकर दीपक जलाया जाता है। जिससे पितृगण तृप्त व प्रसन्न रहें और उन्हें जाते समय प्रकाश मिले, जो व्यक्ति विधि-विधानपूर्वक श्राद्ध करने में असमर्थ हों। उन्हें चाहिए कि प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् काले तिलयुक्त जल से दक्षिण दिशा की ओर मुख करके तिलांजलि देकर अपने पितरों को याद करके उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करनी चाहिए तथा अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर सूर्यादि दिक्पालों से यह कहकर कि मेरे पास धन, शक्ति एवं अन्य वस्तुओं का अभाव है, जिसके फलस्वरूप मैं श्राद्धकृत्य नहीं कर पा रहा हूं। हाथ जोड़कर श्रद्धा के साथ पितृगणों को प्रणाम करना भी पितरों की संतुष्टि मानी गई है।

पंडित ऋषि द्विवेदी का कहना है कि आजकल लोग अपनी कुंडली में पितृ दोष की बात और परेशानी लेकर आते हैं, लेकिन पितृ दोष अधिकांश कुंडलियों में देखने को मिलता है। इसकी बड़ी वजह यह है कि आपके आपके पिता या उनके पिता के द्वारा किसी भी 15 दिन के पितृपक्ष के दौरान साथ देकर वह तर्पण ना करने की वजह से पितृ दोष का असर अक्सर घर के किसी अन्य सदस्य की कुंडली में भी देखने को मिलता है। इसलिए यह उत्तम वक्त होता है जब पितृपक्ष के अंतिम दिन अश्विन अमावस्या को अपने अज्ञात पितरों की शांति और उन को प्रसन्न करने के लिए उनका तर्पण साथ किया जाता है।

दिनभर लैपटॉप पर करते हैं काम तो डेली रूटीन में शामिल करें, आंखें रहेंगी हेल्दी

आंखें हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है। आज के समय में बहुत सारे लोग दिन भर कंप्यूटर और लैपटॉप पर काम करते हैं और इसके साथ फोन भी चलाते हैं। जिसके कारण स्क्रीन टाइमिंग काफी लंबी हो जाती है और इसका सीधा असर हमारी आंखों पर पड़ता है। ऐसे में आंखें कमजोर होती हैं और चश्मा लग जाता है। इसलिए आप आंखों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए आप डेली रूटीन में कुछ योगासन कर सकते हैं। इन योगासन को करने से न सिर्फ आप शारीरिक और मानसिक तौर पर फिट रहेंगे, बल्कि आपकी आंखों को रोशनी भी बनी रहेगी।

शीर्षासन

आंखों को हेल्दी रखने में शीर्षासन भी काफी लाभकारी माना जाता है। इस योगासन को रोजाना करने से ब्रेन, त्वचा और बालों को भी फायदा मिलता है। हालांकि यह योगासन थोड़ा सा कठिन है और इसके लिए आपको अभ्यास करना पड़ेगा। इससे शरीर का संतुलन भी बनता है और श्वसन तंत्र को भी फायदा मिलता है।

भ्रामरी प्राणायाम

पूरा दिन कंप्यूटर पर काम करने से आंखों पर इसका असर पड़ता है। ऐसे में आंखें कमजोर होती हैं और चश्मा लग जाता है। इसलिए आप आंखों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए आप डेली रूटीन में कुछ योगासन कर सकते हैं।

आंखों की रोशनी को अच्छा रखने के लिए आप रोजाना भ्रामरी प्राणायाम का अभ्यास कर सकते हैं। भ्रामरी प्राणायाम का नियमित अभ्यास करने से एंग्जायटी और स्ट्रेस दूर होता है और दिमाग को रिलैक्स दिलाने में मदद करता है। इस प्राणायम को करने से एकाग्रता बढ़ती है और दिल को भी फायदा मिलता है। इसको करने से सिरदर्द, माइग्रेन से छुटकारा मिलने के साथ नींद के पैटर्न में सुधार होता है। अगर आप भी पूरा दिन लैपटॉप या कंप्यूचर पर काम करते हैं, तो योगासन के अभ्यास के साथ आप आंखों को हेल्दी रखने के लिए 20-20-20 रूल को फॉलो कर सकते हैं। इसके लिए आपको हर 20 मिनट के बाद 20 फुट की दूरी पर रखी चीज को 20 सेकेंड तक एकटक देखना है। इससे आपकी आंखों को रिलैक्स मिलेगा। इसके अलावा आंखों को रिलैक्स करने के और हेल्दी रखने के लिए काम के बीच में आंखों पर पामिंग कर सकते हैं। इसके लिए हथेलियों को आपस में रब करें और गर्माहट होने पर हथेलियों को आंखों के ऊपर रखें। इस प्रोसेस को 2-4 बार दोहराने से काफा आराम मिलता है।

सर्वांगासन

आंखों को स्वस्थ रखने के लिए आप अपनी डेली रूटीन में सर्वांगासन शामिल कर सकते हैं। इस योगासन का नियमित रूप से अभ्यास करने से सिर की और ब्लड सर्कुलेशन होता है, जिससे आंखों को फायदा मिलता है और स्ट्रेस भी दूर होता है। इसके अलावा भी सर्वांगासन करने के अन्य कई फायदे होते हैं।

द. भारत में स्थित भगवान विष्णु के फेमस मंदिर...

दक्षिण भारत में अन्य मंदिरों के अलावा पवित्र और विश्व प्रसिद्ध विष्णु मंदिर भी मौजूद हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, भगवान विष्णु को समर्पित इन मंदिरों में दर्शन मात्र से भक्तों की सभी मुरादें पूरी होती हैं। जब भी भारत की खूबसूरती का जिक्र होता है, तो उसमें दक्षिण भारत का नाम जरूर लिया जाता है। दक्षिण भारत देश का एक ऐसा हिस्सा है, जिसकी खूबसूरती को निहारने के लिए हर रोज हजारों की संख्या में लोग यहां पहुंचते हैं। जिस तरह से दक्षिण भारत पूरी दुनिया में फेमस है, ठीक उसी तरह यहां पर स्थित में मंदिर भी काफी ज्यादा फेमस है। दक्षिण भारत में मौजूद शिव मंदिर, राम मंदिर और लक्ष्मी मंदिर के दर्शन के लिए हर रोज भारी संख्या में भक्त पहुंचते हैं। दक्षिण भारत में अन्य मंदिरों के अलावा पवित्र और विश्व प्रसिद्ध विष्णु मंदिर भी मौजूद हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, भगवान विष्णु को समर्पित इन मंदिरों में दर्शन मात्र से भक्तों की सभी मुरादें पूरी होती हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको दक्षिण भारत में स्थित 5 फेमस भगवान विष्णु के मंदिरों के बारे में बताने जा रहे हैं। ऐसे में आप भी इन मंदिरों में दर्शन के लिए जा सकते हैं।

श्री रंगनाथ स्वामी मंदिर

जब भी दक्षिण भारत में स्थित फेमस और पवित्र मंदिर की बात होती है, तो बहुत सारे लोग सबसे पहले श्री रंगनाथस्वामी मंदिर का नाम लेते हैं। भगवान श्रीहरि विष्णु को समर्पित यह मंदिर तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में स्थित है। श्री रंगनाथस्वामी मंदिर भारत का सबसे बड़ा मंदिर परिसर और दुनिया के सबसे महान मंदिरों में शामिल है। यह मंदिर वैष्णव संप्रदाय को समर्पित है। श्री रंगनाथ स्वामी मंदिर यूनेस्को विश्व विरासत केंद्र में भी शामिल है। बताया जाता है कि जो भी भक्त सच्चे मन में दर्शन के लिए आता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर

दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश में देश का एक पवित्र और चर्चित मंदिर श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर स्थित है। भगवान श्रीहरि को समर्पित यह मंदिर लाखों-करोड़ों भक्तों के आस्था का केंद्र है। आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के तिरुपति में तिरुमाला की पहाड़ियों में स्थित भगवान विष्णु का एक रूप श्री वेंकटेश्वर स्वामी को समर्पित है। इस मंदिर के बारे में बताया जाता है कि मानव जाति को कलियुग के परीक्षणों और परेशानियों से खत्म करने के लिए श्री वेंकटेश्वर ने पृथ्वी पर जन्म लिया था।

पद्मनाथ स्वामी मंदिर

जिस तरह से केरल राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। ठीक वैसे ही केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के पूर्वी किले के भीतर स्थित पद्मनाथ स्वामी मंदिर भी काफी फेमस है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। बता दें कि पद्मनाभ मंदिर के बारे में बताया जाता है कि यह दुनिया के सबसे अमीर मंदिरों की लिस्ट में शामिल है। पद्मनाभ मंदिर में भगवान विष्णु की शयनमुद्रा, खड़ी और बैठी हुई मूर्तियां स्थापित हैं। पद्मनाभ मंदिर की द्रविड़ वास्तुशिल्प लोगों को खूब आकर्षित करती है।

आंध्र विष्णु मंदिर

आंध्र प्रदेश की हसीन वादियों में राज्य का सबसे पवित्र और चर्चित मंदिर आंध्र विष्णु मंदिर मौजूद है। इस मंदिर को आंध्र महा विष्णु या श्रीकाकुलांध्र महा विष्णु के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर को चमत्कारी मंदिर माना जाता है। बताया जाता है कि जो भी व्यक्ति य़हां पर सच्चे मन से दर्शन करने के लिए जाता है, वह कभी खाली हाथ नहीं लौटता है। इसलिए यहां हर रोज भक्तों की भारी भीड़ लगी रहती है।

कल्ललगर मंदिर

इस मंदिर को बहुत सारे लोग कल्लझगर मंदिर के नाम से भी जानते हैं। यह तमिलनाडु के मदुरै में स्थित भगवान श्रीहरि विष्णु को समर्पित मंदिर है। इस पवित्र मंदिर को श्रीहरि का घर भी बताया जाता है। यह विष्णु को समर्पित 108 दिव्य देशमों में से एक है। कल्ललगर मंदिर के बारे में बताया जाता है कि यहां पर श्रीहरि के कल्ललगर के रूप में पूजा होती है। वहीं माता लक्ष्मी को थिरुमगल के रूप में पूजा जाता है। इस मंदिर की कहानी और वास्तुकला दोनों ही श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है।

आप भी नहीं लेते 8 घंटे की नींद, तो बढ़ सकता है गंभीर बीमारियों का खतरा...

जो लोग कम नींद लेते हैं, उनमें अधिक बीमारियों का खतरा होता है। खासतौर पर ऐसे लोगों को हाई बीपी और मानसिक बीमारियों का अधिक खतरा रहता है। जिसका असर शरीर के अन्य अंगों पर देखने को मिलता है।

हमारे शरीर और दिमाग के स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त नींद लेना बहुत जरूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि कम से कम 7-8 घंटे की नींद जरूर लेनी चाहिए। क्योंकि खराब नींद कई बड़ी बीमारियों का कारण होती है। वहीं नींद की कमी से शरीर पर कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। जो लोग कम नींद लेते हैं, उनमें अधिक बीमारियों का खतरा होता है। खासतौर पर ऐसे लोगों को हाई बीपी और मानसिक बीमारियों का अधिक खतरा रहता है। जिसका असर शरीर के अन्य अंगों पर देखने को मिलता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि 8 घंटे की पर्याप्त नींद न लेने पर व्यक्ति को क्या-क्या दिक्कतें हो सकती हैं।

थकान और ऊर्जा में कमी : पर्याप्त नींद न लेने पर शरीर में एनर्जी की कमी रहती है। जिसके कारण आप पूरा दिन थका हुआ महसूस करते हैं। इससे आपका काम भी प्रभावित होता है। शरीर में एनर्जी की कमी अंगों के कार्यक्षमता पर असर डालती है। जिसकी वजह से हमारा किसी काम में मन नहीं लगता है।

ब्रेन फंक्शन में समस्या : बता दें कि नींद की कमी आपके ब्रेन फंक्शन पर भी बुरा असर डालती है। इससे आपको ध्यान केंद्रित करने में समस्या होती है। नींद की कमी की वजह से आपके सोचने व समझने की क्षमता कम हो सकती है।

मूड स्विंग : नींद की कमी से चिड़चिड़ापन, मूड स्विंग, तनाव और डिप्रेशन जैसी समस्या हो सकती है। वहीं स्ट्रेस हमारी सेहत के लिए अच्छा नहीं होता है, इससे कई अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। वहीं जब आप पर्याप्त नींद नहीं लेते हैं, तो इसका असर आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली पर पड़ता है।

हार्ट के लिए नुकसानदेह : नींद की कमी आपके दिल की सेहत को भी नुकसान पहुंचा सकता है। जिससे दिल का दौरा, उच्च रक्तचाप और स्ट्रोक जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है।

हींग के कई फायदे सिर दर्द एवं पाचन क्रिया के लिए बेहद कारगर...

ज्यादातर घरों में हींग का प्रयोग खाना में किया जाता है। हींग खाने का स्वाद तो बढाता है और स्वास्थ्य भी अच्छा करती है। हींग का सेवन पेट संबंधित समस्याओं से लेकर कई चीजों में फायदेमंद होता है। आइए जानते हैं हींग खाने के जबरदस्त फायदे। हर भारतीय के किचन में हींग जरुर मौजूद होती है। खाने के स्वाद बढ़ाने के लिए हींग का प्रयोग जरुर किया जाता है। आमतौर पर ज्यादातर भारतीय खानों में हींग का प्रयोग किया जाता है। हींग खाने का स्वाद बढ़ा देता है और इसकी खुशबू काफी बढ़िया होती है। यह सेहत के लिए काफी बढ़िया होती है। वैसे तो हींग में कई औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-बैक्टिरियल जैसे गुण होते हैं, यह कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए फायदेमंद होते हैं।

पाचन के लिए फायदेमंद

हींग में औषधीय गुण होते हैं, जो पाचन के लिए काफी फायदेमंद होता है। अगर आप पेट चुटकी भर हींग का सेवन करते हैं तो आपको अपच, पेट दर्द, गैस और ब्लोटिंग जैसी समस्याओं से राहत मिलती है।

ब्लड प्रेशर में फायदा होता

हींग में कई औषधीय गुण होते हैं, जो शरीर में ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर करने और ब्लड क्लॉट को रोकने में मदद करता है। हींग को आप खाली पेट सेवन करने से ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

सांस की समस्याओं में फायदेमंद

हींग कई तरह से बेहद फायदेमंद है। इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-वायरल गुण पाए जाते हैं। ऐसे में इसका सेवन करने से ब्रोंकाइटिस और अस्थमा जैसे सांस से जुड़ी परेशानियों में हींग फायदेमंद होता है।

मेटाबॉलिज्म बूस्ट होता है

हींग में कई गुण पाए जाते है, जो मेटाबॉलिज्म के लिए फायदेमंद होते हैं। ऐसे में इसका खाली पेट सेवन करने से मेटाबॉलिज्म बूस्ट होगा।

सिरदर्द से राहत मिलती

हींग में अच्छी मात्रा में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं, जिससे सिर दर्द और सूजन को कम करने में मदद मिलती है। हींग के सेवन करने से सिर दर्द ठीक हो जाता है।

पीआर श्रीजेश की जगह ये खिलाड़ी निभाएगा गोलकीपर की भूमिका

एशियन चैंपियन बनने को तैयार भारतीय हॉकी टीम

भारतीय हॉकी टीम बिना दिग्गज गोलकीपर पीआर श्रीजेश के बिना उतरेगी। पीआर श्रीजेश के संन्यास के बाद आगामी एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए कृषन बहादुर पाठक को हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली 18 सदस्यीय भारतीय हॉकी टीम का मुख्य गोलकीपर बनाया गया है।

भारतीय हॉकी टीम ने पेरिस ओलंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। लगातार दो ओलंपिक मेडल जीतने के बाद देश में इस खेल के प्रति लोगों का प्यार और लोकप्रियता बढ़ी है। टीम के खिलाड़ियों ने पेरिस के बाद अपने अगले मिशन की तैयारी शुरू कर दी है। भारतीय हॉकी का अगला मिशन एशियन चैंपियंस ट्रॉफी, पेरिस ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता टीम के दस सदस्य इस टीम में हैं।

एक लंबे अरसे बाद ऐसा मौका होगा जब टीम बिना दिग्गज गोलकीपर पीआर श्रीजेश के बिना उतरेगी। पीआर श्रीजेश के संन्यास के बाद आगामी एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए कृषन बहादुर पाठक को हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली 18 सदस्यीय भारतीय हॉकी टीम का मुख्य गोलकीपर बनाया गया है। बता दें कि, श्रीजेश ने पेरिस ओलंपिक में लगातार दूसरा कांस्य पदक जीतने के बाद हॉकी को अलविदा कह दिया था। उनकी जगह पाठक ने ले ली है। जबकि सूरज करकेरा रिजर्व गोलकीपर रहेंगे। 2021 में भी टोक्यो ओलंपिक के बाद एशियन चैंपियंस ट्रॉफी के लिए उन्हें आराम दिया गया था।

भारत के अलावा टूर्नामेंट में कोरिया, मलेशिया, पाकिस्तान, जापान और मेजबान चीन भाग लेंगे। ये टूर्नामेंट आठ से 17 सितंबर तक खेला जाएगा। अनुभवी मिडफील्डर विवेक सागर प्रसाद को उपकप्तान बनाया गया है। नियमित उपकप्तान हार्दिक सिंह, मनदीप सिंह, ललित उपाध्याय, शमशेर सिंह और गुरजंत सिंह को आराम दिया गया है।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय हॉकी टीम इस प्रकार है

गोलकीपर- कृशन बहादुर पाठक, सूरज करकेरा
डिफेंडर- जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, हरमनप्रीत सिंह, जुगराद सिंह, संजय और सुमित।
मिडफील्डर- राजकुमार पाल, नीलाकांता शर्मा, विवेक सागर प्रसाद, मनप्रीत सिंह और महोम्मद राहील।

भारतीय महिला एथलीट हरमिलन बैंस ने किया बड़ा खुलासा...

आत्महत्या करने के बारे में सोचने लगी थी...

हरमिलन पिछले साल चीन में हुए एशियाई खेलों में भारतीय एथलेटिक्स टीम की स्टार खिलाड़ियों में से एक थीं जब उन्होंने 800 मीटर और 1500 मीटर में दो पदक जीते थे। हालांकि इस पूरे सत्र में वह चोटों से परेशान रहीं जिससे पेरिस ओलंपिक में जगह बनाने की उनकी उम्मीदें धराशायी हो गईं।

भारतीय महिला एथलीट हरमिलन बैंस ने बड़ा खुलासा करते हुए कहा कि वह आत्महत्या करने के बारे में सोचने लगी थीं। मध्यम दूरी की धाविका हरमिलन हाल ही में संपन्न हुए पेरिस ओलंपिक में भाग नहीं ले सकी थी जिसका उन्हें काफी अफसोस था। एशियाई खेलों में दो बार पदक जीत चुकीं हरमिलन अब मॉडलिंग जैसे दूसरे करियर विकल्प की तलाश कर रही हैं।

हरमिलन पिछले साल चीन में हुए एशियाई खेलों में भारतीय एथलेटिक्स टीम की स्टार खिलाड़ियों में से एक थीं जब उन्होंने 800 मीटर और 1500 मीटर में दो पदक जीते थे। हालांकि इस पूरे सत्र में वह चोटों से परेशान रहीं जिससे पेरिस ओलंपिक में जगह बनाने की उनकी उम्मीदें धराशायी हो गईं। इस समय उन्हें हैमस्ट्रिंग टियर है और उन्होंने स्वीकार किया कि उनका एथलेटिक्स करियर अनिश्चित है। वह सर्जरी करवा सकती हैं और इस पर जल्द ही निर्णय लिया जाएगा। इस साल की शुरुआत में उन्हें टखने की चोट लगी थी जिसे ठीक होने में पांच हफ्ते लगे थे।

जून में उन्हें हैमस्ट्रिंग में खिंचाव हुआ जो बाद में एक टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के बाद बढ़ गया। हरमिलन ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से कहा, मैं पेरिस ओलंपिक में भाग लेना चाहती थी और मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। लेकिन लगातार चोटें लगीं और इससे मेरा प्रदर्शन प्रभावित हुआ। पेरिस ओलंपिक में भाग नहीं ले पाने के बाद मैं अवसाद में थी, मैं कुछ भी नहीं सोच पा रही थी। यहां तक कि आत्महत्या करने का विचार भी मेरे दिमाग में आया और मैं खेल छोड़ना चाहती थी।

जब प्रियंका ने दीपिका की निजी जिंदगी पर टिप्पणी करने के लिए करण को लगाई फटकार

दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह जल्द ही अपने पहले बच्चे का स्वागत करने जा रहे हैं। दोनों ने छह साल तक एक-दूसरे को डेट करने के बाद 2018 में शादी की थी। रणवीर और दीपिका ने अपनी डेटिंग के शुरुआती दिनों में एक-दूसरे के लिए अपनी भावनाओं को सभी से छिपाकर रखा था।

दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह जल्द ही अपने पहले बच्चे का स्वागत करने जा रहे हैं। दोनों ने छह साल तक एक-दूसरे को डेट करने के बाद 2018 में शादी की थी। रणवीर और दीपिका ने अपनी डेटिंग के शुरुआती दिनों में एक-दूसरे के लिए अपनी भावनाओं को सभी से छिपाकर रखा था। जब एक फिल्म निर्माता ने दीपिका से एक शो के दौरान सार्वजनिक रूप से यह बताने के लिए कहा कि क्या वह रणवीर को डेट कर रही हैं, तो प्रियंका चोपड़ा उनका बचाव करने के लिए आगे आईं।

मशहूर टॉक शो 'कॉफी विद करण' में करण जौहर ने खुलासा किया कि दीपिका ने रणवीर सिंह के साथ अपने रिश्ते के बारे में कभी खुलकर बात क्यों नहीं की। उन्होंने कहा कि आजकल लोग अपने रिश्तों को छिपाकर रखना पसंद करते हैं। दीपिका ने इस पर करण को कोई जवाब नहीं दिया, वह बस मुस्कुराईं और इस विषय को टाल गईं, लेकिन शो में मौजूद प्रियंका ने तुरंत करण को करारा जवाब दिया और उन्हें फटकार लगाई। पीसी ने कहा, 'कुछ लोग अपने रिश्ते को निजी रखना पसंद करते हैं। क्योंकि कुछ लोग डिनर टेबल पर बातचीत का विषय नहीं बनना चाहते।' इसके अलावा प्रियंका ने कहा था, 'अगर सेलेब्स की 90 फीसदी जिंदगी जनता के लिए है, तो 10 फीसदी उनकी अपनी होनी चाहिए।'

ये तीनों सेलेब जोड़ियाँ कई फिल्मों में साथ काम कर चुकी हैं। प्रियंका चोपड़ा ने 2013 में रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण की फिल्म ' गोलियों की रासलीला राम-लीला' के एक गाने में कैमियो किया था। इसके बाद उन्होंने 2015 में ' बाजीराव मस्तानी' में भी दीपिका और रणवीर के साथ काम किया। 2015 में प्रियंका और रणवीर ने 'दिल धड़कने दो' में फिर से स्क्रीन शेयर की। दूसरी तरफ दीपिका अपनी प्रेग्नेंसी की आखिरी तिमाही में हैं। दीपिका ने इसी साल फरवरी में इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए अपनी प्रेग्नेंसी की घोषणा की थी, जिसके बाद से वे लगातार चर्चा में हैं। उनके इस ऐलान पर फैन्स ने भी प्यार और शुभकामनाएं बरसाईं। इसके अलावा दीपिका और रणवीर जल्द ही अपना घर बदलने वाले हैं। उनके नए घर की कीमत कथित तौर पर 100 करोड़ रुपये है और यह शाहरुख खान के निवास मन्नत के पास स्थित है।

साउथ की नामी अभिनेत्री

नमिता को मंदिर में जाने से रोका, मांगा हिंदू होने का सबूत

नमिता ने कहा कि यह सर्वविदित तथ्य है कि वह हिंदू परिवार में जन्मी हैं और उनकी शादी तिरुपति में हुई थी तथा उनके बेटे का नाम भगवान कृष्ण के नाम पर रखा गया था। उन्होंने कहा, 'ऐसा होने पर उन्होंने अशिष्टता और अहंकार से बात की तथा मेरी जाति व मेरे धर्म को साबित करने के लिए प्रमाण पत्र मांगा।

अभिनेत्री नमिता ने सोमवार को शिकायत की कि यहां प्रख्यात मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर में दर्शन के दौरान उन्हें हिंदू होने का सबूत पेश करने के लिए कहा गया। नमिता ने मंदिर के अधिकारियों के कथित अशिष्ट व्यवहार को लेकर नाराजगी प्रकट की। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राज्य कार्यकारिणी की सदस्य नमिता ने आरोप लगाया कि मंदिर के एक अधिकारी ने उन्हें दर्शन करने से रोका और हिंदू होने का सबूत पेश करने के लिए कहा। उन्होंने पत्रकारों से कहा, ''उन्होंने मुझसे यह साबित करने के लिए प्रमाण पत्र मांगा कि मैं हिंदू हूं और साथ ही मेरा जाति प्रमाण पत्र भी मांगा। मैंने देश में जितने भी मंदिरों के दर्शन किए, उनमें मुझे ऐसी पीड़ा नहीं झेलनी पड़ी।

नमिता ने कहा कि यह सर्वविदित तथ्य है कि वह हिंदू परिवार में जन्मी हैं और उनकी शादी तिरुपति में हुई थी तथा उनके बेटे का नाम भगवान कृष्ण के नाम पर रखा गया था। उन्होंने कहा, ''ऐसा होने पर उन्होंने अशिष्टता और अहंकार से बात की तथा मेरी जाति व मेरे धर्म को साबित करने के लिए प्रमाण पत्र मांगा। मंदिर के एक वरिष्ठ अधिकारी ने आरोपों से इनकार किया और कहा कि उन्होंने मास्क पहनी हुईं नमिता और उनके पति को रोककर पूछा कि क्या वे हिंदू हैं।

हमारा देश हमारा अभिमान

हर-हर महादेव

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका की प्रति बुक करने के लिए सम्पर्क करें..

मनोज चतुर्वेदी : 98266 36922, 88392 59136

Award received from the CDO Mr Amit Dave & CAO Mr Rakesh Sharma sir for CDO Head to head challenge & Pan India Rank no 4 in ADOA category.

Rajesh Verma

Rewa cluster head TATA AIA Life Insurance